



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 309]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, सितम्बर 13, 2018/भाद्र 22, 1940

No. 309]

NEW DELHI, THURSDAY, SEPTEMBER 13, 2018/BHADRA 22, 1940

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

वाणिज्य विभाग

(व्यापार उपचार महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 13 सितम्बर, 2018

मामला सं. एसएसआर18/2017

**विषय:** कोरिया गणराज्य, ताइवान और इजराइल से के मूल के अथवा वहां निर्यातित "फिथेलिक एनहाइड्राइड" से संबंधित पाटनरोधी निर्णायक समीक्षा जांच।

1. **फा. सं. 7/19/2017-डीजीएडी:** 1995 के यथासंशोधित सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और उसकी समय-समय पर यथासंशोधित सीमा प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं की पहचान, आकलन और पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क का संग्रहण तथा क्षति के निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए, निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे यहां आगे प्राधिकारी कहा गया है) ने कोरिया गणराज्य, ताइवान और इजराइल (जिन्हें यहां आगे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "फिथेलिक एनहाइड्राइड" (जिसे यहां आगे संबद्ध सामान कहा गया है) के पाटित आयातों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की।
2. परिणामस्वरूप, केंद्र सरकार द्वारा 24 दिसंबर, 2012 की सीमा शुल्क अधिसूचना 58/2012-सीमा शुल्क द्वारा पाटनरोधी शुल्क लगाये गये थे।
3. नियमावली के नियम 23 के साथ सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1995 की धारा 9क(5) के अनुसार, उपर्युक्त अधिनियम के तहत लगाया गया पाटनरोधी शुल्क, जब तक पूर्व में हटाया न गया हो, शुल्क की समाप्ति से जब तक समीक्षा शुरू न की गई हो, इस पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की तारीख से 5 वर्षों की समाप्ति पर बंद हो जाएगा, निर्दिष्ट प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि शुल्कों को बंद करने से पाटन और क्षति जारी रहने अथवा बार-बार होने की संभावना है। उपर्युक्त के अनुसार, प्राधिकारी को उपायों की समाप्ति से पूर्व उपयुक्त समयावधि के भीतर घरेलू उद्योग द्वारा और उसकी ओर से किए गए विधिवत सिद्ध अनुरोध के आधार पर समीक्षा करने की आवश्यकता है कि क्या शुल्क समाप्त करने से पाटन और क्षति जारी रहने अथवा बार-बार होने की संभावना है।

4. और फिथेलिक एनहाइड्राइड के घरेलू उत्पादकों अर्थात् मैसर्स आईजी पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड और मैसर्स तिरूमलाई केमिकल्स लिमिटेड द्वारा संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों के पाटन के जारी रहने अथवा बार-बार होने की संभावना का आरोप लगाते हुए और परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति होने तथा कोरिया गणराज्य, चीनी तैपई और इजराइल के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फिथेलिक एनहाइड्राइड के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क जारी रखने के लिए निर्णायक समीक्षा जांच शुरू करने हेतु अनुरोध करते हुए याचिका दायर की गई है।
5. घरेलू उद्योग की ओर से दायर पाटन एवं क्षति की संभावना के प्रथम दृष्टया साक्ष्य से युक्त विधिवत सिद्ध आवेदन पत्र के मद्देनजर और पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9क(5) के अनुसार, प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों के संबंध में शुल्क जारी रखने की आवश्यकता की समीक्षा करने के लिए और यह जांच करने के लिए कि क्या इन शुल्कों की समाप्ति से घरेलू उद्योग को पाटन और क्षति जारी रहने अथवा बार-बार होने की संभावना है, पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9क(5) के अनुसार, निर्णायक समीक्षा जांच शुरू करते हुए भारत के राजपत्र में प्रकाशित 11 दिसंबर, 2017 की अधिसूचना संख्या 7/19/2017-डीजीएडी जारी की। संबद्ध देशों से संबद्ध सामानों के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क की वैधता केंद्र सरकार द्वारा 21 दिसंबर, 2017 की अधिसूचना संख्या 56/2017-सीमा शुल्क (एडीडी) द्वारा 23 दिसंबर, 2018 तक बढ़ाई गई थी।
6. वर्तमान समीक्षा में कोरिया गणराज्य, चीनी तैपई और इजराइल के मूल के अथवा वहां से निर्यातित उपर्युक्त संबद्ध सामानों के आयातों के संबंध में मूल जांच के सभी पहलू शामिल हैं।

**क. सामान्य प्रक्रिया**

7. प्राधिकारी द्वारा उपर्युक्त जांच की शुरुआत अधिसूचित करते हुए सार्वजनिक सूचना जारी करने के बाद इस जांच के संबंध में निम्नलिखित निर्धारित प्रक्रिया अपनाई गई है:
  - i. प्राधिकारी ने जांच की शुरुआत की एक प्रति भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों, संबद्ध देशों के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों, भारत में ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं और आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार, घरेलू उद्योग को भेजी तथा उनसे अनुरोध किया कि वे जांच की शुरुआत के 40 दिन के भीतर लिखित में अपने ज्ञात विचार दें।
  - ii. प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार, ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों को आवेदन पत्र के अगोपनीय रूपांतर की एक प्रति उपलब्ध कराई।
  - iii. भारत में स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों से भी यह अनुरोध किया गया था कि वे कोरिया गणराज्य, चीनी तैपई और इजराइल के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें कि वे निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रश्नावली के उत्तर दें। उत्पादकों/निर्यातकों को भेजे गए पत्र एवं प्रश्नावली की प्रति कोरिया गणराज्य, चीनी तैपई और इजराइल के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों के नामों एवं पतों सहित उन्हें भी भेजी गई।
  - iv. प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार, संगत सूचना मंगाने के लिए निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को निर्यातक प्रश्नावली भेजी:
    - क. एकयुंग पेट्रोकेमिकल कं. लि., कोरिया
    - ख. एल. जी. पेट्रोकेमिकल, कोरिया
    - ग. हुमाडे कारपोरेशन, कोरिया
    - घ. हनवा केमिकल कारपोरेशन, कोरिया
    - ङ. हुंडई कारपोरेशन, कोरिया
    - च. रेस्टार कारपोरेशन, कोरिया
    - छ. एवरलाइट कोरिया कं. लि., कोरिया
    - ज. देवू इंटरनेशनल कारपोरेशन, कोरिया
    - झ. कैको मार्केटिंग इंक., कोरिया
    - ञ. पोलमेक कं. लि., कोरिया

- ट. नन या प्लास्टिक्स कारपोरेशन, ताइवान  
 ठ. यूपीसी टैक्रोलॉजी कारपोरेशन, ताइवान  
 ड. मेथॉल कं. लि., ताइवान  
 ढ. गदिव पेट्रोकेमिकल्स इंडस्ट्रीज लि., इजराइल
- v. उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों का निर्यात करने वाले निम्नलिखित उत्पादकों/ निर्यातकों ने निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर दायर किए हैं:
- क. एल. जी. पेट्रोकेमिकल, कोरिया  
 ख. एकयुंग पेट्रोकेमिकल कं. लि., कोरिया  
 ग. हुमाडे कारपोरेशन, कोरिया  
 घ. हुंडई कारपोरेशन, कोरिया  
 ड. वूरी पीएंडसी कारपोरेशन  
 च. कंको मार्केटिंग इंक., कोरिया  
 छ. उबेसको कारपोरेशन (यूबीईएससीओ), कोरिया  
 ज. गदिव पेट्रोकेमिकल्स इंडस्ट्रीज लि., इजराइल
- vi. प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार, आवश्यक सूचना मंगाने के लिए भारत में संबद्ध सामानों के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को आयातक प्रश्नावली भेजी:
- क. क्रे वैली रेसिन्स इंडिया लि.  
 ख. गुडलेस नेरोलेक पेंट्स लि.  
 ग. गार्गी इंडस्ट्रीज  
 घ. हिंदुस्तान इंसेक्टिसाइड्स लिमिटेड  
 ड. केमरोक इंडस्ट्रीज एंड एक्सपोर्ट्स लि.  
 च. शालीमार पेंट्स लिमिटेड  
 छ. यू. के. पेंट्स इंडिया प्रा. लि.  
 ज. केएलजे प्लास्टिसाइजर्स लि.  
 झ. माजदा कलर्स लिमिटेड  
 ज. पीसीएल ऑयल एंड सोल्वेंट्स लि.  
 ट. लोना इंडस्ट्रीज लिमिटेड  
 ठ. सिलवासा प्लास्ट  
 ड. आरती इंडस्ट्रीज लिमिटेड  
 ढ. मेकेमको इंडस्ट्रीज  
 ण. रचना प्लास्टिसाइजर्स  
 त. माइक्रो इंकस लि.  
 थ. फथेलो कलर्स एंड केमिकल्स (आई) लि.  
 द. ह्यूबेच कलर प्रा. लि.  
 ध. रमनीकलाल एस. गोसाला एंड कं.

- न. सनमान ट्रेड इम्पैक्स प्रा. लि.  
 प. पेट्रोकेम मिडिल ईस्ट (इंडिया) प्रा.  
 फ. ए-वन केम ट्रेड प्रा. लि.  
 ब. अमजे केमिकल्स  
 भ. संजय केमिकल्स (इंडिया) प्रा. लि.  
 म. हजेल मरकेटिल लिमिटेड  
 य. इंडियन प्लास्टिसाइजर्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन  
 कक. इंडियन प्लास्टिक्स फेडरेशन  
 खख. इंडियन पेंट एसोसिएशन  
 गग. केमिकल इंडस्ट्रीज एसोसिएशन  
 घघ. इंडियन केमिकल काउंसिल  
 डड. एलकेमी लेबोरेट्रीज  
 चच. अरकेमा केमिकल्स इंडिया प्रा. लि.  
 छछ. असाही सोंगवोन कलर्स लिमिटेड  
 जज. बी. एम. जैन एंड सन्स प्रा. लि.  
 झझ. भवानी पिगमेंट्स प्रा. लि.  
 ञञ. केमिकल कारपो. प्रा. लि.  
 टट. ईशान डाइज एंड केमिकल्स लिमिटेड  
 ठठ. लिबर्टी केम ट्रेड प्राइवेट लिमिटेड  
 डड. मैक्रो पॉलीमर्स प्रा. लि.  
 ढढ. महाराष्ट्र एल्डहाइड्स एंड केमिकल्स लि.  
 णण. मेघमणि ऑर्गेनिक्स लि.  
 तत. नाराणय ऑर्गेनिक्स प्रा. लि.  
 थथ. निशांत ऑर्गेनिक्स प्रा. लि.  
 दद. श्रेय ओवरसीज  
 धध. पायल पेट्रोकेम प्रा. लि./पायल पॉलीप्लास्ट प्रा. लि.  
 नन. रिट्जी केमिकल्स प्रा. लि.  
 पप. शक्ति केमिकल्स  
 फफ. परीकिम रिसोर्सेस एलएलपी  
 बब. विकास ऑर्गेनिक्स प्रा. लि.
- vii. प्राधिकारी द्वारा जारी प्रश्नावली के उत्तर में संबद्ध सामानों के निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं ने आयातक प्रश्नावली के उत्तर दायर किए हैं:
- क. बर्गर पेंट्स  
 ख. एशियन पेंट्स  
 ग. कनसई नेरोलेक पेंट्स  
 घ. शालीमार पेंट्स
- viii. इसके अतिरिक्त, निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने भी जांच की शुरुआत के संबंध में उत्तर दायर किए हैं:
- क. इंडियन पेंट एसोसिएशन

- ख. इंडियन पैट एंड कोटिंग एसोसिएशन
  - ग. इंडियन स्मॉल-स्केल पैट एसोसिएशन
  - घ. इंडियन प्लास्टिसाइजर्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन (आईपीएमए)
  - ङ. केएलजे प्लास्टिसाइजर्स
  - च. पायल पॉलीप्लास्ट प्रा. लि.
  - छ. पीसीएल ऑयल एंड सोल्वेंट्स पी. लि.
- ix. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुले में रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों का अगोपनीय रूपांतर उपलब्ध कराया।
- x. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से लेन-देन वार आंकड़े मांगे गए थे। प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध सामानों की मात्रा और आयात का मूल्य परिकलित करने के लिए डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों और सहयोगी निर्यातकों के आंकड़ों पर विश्वास किया है।
- xi. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार, सभी हितबद्ध पक्षकारों को संगत सूचना मौखिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए अवसर प्रदान करने हेतु 17 मई, 2018 को एक मौखिक सुनवाई आयोजित की जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों, उत्तरदाता आयातकों, आयातक एसोसिएशन ने भाग लिया। जिन प्रतिनिधियों ने मौखिक सुनवाई में मौखिक रूप से अपने विचार प्रकट किए, उन्हें सलाह दी गई कि वे मौखिक रूप से व्यक्त अपने विचारों को लिखित रूप में दायर करें। हितबद्ध पक्षकारों को विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्ति विचारों के संबंध में प्रत्युत्तर अनुरोध प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया गया था।
- xii. घरेलू उद्योग और निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर के आंकड़ों का सत्यापन आवश्यक समझी गई सीमा तक किया गया था। केवल आवश्यक संशोधन के साथ उस सत्यापित सूचना, जहां तक लागू है, पर इस जांच के प्रयोजन के लिए विश्वास किया गया है।
- xiii. वर्तमान समीक्षा के प्रयोजन के लिए जांच की अवधि अप्रैल, 2016 – सितंबर, 2017 (18 माह) है। क्षति जांच अवधि अप्रैल, 2013 – मार्च, 2014, अप्रैल, 2014 – मार्च, 2015, अप्रैल, 2015 – मार्च, 2016 और जांच की अवधि मानी गई है। इसके अतिरिक्त, चूंकि जांच की अवधि 18 माह की अवधि है, अतः जांच की अवधि के लिए सभी आंकड़े पूर्व वर्षों के उन आंकड़ों से तुलना करने के लिए वार्षिक आधार पर माने गए हैं।
- xiv. इस जांच के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध जहां भी संगत पाए गए हैं, प्राधिकारी द्वारा इस दस्तावेज में हल कर दिए गए हैं।
- xv. गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई है। संतुष्ट होने पर इस प्राधिकारी ने जहां भी आवश्यक हुआ गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और इस प्रकार की सूचना को गोपनीय माना गया है और उसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं बताया गया है। जहां भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकारों को निर्देश दिया गया है कि वे गोपनीय आधार पर दी गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतर उपलब्ध करावें।
- xvi. जहां कहीं भी किसी हितबद्ध पक्षकार ने न तो प्राधिकारी को उत्तर दिया है और न ही वर्तमान जांच की प्रक्रिया के दौरान आवश्यक सूचना प्रस्तुत की है या जांच में काफी बाधा डाली है, उन्हें प्राधिकारी द्वारा असहयोगी हितबद्ध पक्षकार माना गया है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर जांच परिणाम किए गए हैं।
- xvii. उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार, प्राधिकारी ने संबंधित हितबद्ध पक्षकारों को 24 अगस्त, 2018 को अपने प्रकटन विवरण द्वारा अनिवार्य तथ्य प्रकट किए। टिप्पणियां 04 सितंबर, 2018 तक देने का अनुरोध किया गया था। प्राधिकारी द्वारा संगत मानी गई सीमा तक प्रकटन विवरण पर प्राप्त टिप्पणियों पर इस अंतिम जांच परिणाम में विचार किया गया है।
- xviii. इस अंतिम जांच परिणाम में "\*\*\*\*" किसी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत तथा नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा इस प्रकार मानी गई सूचना का द्योतक है।
- xix. जांच की अवधि के लिए प्राधिकारी द्वारा अपनायी गई विनिमय दर 1 अमेरिकी डॉलर = 67.06 रुपये है।

## विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

8. वर्तमान जांच के उद्देश्य के लिए विचाराधीन उत्पाद "फिथेलिक एनहाइड्राइड" है।

### ख.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

9. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद मूल जांच में प्राधिकारी द्वारा निर्धारित " फिथेलिक एनहाइड्राइड" है। फिथेलिक एनहाइड्राइड सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 29 उप शीर्ष 29173500 के तहत वर्गीकृत ऑर्गेनिक रसायन है।
- फिथेलिक एनहाइड्राइड का प्रयोग फिथालेट ईस्टर का उत्पादन करने के लिए किया जाता है जो प्लास्टिसाइजर्स के रूप में कार्य करता है। यह प्लास्टिक उद्योग में महत्वपूर्ण रासायनिक मध्यवर्ती है।
- वर्तमान जांच एक समीक्षा जांच है। प्राधिकारी ने मूल जांच में विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के मुद्दे की जांच की है जिस पर विश्वास किया गया है।

### ख.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

10. इस संबंध में किसी भी उत्पादक/निर्यातक/आयातक/अन्य हितबद्ध पक्षकार ने विचाराधीन उत्पाद के संबंध में कोई मुद्दे नहीं उठाए हैं।

### ख.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

11. वर्तमान जांच के लिए विचाराधीन उत्पाद "फिथेलिक एनहाइड्राइड" है। वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है, अतः वर्तमान समीक्षा जांच में विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र वही रहता है जो मूल जांच में है। पूर्व जांचों में परिभाषित विचाराधीन उत्पाद निम्नलिखित है:

"वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद "फिथेलिक एनहाइड्राइड" है जिसमें मॉक्युलर फॉर्मूला  $C_8H_4O_3$  होता है। फिथेलिक एनहाइड्राइड, पीएएन अथवा पी.ए. के रूप में भी उल्लिखित, एक फिथेलिक एसिड का एनहाइड्राइड है और ऑर्थो-जिलीन अथवा नेफ्थालीन के उत्प्रेरक ऑक्सीकरण द्वारा वाणिज्यिक रूप से उत्पादित किया जाता है। यह रंगहीन ठोस है जिसे विविध रूप से फिथेलिक एनहाइड्राइड फ्लेक, फिथेलिक एनहाइड्राइड (98 प्रतिशत न्यूनतम), फिथेलिक एसिड एनहाइड्रस, फिथेलिक एनहाइड्राइड (99.8 प्रतिशत न्यूनतम) आदि उल्लिखित किया जाता है। यह उत्पाद केवल एक ग्रेड में उत्पादित किया जाता है। जहां तक विभिन्न अनुप्रयोगों का संबंध है, इसमें विभिन्न प्रकार के भेदकारक स्वरूप नहीं होते हैं। इसका प्रयोग मुख्य रूप से फिथालेट ईस्टर के उत्पादन में किया जाता है, जो प्लास्टिसाइजर्स के रूप में कार्य करता है। यह प्लास्टिक उद्योग में एक महत्वपूर्ण रासायनिक मध्यवर्ती है। इसका प्रयोग पॉलिस्टर रेसिन्स, पेंट तथा लेक्योर में प्रयुक्त अल्काइड एसिड, अलग न किए गए पॉलिस्टर रेसिन, पॉलिस्टर पोलियोन्स पॉलियोल, डाइज और पिगमेंट्स, हेलोजिनेटेड एनहाइड्राइड, पॉलीथेरेमाइड रेसिन्स, इसाटोनिक एनहाइड्राइड, इनसेक्ट रेपिलेंट्स आदि में भी किया जाता है।

फिथेलिक एनहाइड्राइड सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के तहत सीमा शुल्क उप शीर्ष संख्या 29173500 के तहत वर्गीकृत एक ऑर्गेनिक रसायन है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और वर्तमान जांच के क्षेत्र पर किसी तरह बाध्यकारी नहीं है।"

12. मूल जांच में प्राधिकारी ने माना है कि विचाराधीन उत्पाद "सभी रूपों में फिथेलिक एनहाइड्राइड" है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में कोई चिंता नहीं उठाई है।

13. रिकार्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद, प्राधिकारी मानते हैं कि संबद्ध देशों से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद और भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध उत्पाद भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, प्रकार्य एवं प्रयोग, उत्पाद विशिष्टियों, वितरण एवं विपणन तथा सामानों के प्रशुल्क वर्गीकरण की दृष्टि से विचाराधीन उत्पाद के तुलनीय है। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता दोनों का प्रयोग परस्पर परिवर्तनीय रूप से कर रहे हैं।

14. प्राधिकारी मानते हैं कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध उत्पाद पाटनरोधी नियमावली के अनुसार उपर्युक्त पैराओं में उल्लिखितानुसार विचाराधीन उत्पाद की समान वस्तु है।

**ग. घरेलू उद्योग का क्षेत्र और आधार**

15. संबद्ध सामानों के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा के लिए याचिका भारत में विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उत्पादकों के रूप में मैसर्स आईजी पेट्रोकेमिकल्स लि. और मैसर्स तिरुमलाई केमिकल्स लि. द्वारा दायर की गई थी।

**ग.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध**

16. घरेलू उद्योग के क्षेत्र और आधार के संबंध में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
- यह याचिका मैसर्स आईजी पेट्रोकेमिकल्स लि. और मैसर्स तिरुमलाई केमिकल्स लि. द्वारा कोरिया गणराज्य, चीनी तैपई और इजराइल से फिथेलिक एनहाइड्राइड के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा और उसे जारी रखने के लिए दायर की गई है।
  - एक याचिकाकर्ता मैसर्स आईजी पेट्रोकेमिकल्स लि. ने अपने एक ग्राहक के लिए जांच की अवधि में ताइवान से उत्पाद की थोड़ी-सी मात्रा का आयात सुकर बनाया है। घरेलू खपत के लिए प्रवेश का बिल ग्राहक द्वारा दायर किया गया है। अतः याचिकाकर्ता कंपनी को नियमावली के अभिप्राय से भारत में विचाराधीन उत्पाद के आयातों के रूप में पूरी तरह नहीं माना जाना चाहिए।
  - भारत में संबद्ध सामानों के दो और उत्पादक एसआई ग्रुप इंडिया लिमिटेड और एशियन पेंट्स इंडिया लिमिटेड हैं। एसआई ग्रुप ने याचिका का संवर्धन किया है और दूसरे उत्पादक एशियन पेंट्स ने जुलाई, 2017 में अपना संयंत्र बंद कर दिया है।
  - समर्थक सहित याचिकाकर्ता आधार की अपेक्षाओं को पूरा करते हैं और पाटनरोधी नियमावली के अभिप्राय से घरेलू उद्योग हैं।

**ग.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध**

17. घरेलू उद्योग के क्षेत्र और आधार के संबंध में विरोधी हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
- घरेलू उद्योग ने जांच की शुरुआत के समय अपने आयातों के संबंध में सूचना जान बूझकर रोकी है।
  - घरेलू उद्योग की परिभाषा में विचाराधीन उत्पाद के वे उत्पादक नहीं हैं जो आंध्र प्रदेश के माननीय उच्च न्यायालय के नियम द्वारा पुष्ट किए गए अनुसार विचाराधीन उत्पाद के आयातक हैं। इंडोनेशिया, मलेशिया, थाइलैंड और सऊदी अरब से "सेचुरेटिड फैट्री एल्कोहल" तथा चीन जन. गण., ईरान, इंडोनेशिया, मलेशिया और ताइवान से "प्यूरिफाइड टैरीफिथेलिक एसिड" (पीटीए) के आयातों से संबंधित मामलों में अंतिम जांच परिणाम का संदर्भ दिया गया है।
  - वर्तमान जांच में आवेदकों द्वारा विचाराधीन उत्पाद के आयातों की मात्रा के संबंध में किए गए प्रकटन में घरेलू उद्योग होने के लिए आवेदकों की पात्रता निर्धारित करने की अपेक्षा है। आयातों की मात्रा संबंधी आंकड़ों के प्रकटन को गोपनीय माने जाने की आवश्यकता नहीं है। प्लेन मीडियम डेनसिटी फाइबर बोर्ड और नायलॉन फिलामेंट यार्न के मामलों से संबंधित मामले में अंतिम जांच परिणाम का संदर्भ दिया गया है।

**ग.3 प्राधिकारी द्वारा जांच**

18. यह आवेदन पत्र संबद्ध देशों से फिथेलिक एनहाइड्राइड के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा किए जाने तथा जारी रखे जाने के लिए भारत में विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उत्पादकों के रूप में मैसर्स आईजी पेट्रोकेमिकल्स लि. और मैसर्स तिरुमलाई केमिकल्स लि. द्वारा दायर किया गया था।
19. रिकार्ड में उपलब्ध सूचना और की गई जांच के अनुसार, याचिकाकर्ताओं के अलावा, विचाराधीन उत्पाद के अन्य ज्ञात उत्पादक निम्नलिखित हैं:
- एसआई ग्रुप इंडिया लिमिटेड
  - एशियन पेंट्स लिमिटेड
20. एसआई ग्रुप इंडिया लिमिटेड ने जांच की अवधि के दौरान पाटनरोधी शुल्क बढ़ाए जाने के लिए अनुरोध का समर्थन किया। इसके अतिरिक्त, एशियन पेंट्स लिमिटेड ने विचाराधीन उत्पाद के आयातक के रूप में आयातक प्रभावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं।

21. विरोधी हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि आईजीपीएल ने संबद्ध सामानों का आयात किया है और इसीलिए घरेलू उद्योग माने जाने के लिए पात्र नहीं है। उन्होंने सेचुरेटिड फैट्री एल्कोहल और प्युरीफाइड टेरीफिथेलिक एसिड के अंतिम जांच परिणामों पर विश्वास किया है। सेचुरेटिड फैट्री एल्कोहल के मामले में प्राधिकारी ने नोट किया था कि मैसर्स वीवीएफ (इंडिया) लिमिटेड याचिकाकर्ता था और मैसर्स गोदरेज इंडस्ट्रीज लि. संबद्ध सामानों का एक उत्पादक तथा उत्पाद का नियमित आयातक भी था जिसमें मैसर्स गोदरेज इंडस्ट्रीज लि. ने स्वयं ही स्वीकार किया है कि वे इस उत्पाद के नियमित आयातक थे और जबकि याचिकाकर्ता मैसर्स वीवीएफ (इंडिया) लिमिटेड की कुल भारतीय उत्पादन में काफी मात्रा है, मैसर्स गोदरेज इंडस्ट्रीज को पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग के क्षेत्र से अलग कर दिया गया था। हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी तर्क दिया है कि प्युरीफाइड टेरीफिथेलिक एसिड (पीटीए) के मामले में प्राधिकारी ने रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. को एक पात्र घरेलू उद्योग के रूप में स्वीकार करना उपयुक्त नहीं माना क्योंकि मलेशिया में इसकी एक सहायक कंपनी (संबद्ध देशों में से एक) ने भारत को काफी मात्रा में निर्यात किया था।
22. आईजीपीएल द्वारा किए गए आयातों की विस्तारपूर्वक जांच की गई। आईजीपीएल द्वारा किए गए आयातों के ब्यौरे निम्नलिखित तालिका में दिए गए हैं:

क्रम सं.	मानदंड	जांच की अवधि
1	आयात की मात्रा – मी. टन	378
2	के संबंध में आयात	
क	भारत में कुल आयात	0.24%
ख	भारत में खपत	0.07%
ग	भारत में उत्पादन	0.08%
घ	कंपनी का उत्पादन	0.17%

23. आईजीपीएल ने तर्क दिया कि वह इन सामानों का आयातक नहीं है क्योंकि कंपनी ने विचाराधीन उत्पाद के आयातक होने के लिए अनिवार्य अपेक्षा के रूप में घरेलू खपत के लिए प्रवेश बिल दायर नहीं किया है। इसके अतिरिक्त, आईजीपीएल ने अनुरोध किया है कि कंपनी ने केवल इन आयातों की व्यवस्था की है।
24. जहां तक विगत निर्धारणों का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उल्लिखित जांचों के तथ्य वर्तमान जांच से पूर्णतः भिन्न हैं। पीटीए के मामले में रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. विचाराधीन उत्पाद के पूर्ण निर्यातक से संबंधित थी जिनका निर्यात नियमों की पहल न्यूनतम सीमाओं से अधिक और पाटित कीमतों पर था और इस प्रकार काफी था। सेचुरेटिड फैट्री एल्कोहल के मामले में मैसर्स गोदरेज इंडस्ट्रीज लि. विचाराधीन उत्पाद का एक नियमित आयातक था। वर्तमान मामले में आईजीपीएल द्वारा व्यवस्था किए गए आयात मात्रा में बहुत कम, स्वरूप में पूरी तरह से छिट-पुट थे और घरेलू खपत के लिए प्रवेश बिल आईजीपीएल द्वारा दायर नहीं किया गया था। वर्तमान जांच के तथ्यों में आईजीपीएल को अलग करने के संबंध में विरोधी पक्षकारों का दावा औचित्यपूर्ण नहीं है। संयोगवश यह भी नोट किया जाता है कि आईजीपीएल को हटाने से आईजीपीएल को लाभ (न कि हानि) मिलता है। यह भी नोट किया जाता है कि मैसर्स आईजी पैट्रोकेमिकल्स लि. न तो संबद्ध सामानों का नियमित आयातक है और न ही संबद्ध देशों में उसकी कोई संबद्ध कंपनी है जो भारत को काफी मात्रा में निर्यात कर रही है। आईजी पैट्रोकेमिकल्स लि. ने अपने एक उपभोक्ता के लिए जांच की अवधि में एक बार आयात को सुकर बनाया है। आईजीपीएल प्राथमिक रूप से संबद्ध सामानों का एक उत्पादक है और वह घरेलू उत्पादन तथा बिक्री पर ही ध्यान दे रहा है। आईजीपीएल द्वारा सुकर बनाया गया आयात कंपनी की एक सामान्य व्यापारिक परिपाटी नहीं है। आईजीपीएल प्राथमिक रूप से फिथेलिक एनहाइड्राइड का उत्पादक है और विचाराधीन उत्पाद का आयातक नहीं है। इस मामले के तथ्यों को और इसी प्रकार के रखे गए मामलों में अपनाई गई विगत परिपाटियों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी मानते हैं कि आईजीपीएल पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अभिप्राय से पात्र घरेलू उद्योग है और याचिकाकर्ता नियम 5(3) के अनुसार आधार के मानदंड को पूरा करते हैं।

#### घ. गोपनीयता

##### घ.1 घरेलू उद्योग द्वारा अनुरोध

25. घरेलू उद्योग द्वारा इस संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:



- क) उत्तरदाताओं ने अपनी प्रश्नावली के उत्तरों के सार्वजनिक रूपांतर में सूचना प्रदान न करके अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है।
- ख) बिक्री वितरण चैनल के संबंध में भी महत्वपूर्ण सूचना गोपनीय होने का दावा किया गया है।
- ग) विनिर्माण प्रक्रिया जो कि वैश्विक रूप से सुविदित है, को वर्णित करने में कोई गोपनीयता नहीं हो सकती।
- घ) शेयरधारकों के नाम गोपनीय होने का दावा करने में कोई तर्क नहीं है जबकि वह सूचना वेबसाइट पर तैयार रूप में उपलब्ध हो।
- ङ) निर्यातकों ने कच्ची सामग्री और यूटिलिटियों की खरीद के स्रोतों, कैपिटल इनपुट का प्रयोग तथा संबद्धीकरण के रूप में महत्वपूर्ण सूचना छिपाई है।

## घ.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध

26. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा इस संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- क) याचिकाकर्ताओं ने क्षमता, लाभ/हानि, नकद लाभ, पीबीआईटी, मांग आदि से संबंधित सूचना तथा याचिका में दी गई लागत संबंधी सूचना के संबंध में अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है।
- ख) याचिका में दिए गए आंकड़े अगोपनीय रूपांतर में समुचित रूप से सूचीबद्ध नहीं किए गए हैं।
- ग) याचिकाकर्ता सूचीबद्ध कंपनियां हैं और उनका प्रमुख व्यापार संबद्ध सामानों का उत्पादन और बिक्री है। चूंकि, बहुत सारी सूचना सार्वजनिक पटल पर उपलब्ध है, अतः याचिकाकर्ताओं द्वारा अत्यधिक गोपनीयता का दृष्टिकोण सही नहीं है।
- घ) विभिन्न जांचों में घरेलू उद्योग द्वारा अपनाई गई गोपनीयता के दृष्टिकोण में भिन्नता है।
- ङ) घरेलू उद्योग ने एक रिपोर्ट दस्तावेज दायर किया है जिसमें गोपनीयता के आधार पर पाटन एवं क्षति की संभावना का औचित्य बताया है। गोपनीयता का दावा करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा दिया गया तर्क ट्रेड नोटिस सं. 01/2003 में निहित प्रावधान के कारण विकृत हो जाता है जिसमें स्पष्ट रूप से यह उल्लिखित किया गया है कि उस सूचना की गोपनीयता के दावे का अनुरोध, जिसे शुल्क का भुगतान कर प्राप्त किया जा सकता है, प्राधिकारी द्वारा स्वीकृत नहीं किया जाएगा।
- च) घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी को रिपोर्ट प्रदान की है, यद्यपि घरेलू द्वारा उपलब्ध कराए गए अनुसार रिपोर्ट के निबंधनों और शर्तों में इस प्रकार की छूट का प्रावधान कोई नहीं है। यदि प्राधिकारी इस दस्तावेज को प्राप्त कर सकते हैं तो उसे प्राप्त करने से अन्य हितबद्ध पक्षकारों को अलग करने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता, विशेष रूप से जब उत्तरदाता यह वचनबद्धता देने के लिए तैयार हैं कि रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं की जाएगी।
- छ) अन्य हितबद्ध पक्षकारों को रिपोर्ट प्रकट न करना, जिस पर माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने विश्वास किया है और वर्तमान जांच में रिकार्ड में लिया है, भारतीय पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(7) का उल्लंघन है।

## घ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

27. सूचना की गोपनीयता के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 में निम्नलिखित प्रावधान है:

### 7. गोपनीय सूचना:

- (1) नियम 6 के उपनियमों (2), (3) और (7), नियम 12 के उपनियम (2), नियम 15 के उपनियम (4) और नियम 17 के उपनियम (4) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी जांच की प्रक्रिया में नियम 5 के उपनियम (1) के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों के प्रतियां या किसी पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत किसी अन्य सूचना के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी उसकी गोपनीयता से संतुष्ट होने पर उस सूचना को गोपनीय मानेंगे और ऐसी सूचना देने वाले पक्षकार से स्पष्ट प्राधिकार के बिना किसी अन्य पक्षकार को ऐसी किसी सूचना का प्रकटन नहीं करेंगे।
- (2) निर्दिष्ट प्राधिकारी गोपनीय अधिकारी पर सूचना प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों से उसका अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करने के लिए कह सकते हैं और यदि ऐसी सूचना प्रस्तुत करने वाले किसी पक्षकार की राय में उस सूचना का सारांश नहीं हो सकता है तो वह पक्षकार निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात के कारण संबंधी विवरण प्रस्तुत करेगा कि सारांश करना संभव क्यों नहीं है।

(3) उप नियम (2) में निहित किसी बात को होते हुए भी यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट हो कि गोपनीयता के लिए अनुरोध न्यायसंगत नहीं अथवा सूचना प्रदाता सूचना को सार्वजनिक करने अथवा इसको सामान्य तौर पर अथवा संक्षिप्त रूप में उसे प्रकट करने के लिए अनिच्छुक हो, तो ऐसी सूचना की उपेक्षा की जा सकती है।

28. गोपनीयता के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा संगत माने गए अनुरोधों की जांच की गई और तदनुसार उनका समाधान किया गया। गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना की जांच उन्हें गोपनीय माने जाने की आवश्यकता के संबंध में की गई। संतुष्ट होने पर इस प्राधिकारी ने सभी पक्षकारों गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और इस प्रकार वह सूचना अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं की है। जहां भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकारों को निर्देश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर दी गई सूचना का अगोपनीय रूपांतर का सार उपलब्ध करायें। प्राधिकारी ने सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों का अगोपनीय रूपांतर उपलब्ध कराया।

#### ड. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण

29. सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 9क(1)(ग) के अनुसार किसी वस्तु के संबंध में "सामान्य मूल्य" का तात्पर्य है :

व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा

जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की कोई बिक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा:-

(क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो; अथवा

उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उद्गम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत;

परंतु यदि उक्त वस्तु का आयात उदगम वाले देश से भिन्न किसी देश से किया गया है और जहां उक्त वस्तु को निर्यात के देश से होकर केवल यानांतरण किया गया है अथवा ऐसी वस्तु का उत्पादन निर्यात के देश में नहीं होता है, अथवा निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में उसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

#### ड.1 घरेलू उद्योग द्वारा अनुरोध

30. घरेलू उद्योग ने अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित अनुरोध किए:

- क) याचिकाकर्ताओं ने निर्मित लागत पद्धति के आधार पर संबद्ध देशों में सामान्य मूल्य का दावा किया है। सामान्य मूल्य का माह-वार आधार पर दावा किया गया है क्योंकि फिथेलिक एनहाइड्राइड और प्रमुख इनपुट अर्थात् ऑर्थोक्सिलीन (ओएक्स) की कीमतें अत्यधिक अस्थिर होती हैं। ओएक्स की कीमतों का दावा कोरिया के लिए कोरियाई सीमा शुल्क के अनुसार कोरिया में ओएक्स की औसत आयात कीमत, ताइवान के लिए ताइवान सीमा शुल्क के अनुसार ताइवान में ओएक्स की औसत आयात कीमत और इजराइल के लिए याचिकाकर्ता को ओएक्स की औसत आयात कीमत के आधार पर किया गया है। यह मानते हुए कि 80 से 85 प्रतिशत लागत ओएक्स के कारण है, फिर भी 50 अमेरिकी डॉलर/ मी. टन का अंतर वर्तमान उत्पाद की कीमत में काफी है।
- ख) याचिकाकर्ताओं ने समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, पत्तन व्यय, सार संभाल प्रभार, बैंक प्रभार और कमीशन के निमित्त खर्चों के लिए डीजीसीआईएंडएस के लेन-देन वार आयात आंकड़ों के आधार पर सीआईएफ निर्यात कीमत समायोजित कर निवल निर्यात कीमत का दावा किया है और वे प्राधिकारी के रिकार्ड में हैं।
- ग) सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के परिकलन यह दर्शाते हैं कि पाटन मार्जिन सकारात्मक और काफी हैं।
- घ) विदेशी उत्पादक या प्रमुख इनपुट ऑर्थोक्सिलीन (ओएक्स) का उत्पादन कर रहे हैं या संबद्ध कंपनियों से उसकी खरीद कर रहे हैं। कैप्टिव इनपुट का मूल्यांकन इस मामले में सामान्य मूल्य के निर्धारण में महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि कच्ची सामग्री कुल उत्पादन लागत की लगभग 80-85 की लगती है।

- ड) प्रश्नावली के उत्तरों में कैप्टिव इनपुट तथा उसके कीमत निर्धारण और संबद्ध पक्षकारों से इनपुट खरीदने के संबंध में भी सूचना के संबंध में कमी और अस्पष्ट हैं। निर्यातकों द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तर यह बताने में विफल रहे कि क्या संबंधित पक्षकारों की खरीदारियां उचित बाजार कीमत दर्शा रही थीं तथा प्रतिनिधारक थीं।
- च) "शुल्क वापसी" के नाम पर इन निर्यातकों द्वारा दावा किए गए समायोजन उसकी स्वीकार्यता का औचित्य तब तक नहीं बनाते जब तक वह सत्यापनयोग्य साक्ष्य से सिद्ध न किया जाए कि कंपनी द्वारा ली गई वापसी वह उस इनपुट के संबंध में है जिसकी खपत निर्यातित उत्पाद के उत्पादन में की गई थी।
- छ) निर्यातकों द्वारा अधिसंख्या उत्पाद उसी संयंत्र में उत्पादित किए जाते हैं जिसमें विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन किया जाता है। उपयुक्त आधार पर संबद्ध सामानों सहित विभिन्न उत्पादों की उत्पादन लागत में सामान्य यूटिलिटियों और कच्ची सामग्री के विभिन्न लागत के आबंटन का मुद्दा महत्वपूर्ण है।
- ज) एकयुंग की निवल निर्यात कीमत निकालने के लिए व्यापारी के कमीशन और एसजीए व्यौरे जैसे खर्चों के मानने के संबंध में कोई स्पष्टता नहीं है।
- झ) फिथालिक एनहाइड्राइड की खपत डीओपी के उत्पादन के लिए कच्ची सामग्री के रूप में कैप्टिव रूप से की जाती है। एकयुंग द्वारा दायर डीओपी के निर्यातक उत्तर में निर्यातक कैप्टिव रूप से खपत की गई कच्ची सामग्री की कीमत के आधार पर सूचना संबंधी प्रश्न के उत्तर से जानबूझकर बचा है।
- ञ) फिथालिक एनहाइड्राइड का प्रयोग एकयुंग की संबंधित कंपनी एकयुंग केमिकल कं. लि. द्वारा अलकाइड रेसिन्स के उत्पादन के लिए भी किया जाता है। फिथालिक एनहाइड्राइड का प्रयोग प्लास्टिसाइजर्स के उत्पादन के लिए एलजी केमिकल्स द्वारा कैप्टिव रूप से किया जा रहा है। यदि कैप्टिव बिक्री को घरेलू बिक्री होने का दावा की जाने वाली बिक्री में शामिल किया जाता है तो उस कैप्टिव बिक्री की घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए उपेक्षा की जानी चाहिए।
- ट) एकयुंग ने दावा किया है कि उन्होंने केवल पांच निर्यातकों के माध्यम से निर्यात किया है। यदि अधिक निर्यातक है तो एक निर्यातक द्वारा भी उत्तर न दिए जाने से एकयुंग द्वारा दायर उत्तर रद्द हो जाना चाहिए।
- ठ) एकयुंग का यह दावा कि मूल जांचों में उन्हें शून्य शुल्क अवार्ड किया गया था और उनके विरुद्ध वर्तमान जांचें रद्द की जानी चाहिए, सही नहीं है। शून्य शुल्क से प्राधिकारी उन निर्यातकों के संबंध में निर्णायक समीक्षा करने से प्रतिबंधित नहीं हो जाती। भारतीय प्राधिकारी परिपाटी के अनुसार पूर्ण मध्यावधि और पूर्ण निर्णायक समीक्षा करते हैं जिसमें पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्राधिकारी समीक्षा अवधि में वास्तविक निर्यातों के संबंध में पाटन मार्जिन की मौजूदगी निर्धारित करते हैं।
- ड) एलजी केम. ने भारत को संबद्ध सामानों का बड़ी कम मात्रा में निर्यात किया है। कुछ लेन-देनों के बावजूद, पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए इन लेन-देनों पर विचार किया जाना चाहिए।
- ढ) एलजी ने दावा किया है कि वे डीओपी के उत्पादन के लिए कैप्टिव खपत हेतु फिथालिक एनहाइड्राइड का उत्पादन करते हैं न कि नियमित बाहरी बिक्री के लिए। उस स्थिति में, सामान्य मूल्य के रूप में घरेलू बिक्री की कीमत मानने के लिए उनका दावा अनुचित है। यहां तक कि यदि घरेलू बिक्री कीमत को सामान्य मूल्य माना भी जाए तो अनुरोध है कि कैप्टिव बिक्री मूल्य को सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए उससे अलग किया जाना चाहिए।
- ण) एल. जी. केम. भारत को सीधे ही और ट्रेडिंग एजेंटों के माध्यम से भी निर्यात करता है। एल. जी. केम. की निवल निर्यात कीमत व्यापारियों को दिए गए कमीशन को घटाकर परिकलित की जानी चाहिए।
- त) गदिव पेट्रोकेमिकल एक असहयोगी निर्यातक रहा है क्योंकि यह कंपनी निर्यातक प्रश्नावली भाग-II के उत्तर दायर करने में विफल रही।
- थ) "उपयुक्त तीसरा देश" के आधार पर सामान्य मूल्य के रूप में इटली को बिक्री पर करने के लिए गदिव के दावे में औचित्यपूर्ण कारण का अभाव है।
- द) मूल जांच में गटिव ने पुर्तगाल को निर्यात बिक्री के आधार पर सामान्य मूल्य का दावा किया है। प्राधिकारी ने उनके दावे को स्वीकार नहीं किया क्योंकि गटिव ने कोई औचित्य नहीं दिए कि पुर्तगाल को ही उपयुक्त तीसरा देश क्यों माना जाए जब कंपनी ने अन्य तीसरे देश को भी निर्यात किए। प्राधिकारी ने गदिव की कंपनी की कुल उत्पादन लागत उत्पादन आधार पर फिथालिक एनहाइड्राइड को आबंटित की। प्राधिकारी ने गटिव के लिए सामान्य मूल्य मूल जांच में ऑर्थोक्सिलीन की अंतर्राष्ट्रीय कीमत के आधार पर निर्मित की थी।

**इ.2 निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध**

31. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- (क) याचिकाकर्ताओं ने पाटन मार्जिन के अत्यधिक स्तर का दावा किया है। पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए सहयोगी निर्यातकों द्वारा दिए गए आंकड़ों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- (ख) एकयुंग और उसके निर्यातकों के विरुद्ध वर्तमान जांच रद्द की जानी चाहिए क्योंकि प्राधिकारी नियम 14(ग) और जीएटीटी के अनुच्छेद VI के अनुच्छेद 5.8 के अनुसार एकयुंग पेट्रोकेमिकल कं. लि. और उसके व्यापारी हुमेड कारपोरेशन से उस उत्पाद के आयातों के संबंध में मूल जांचों में शून्य शुल्क की सिफारिश की। दिनांक 29 नवंबर, 2005 को बीफ और राइस डब्ल्यूटी/डीएस295/एबी/आर के संबंध में मैक्सिको – निश्चयात्मक पाटनरोधी उपायों में अपीलीय निकाय की रिपोर्ट के पैरा 219 का संदर्भ दिया गया है।
- (ग) एकयुंग ने दावा किया है कि जहां पाटनरोधी शुल्क लागू नहीं है वहां शुल्क बंद करने अथवा वापस लेने का प्रश्न नहीं उठता।
- (घ) एल. जी. केम. ने गृह बाजार में बिक्री के आधार पर सामान्य मूल्य का दावा किया है।
- (ङ) गदिव ने "उपयुक्त तीसरे देश" के आधार पर सामान्य मूल्य के रूप में इटली को निर्यात बिक्री कीमत को माने जाने का दावा किया है।
- (च) हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि यदि घरेलू उद्योग नवीनतम प्रौद्योगिकी में उन्नयन की प्रक्रिया में हैं तो इसका अभिप्राय यह है कि घरेलू उद्योग सर्वाधिक दक्ष उत्पादक होने का दावा नहीं कर सकता और उनकी लागत पर असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्मित सामान्य मूल्य के परिकलन के लिए विचार नहीं किया जा सकता।
- (छ) घरेलू उद्योग भारतीय पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 6(IV) तथा अनुच्छेद 2.4.2 की अनिवार्य अपेक्षाओं को पूरा किए बिना लेन-देन वार आधार पर सकारात्मक एवं नकारात्मक पाटन मार्जिन परिकलन नहीं दे सकता।

**इ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच**

32. निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों ने निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर (भाग-I और भाग-II) दायर किए हैं:

- (क) एकयुंग पेट्रोकेमिकल कं. लि. (उत्पादक) - कोरिया
- (ख) वूरी पीएंडसी कारपोरेशन (निर्यातक) - कोरिया
- (ग) हुंडई कारपोरेशन (निर्यातक) - कोरिया
- (घ) हुमाडे कारपोरेशन (निर्यातक) - कोरिया
- (ङ) कंको मार्केटिंग इंक. (निर्यातक) - कोरिया
- (च) उबेसको कारपोरेशन (निर्यातक) - कोरिया
- (छ) एल. जी. केम लि. (उत्पादक और निर्यातक) - कोरिया
- (ज) गदिव पेट्रोकेमिकल्स इंडस्ट्रीज लि. (उत्पादक और निर्यातक) - इजराइल

33. प्राधिकारी ने उस प्रत्येक ज्ञात उत्पादक के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन निर्धारित किया है जिसने प्राधिकारी के साथ सहयोग किया है। उन मामलों में, जिनमें उत्पादक विचाराधीन उत्पाद का निर्यात एक या अधिक संबद्ध/असंबद्ध व्यापारियों के माध्यम से किया है, यह जांच की गई कि क्या उन व्यापारियों ने प्रश्नावली के उत्तर दायर किए हैं। जिन मामलों में निर्यातकों ने प्रश्नावली के उत्तर दायर नहीं किए हैं, वहां यह सुनिश्चित किया गया कि क्या असहयोगी निर्यातकों द्वारा किए गए निर्यातों की मात्रा काफी थी। जब भी वह मात्रा कम पाई गई तो उत्पादक की प्रश्नावली के उत्तर अलग-अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए स्वीकार किए गए हैं।

34. इन उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए प्राधिकारी द्वारा अपनाया गया सामान्य सिद्धांत पहले यह जांच करना है कि क्या उत्तरदाता निर्यातकों द्वारा उनके गृह बाजार में संबद्ध सामानों की घरेलू बिक्री घरेलू बिक्री कीमतों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए प्रतिनिधिकारक और अर्थक्षम थी तथा क्या व्यापार परीक्षण की सामान्य अवधि उत्तरदाता द्वारा दिए गए आंकड़ों के अनुसार संतोषजनक थी। ऐसे मामलों में सामान्य मूल्य का निर्धारण घरेलू बिक्री कीमतों के आधार पर किया गया है। दूसरे मामलों में संबंधित निर्यातकों द्वारा दावा किए गए बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय सहित उत्पादन लागत को उचित सत्यापन के बाद तथा सामान्य मूल्य निकालने के लिए लाभ के निमित्त 5 प्रतिशत जोड़ने के बाद स्वीकार की गई है।

35. ऑर्थोक्सिलीन विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में प्रयुक्त एक मूलभूत कच्ची सामग्री है जिसके निमित्त लागत, विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत का 75-85 प्रतिशत बनती है। अल्पावधि में ओएक्स की कीमतों में भारी अंतर के मद्देनजर उत्पाद लागत और परिणामस्वरूप सामान्य मूल्य ओएक्स की कीमतों में परिवर्तनों के कारण जांच की अवधि में उत्पादन लागत को समायोजित करके मासिक आधार पर निर्धारित किया गया है।
36. उत्पादन लागत के निर्धारण के लिए अपनाया गया सामान्य सिद्धांत – प्राधिकारी ने व्यापार परीक्षण की सामान्य अवधि लागू करने के लिए उत्पादन लागत के निर्धारण के लिए संगत सूचना हेतु विस्तृत अपेक्षाएं निर्धारित कीं। प्राधिकारी द्वारा स्थल सत्यापन नहीं किया गया और इसके बजाए उन्होंने उत्तरदाता निर्यातकों द्वारा दी गई उत्पादन लागत की सूचना के संबंध में एक टेबल स्टडी की। उत्पादकों को यह भी निर्देश दिया गया था कि वे उनके देश में कार्यरत लेखाकार द्वारा विधिवत प्रमाणित उत्पादन लागत का विवरण दें।
37. जहां तक घरेलू उद्योग के इस दावे का संबंध है कि ऑर्थोक्सिलीन की क्रय कीमत ज्यादा करीब नहीं है, प्राधिकारी मानते हैं कि कंपनी द्वारा रखे गए रिकार्ड के आधार पर कंपनी द्वारा सूचना दी गई है, अतः प्राधिकारी उसे अपनाने की अपेक्षा है। गटिव पैट्रोकेमिकल्स इंडस्ट्रीज लि. (गटिव) द्वारा सूचित की गई खपत कीमत गटिव द्वारा सूचित की गई खपत कीमत और याचिकाकर्ताओं द्वारा सूचित ओएक्स की विद्यमान कीमतों से सह-संबद्ध थीं। गटिव द्वारा सूचित खपत कीमत में प्राधिकारी द्वारा कोई खास अंतर नहीं पाया गया।
38. जहां तक शुल्क वापसी के लिए निर्यातकों द्वारा दावा किए गए समायोजन के साक्ष्य के संबंध में घरेलू उद्योग के दावे का संबंध है, प्राधिकारी ने सत्यापित किया है कि निर्यातक द्वारा प्राप्त शुल्क वापसी निर्यात के लिए खपत किए गए इनपुट के संबंध में है।

### इ.3.1 कोरिया गणराज्य में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण

#### 1. एकयुंग पैट्रोकेमिकल कं. लि. (एकयुंग) और इसके निर्यातक

39. एकयुंग पैट्रोकेमिकल कं. लि. ने अपने पांच निर्यातकों, जिन्होंने भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात किया है, सहित निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर दायर कर दिए हैं। एकयुंग पैट्रोकेमिकल द्वारा सूचित निर्यातकों द्वारा किए गए निर्यात भारत को कुल निर्यातों का 51 प्रतिशत है।
40. एकयुंग के इस दावे के संबंध में प्राधिकारी ने एकयुंग पैट्रोकेमिकल कं. लि. से इस उत्पाद के आयातों पर मूल जांचों में शून्य शुल्क की सिफारिश की थी और उनके विरुद्ध वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच रद्द की जानी चाहिए, यह नोट किया जाता है कि मूल जांचों के समय निर्यातक को अवार्ड किया गया शून्य शुल्क उस समय संगत तथ्यों के आधार पर था। वर्तमान निर्णायक समीक्षा करते समय प्राधिकारी जांच की वर्तमान समीक्षा अवधि में तथ्यों की जांच के आधार पर निर्धारण करेंगे। निर्णायक समीक्षा जांच में किए गए निर्धारण समीक्षा अवधि में सिद्ध वास्तविक पाटन मार्जिन और वास्तविक क्षति पर आधारित हैं। प्राधिकारी ने करार के अनुच्छेद 2 और 3 की अपेक्षाओं के अनुरूप पाटन एवं क्षति के सभी पहलुओं के संबंध में पूर्ण जांच की है। इस प्रकार, वर्तमान समीक्षा में पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का पूरी तरह से नए सिरे से निर्धारण शामिल है।

#### (क) सामान्य मूल्य

41. प्राधिकारी नोट करते हैं कि एकयुंग पैट्रोकेमिकल कं. लि., कोरिया गणराज्य (एकयुंग), कोरिया गणराज्य से फिथालिक एनहाइड्राइड का उत्पादन है और उसने जांच की अवधि में अपने व्यापारियों के माध्यम से भारत को संबद्ध सामानों का निर्यात किया है। इसके अतिरिक्त, एकयुंग घरेलू बाजार में संबद्ध सामानों की बिक्री करता है और दूसरे कई देशों को निर्यात भी करता है। परिशिष्ट-1 में कंपनी ने जांच की अवधि में 1937 घरेलू बिक्री लेन-देन सूचित किए हैं। इन बिक्रियों में मात्रा की दृष्टि से लगभग 71 प्रतिशत असंबद्ध पक्षकार थे। कंपनी ने घरेलू बाजार में \*\*\* मी. टन संबद्ध सामान बेचे हैं। परिशिष्ट-1 के अनुसार कंपनी ने अंतर्देशीय भाड़ा, ऋण व्यय, बैंक प्रभार और पैकिंग व्यय के निमित्त समायोजनों का दावा किया है। एकयुंग द्वारा गृह बाजार में घरेलू बिक्री के संबंध में दी गई सूचना की प्राधिकारी द्वारा जांच की गई। दावा किए गए विभिन्न समायोजनों को भी सत्यापित किया गया और उन्हें सही पाया गया। व्यापार परीक्षण की सामान्य अवधि के निर्धारण के लिए संबंधित उत्पाद की उत्पादन लागत को स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या व्यापार की सामान्य अवधि में घरेलू बिक्री हुई थी, संबद्ध सामानों की उत्पादन लागत के संदर्भ में सभी घरेलू बिक्री लेन-देनों की जांच की गई। प्राधिकारी नोट करते हैं कि गृह बाजार में एकयुंग द्वारा संबद्ध सामानों की घरेलू बिक्री, घरेलू बिक्री कीमतों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए प्रतिनिधिकारक थीं और एकयुंग द्वारा दिए गए आंकड़ों के अनुसार व्यापार परीक्षण की सामान्य अवधि संतोषजनक थी। इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी ने उचित सत्यापन के बाद उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा

दावा किए गए अनुसार अंतर्देशीय भाड़ा, पैकिंग प्रभार, बैंक प्रभार आदि के लिए सामान्य मूल्य समायोजित किया। इस प्रकार, निर्धारित सामान्य मूल्य पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

#### (ख) निर्यात कीमत

42. प्राधिकारी नोट करते हैं कि परिशिष्ट-2 में मैसर्स एकयुंग पेट्रोकेमिकल कं. लि. ने पांच निर्यातकों – वूरी पीएंडसी कारपोरेशन, हुंडई कारपोरेशन, हुमेड कारपोरेशन, कंको मार्केटिंग, आईएनसी और उवेसको कारपोरेशन के माध्यम से जांच की अवधि में भारत को संबद्ध सामानों का \*\*\* मी. टन निर्यात दर्शाते हुए 213 लेन-देन सूचित किए। यह नोट किया जाता है कि उपर्युक्त सभी निर्यातकों ने प्रश्नावली के उत्तर दायर कर दिए हैं। प्राधिकारी ने उत्तरदाता निर्यातकों के संबंध में उनके द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तरों के आधार पर निर्यात कीमतों की जांच की है। जांच के बाद निर्यात कीमतों और उनके समायोजनों की अनुमति दी गई है। कारखानागत स्तर पर निर्यात कीमत का परिकलन कारखाने के बाद के सभी खर्चों अर्थात् उत्पादक द्वारा किए गए। समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, अंतर्देशीय भाड़ा, कमीशन, पत्तन सार संभाल प्रभार, बैंक प्रभार, शुल्क वापसी आदि के खर्चों को घटाकर किया गया है। इस प्रकार निकाली गई निवल निर्यात कीमत का प्रयोग पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए किया गया।

### II. एल. जी. केम लि. (एलजी)

#### (क) सामान्य मूल्य

43. एल. जी. केम ने गृह बाजार में उनकी बिक्री को सामान्य मूल्य के रूप में माने जाने का दावा किया है, एल. जी. केम द्वारा दायक उत्तर से प्राधिकारी नोट करते हैं कि एल. जी. केम ने जांच की अवधि में 285 घरेलू बिक्री लेन-देन सूचित किए हैं। ये सभी बिक्रियां असंबद्ध पक्षकारों को थीं। कंपनी ने घरेलू बाजार में \*\*\* मी. टन संबद्ध सामानों की बिक्री की। परिशिष्ट-1 के अनुसार कंपनी ने अंतर्देशीय भाड़ा, ऋण व्यय और पैकिंग व्यय के निमित्त समायोजनों का दावा किया है। एल. जी. केम द्वारा गृह बाजार में घरेलू बिक्री के संबंध में दी गई सूचना का प्राधिकारी द्वारा सत्यापन किया गया था। दावा किए गए कई समायोजनों का भी सत्यापन किया गया था और वे सही पाए थे। व्यापार परीक्षण की सामान्य अवधि के निर्धारण के लिए निर्यातक द्वारा दावा किए गए संबंधित उत्पाद का उत्पादन लागतों को जांच के बाद स्वीकार किया गया है। अतिरिक्त संबंधित सामानों की उत्पादन लागतों के संदर्भ में सभी घरेलू बिक्री लेन-देनों की जांच यह निर्धारित करने के लिए की गई कि क्या गृह बाजार में घरेलू बिक्रियां व्यापार की सामान्य अवधि में थीं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि गृह बाजार में एल. जी. केम द्वारा संबद्ध सामानों की घरेलू बिक्री घरेलू बिक्री कीमतों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए प्रतिनिधिकारक थीं और व्यापार परीक्षण की सामान्य अवधि एल. जी. केम द्वारा दिए गए आंकड़ों के अनुसार संतोषजनक थी। इस आधार पर निर्धारित सामान्य मूल्य पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

#### (ख) निर्यात कीमत

44. प्राधिकारी नोट करते हैं कि परिशिष्ट-2 में मैसर्स एल. जी. केम लि. ने जांच की अवधि में भारत को संबद्ध सामानों के \*\*\* मी. टन निर्यात दर्शाते हुए 17 लेन-देन सूचित किए। निर्यात कीमतों और उनके समायोजनों की, जांच के बाद अनुमति दी गई है। कारखानागत स्तर पर निर्यात कीमत का परिकलन विनिर्माण के बाद सभी खर्चों अर्थात् उत्पादक द्वारा किए गए समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, अंतर्देशीय भाड़ा, कमीशन, पत्तन सार-संभाल प्रभार, बैंक प्रभार, शुल्क वापसी आदि के खर्चों को घटाकर किया गया है। इस प्रकार, निकाली गई निवल निर्यात कीमत का प्रयोग पाटन मार्जिन निर्धारित करने के लिए किया गया है।

### III. कोरिया गणराज्य में सभी असहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण

45. कोरिया के अन्य सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर मानी गई है। प्राधिकारी ने सहयोगी निर्यातकों के लिए निर्धारित प्रत्येक माह के लिए उच्चतम सामान्य मूल्य माना है और असहयोगी निर्यातकों के लिए उसी को अपनाया है। आंकड़े रिकार्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार मिला दिए गए हैं। इस आधार पर पाटन मार्जिन संगत तालिका में दर्शाया गया है।

### ड.3.2 इजराइल में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण

#### I. गदिव पेट्रोकेमिकल्स इंडस्ट्रीज लि. (गादिव)

46. गदिव ने दावा किया है कि चूंकि गृह बाजार में उनकी बिक्रियां अपर्याप्त बाजार मांग के कारण कम हैं, अतः "उपयुक्त तीसरे देश" के आधार पर इटली को बिक्री के सामान्य मूल्य के रूप में माना जाना चाहिए। तथापि, कंपनी ने इसका कोई कारण नहीं बताया कि इटली को बिक्री एक "उपयुक्त तीसरा देश" क्यों बनाती है।

**(क) सामान्य मूल्य**

47. कंपनी ने भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात सीधे ही किया है। कंपनी की कोई घरेलू बिक्री नहीं है। डेस्कटॉप जांच के लिए कंपनी से सभी तीसरे देशों को की गई लेन-देन वार बिक्रियां बताने के लिए कहा गया था। तथापि, कंपनी ने मांगी गई पूरी सूचना नहीं दी। कंपनी ने अनुरोध किया कि इटली को तुलनीय तीसरा देश माना जाए जिसके लिए उसका सामान्य मूल्य निर्धारित करने के लिए निर्यातों की सूचना दे दी गई है और यदि प्राधिकारी इटली को तुलनीय तीसरे देश नहीं मानते हैं तो फिर प्राधिकारी उनके लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण उनकी पीएएन की वास्तविक उत्पादन लागतों के आधार पर करें। प्राधिकारी ने इस अनुरोध की जांच की, परंतु इटली को एक तुलनीय तीसरा देश स्वीकार नहीं किया क्योंकि कंपनी ने इसका कोई औचित्य नहीं दिया कि अकेले इटली को ही उपयुक्त तीसरा देश क्यों माना जाना चाहिए जबकि कंपनी ने अन्य तीसरे देशों को भी निर्यात किए हैं। प्राधिकारी ने गदिव की उत्पादन लागत को भी स्वीकार नहीं किया क्योंकि उन्होंने उत्पादित पीएएन की मात्रा और पीएएन सहित पूरे उत्पादन की कुल उत्पादन मात्रा के आधार पर कंपनी की कुल उत्पाद लागत पीएएन में आबंटित की है। उपर्युक्त दृष्टि से प्राधिकारी ने गदिव के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया है। ऑर्थोक्सिलीन की अंतर्राष्ट्रीय कीमत, मुख्य इनपुट के खपत मानदंड अर्थात् सत्यापित की गई सीमा तक सह-उत्पाद भाप के लिए यूटिलिटीज एवं ऋण पर विचार किया गया है। सर्वाधिक घरेलू उद्योग के एसजीए व्यय और परिवर्तन लागत तथा बिक्री लागत के 5 प्रतिशत के उपयुक्त लाभ मार्जिन पर भी विचार किया गया है। इस प्रकार, निर्धारित सामान्य मूल्य पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

**(ख) निर्यात कीमत**

48. प्राधिकारी नोट करते हैं कि परिशिष्ट-2 में मैसर्स गदिव पैट्रोकेमिकल इंडस्ट्रीज लि. ने 01 अक्तूबर, 2016 से 30 सितंबर, 2017 तक 12 माह की अवधि में भारत को संबद्ध सामानों के \*\*\* मी. टन निर्यात दर्शाते हुए 23 निर्यात लेन-देन सूचित किए हैं, जबकि जांच की अवधि 01 अप्रैल, 2016 से 30 सितंबर, 2017 तक 18 माह की है। अतः मैसर्स गदिव के लिए निर्यात कीमत पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्मित की गई है। इस प्रकार, निकाली गई निवल निर्यात कीमत का पाटन मार्जिन निर्धारित करने के लिए प्रयुक्त की गई है।

**II. इजराइल में सभी असहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण**

49. इजराइल के सभी अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर मानी गई है। आंकड़े रिकार्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार मिला दिए गए हैं। इस आधार पर पाटन मार्जिन संगत तालिका में दर्शाया गया है।

**ड.3.3 ताइवान में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण**

50. चूंकि, ताइवान से किसी भी अन्य उत्पादक/निर्यातक ने उत्तर नहीं दिया है, अतः सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर मानी गई है। अतः ताइवान उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य, उत्पादन लागत और कच्ची सामग्री की कीमत के सर्वोत्तम अनुमानों के आधार पर निर्धारित की गई है। इस आधार पर, पाटन मार्जिन संगत तालिका में दर्शाया गया है।

**ड.3.4 पाटन मार्जिन का परिकलन**

51. ऊपर निर्धारित किए गए अनुसार सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना करने पर जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देशों में उत्तरदाता तथा गैर-उत्तरदाता उत्पादकों एवं निर्यातकों के लिए निर्धारित किए जाने के लिए प्रस्तावित पाटन मार्जिन निम्नलिखित है:

## पाटन मार्जिन

क्रम सं.	उत्पादक	निर्यातक	सामान्य मूल्य अमेरिकी डॉलर/ मी. टन	निवल निर्यात कीमत अमेरिकी डॉलर/मी. टन	पाटन मार्जिन अमेरिकी डॉलर/ मी. टन	पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन रेंज %
<b>कोरिया</b>							
1	एकयुंग पैट्रोकेमिकल कं. लि.	<ul style="list-style-type: none"> <li>बूरी पीएंड सी कारपोरेशन,</li> <li>हुंडई कारपोरेशन,</li> <li>हुमाडे कारपोरेशन,</li> <li>कंको मार्केटिंग इंक.,</li> <li>उबसको कारपोरेशन</li> </ul>	***	***	(***)	(***)	-(10-0)
2	एल. जी. केम लि.	एल. जी. केम लि.	***	***	***	***	0-10
3	अन्य सभी	अन्य सभी	***	***	***	***	0-10
<b>इजराइल</b>							
4	गदिव पैट्रोकेमिकल्स इंडस्ट्रीज लि.	गदिव पैट्रोकेमिकल्स इंडस्ट्रीज लि.	***	***	***	***	10-20
5	अन्य सभी	अन्य सभी	***	***	***	***	10-20
<b>ताइवान</b>							
6	सभी उत्पादक	सभी निर्यातक	***	***	***	***	0-10

**च. क्षति का निर्धारण और कारणात्मक संपर्क****च.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध**

52. घरेलू उद्योग ने अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित अनुरोध किए:

- (क) वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है।
- (ख) विचाराधीन उत्पाद के लिए मांग मूल जांचों की जांचावधि और वर्तमान जांच की अवधि के बीच 32 प्रतिशत तक बढ़ी है।
- (ग) यद्यपि, घरेलू उद्योग की बिक्री केवल 8 प्रतिशत तक बढ़ी और भारतीय उत्पादकों की बिक्री समग्र रूप से मूल जांचों की जांचावधि और वर्तमान जांच की अवधि के बीच 12 प्रतिशत तक बढ़ी। तथापि, संबद्ध देशों से आयात उसी अवधि में 41 प्रतिशत तक बढ़े।
- (घ) इसके परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग घरेलू बाजार में अपना पूरा उत्पादन बेचने में असमर्थ रहा और विचाराधीन उत्पाद की भारी मात्रा निर्यात करने के लिए मजबूर था।
- (ङ) इसके अतिरिक्त, यद्यपि वर्तमान क्षति अवधि में घरेलू बिक्री की मात्रा में वृद्धि है, तथापि, 26 प्रतिशत तक मांग में वृद्धि की तुलना में आधार वर्ष और जांच की अवधि के बीच केवल 12 प्रतिशत की वृद्धि दर है जबकि संबद्ध आयात आधार वर्ष और जांच की अवधि के बीच 86 प्रतिशत तक बढ़े।
- (च) घरेलू उद्योग की क्षमता 2014-15 में बढ़ी और क्षति की अवधि में स्थिर रही। घरेलू उद्योग अब अपनी क्षमताएं और अधिक बढ़ा रहा है।
- (छ) मात्रात्मक मानदंड, यथा – घरेलू उद्योग का उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग 2015-16 में बढ़ा और जांच की अवधि में वह कम हो गया।



- (ज) घरेलू उद्योग का औसत मालसूची स्तर 2015-16 तक कम हुआ और फिर जांच की अवधि में बढ़ गया।
- (झ) लाभप्रदता, निवेश पर आय और नकद लाभ में सुधार हुआ है क्योंकि घरेलू उद्योग वित्तीय हानियों की स्थिति से बाहर आ गया और लाभ कमाने लग गया।
- (ञ) घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 2014-15 में बढ़ा है और फिर जांच की अवधि में कम हो गया।
- (ट) रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता – रोजगार के स्तर में गिरावट आई है, जबकि क्षति की अवधि में मजदूरी बढ़ी है। प्रति कर्मचारी उत्पादकता 2015-16 तक बढ़ी है और फिर जांच की अवधि में कम हुई है।
- (ठ) वृद्धि – मात्रात्मक मानदंडों यथा – बिक्री, मात्रा, उत्पादन और क्षमता उपयोग जैसे मानदंडों के संदर्भ में घरेलू उद्योग की वृद्धि वर्ष दर वर्ष आधार पर 2015-16 तक सुधार दर्शाती है और फिर जांच की अवधि में गिरावट दर्शाती है। लाभ, निवेश पर आय और नकद लाभ जैसे कीमत संबंधी मानदंडों के संदर्भ में वृद्धि संबद्ध आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने और अन्य पाटित स्रोतों से आयातों के कारण सकारात्मक थी।
- (ड) पूंजीगत निवेश जुटाने की क्षमता – याचिकाकर्ताओं ने क्षमता बढ़ाने की योजना बनाई है। इस प्रयोजन के लिए निवेश पहले ही प्रतिबद्ध कर दिए गए हैं। इस स्तर पर संबद्ध देशों से आयातों पर पाटनरोधी शुल्क बंद करने से निवेश लड़खड़ा जाएंगे।
- (ढ) कारणात्मक संपर्क मूल जांच में पहले ही सिद्ध कर दिए गए हैं। याचिकाकर्ताओं ने यह दावा नहीं किया है कि पाटित आयातों से लगातार क्षति हो रही है क्योंकि लागू पाटनरोधी शुल्क उस क्षति का सामना करते हैं जो पाटित आयातों के कारण हो सकती है। अतः वर्तमान मामले में कारणात्मक संपर्क की जांच पाटित उत्पाद के संभावित आयात तथा पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में परिणामी क्षति पर विचार करते हुए की जानी चाहिए।
- (ण) घरेलू बाजार में किए गए आयात पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद पाटित कीमतों पर थे। पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में संबद्ध सामानों के गहन पाटन की भारी संभावना है।
- (त) कीमत कटौती उन आयात लेन-देनों पर विचार करते हुए ही निर्धारित की जानी चाहिए जिनकी आयात की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है। निर्यातकों के कम कीमत पर लेने वाले दूसरे स्थानों को निर्यात पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में भारत में आएंगे क्योंकि ये निर्यात फिर भी तीसरे देशों की बजाए भारत में बेहतर कीमतें देने में सक्षम होंगे। इसके अतिरिक्त, भारत में संभावित मांग घरेलू उद्योग के निष्पादन को प्रभावित करने के लिए पाटित आयातों की उचित मात्रा लेने के लिए काफी हैं।

## च.2 उत्पादकों/निर्यातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध

53. इस जांच में निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने क्षति तथा कारणात्मक संपर्क के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
- (क) एशियन पेंट्स लिमिटेड द्वारा विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन बंद करने का निर्णय एक नीतिगत व्यापारिक निर्णय था और यह भी था कि कंपनी बंद करने के लिए मजबूर थी क्योंकि उन्हें आवेदकों द्वारा किए गए दावे के अनुसार पाटन के कारण हानियां हो रही थीं। घरेलू उद्योग द्वारा तथ्यों को गलत बताना है। एशियन पेंट्स ने फिथेलिक एनहाइड्राइड और उसके संबद्ध उत्पादों का उत्पादन मौजूदा पेंट विनिर्माण क्षमता बढ़ाने के लिए तथा सिंथेटिक रेसिन और इस सुविधा इम्लसन की विनिर्माण क्षमता बढ़ाने के लिए बंद करने की योजना बनाई थी।
  - (ख) यदि भारत में विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन करने वाली अन्य यूनिटें पाटन के कारण बंद कर दी गई हैं, जैसा कि याचिकाकर्ता ने दावा किया है तो उन्हीं कारकों से घरेलू उद्योग का निष्पादन भी प्रभावित होना चाहिए। तथापि, जैसा कि घरेलू उद्योग ने स्वयं ही स्वीकार किया है कि उसको भारत में विचाराधीन उत्पाद के आयातों के कारण क्षति नहीं हुई है।
  - (ग) 10 वर्षों तक विचाराधीन उत्पाद के आयातों के विरुद्ध बहुविध शुल्क संरक्षण से घरेलू उद्योग को उचित व्यापारिक क्षेत्र प्राप्त हुआ है। घरेलू उद्योग का निष्पादन क्षति की अवधि, जांच की अवधि और जांच की अवधि के बाद की अवधि में काफी सुधरा है, जैसा कि पीसीएन और आईजीपीएल की वार्षिक रिपोर्टों और तिमाही विवरणियों से सिद्ध है।
  - (घ) भावी उत्पादन योजना के लिए संरक्षण, जो कि अभी आना है, चल रही निर्णायक समीक्षा जांच में हल नहीं किया जा सकता। पाटनरोधी शुल्क लगाना पाटन के कारण होने वाली क्षति का उपचार करना है और निर्णायक समीक्षा जांच में यह सुनिश्चित करना है कि क्षति के बार-बार होने की संभावना न रहे।

- (द) एकयुग से आयात मात्रा को पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 और भारतीय पाटनरोधी नियमावली के पैरा 5(v), अनुबंध-II के अनुसार समग्र आयात विश्लेषण से अलग किया जाना चाहिए। ये आयात गैर-पाटित आयात माने जाते हैं।
- (च) अग्रिम लाइसेंस के तहत किए गए आयात घरेलू उत्पाद से प्रतिस्पर्धा नहीं करते और उन्हें क्षति विश्लेषण के क्षेत्र से अलग किया जाना चाहिए।
- (छ) घरेलू उद्योग ने स्वयं ही स्वीकार किया है कि कीमत न्यूनीकरण/हास, कम कीमत पर बिक्री, लाभप्रदता और बिक्री आदि के संदर्भ में सतत रूप से कोई क्षति नहीं हो रही है।
- (ज) घरेलू उद्योग ने जांच की अवधि के बाद के निष्पादन के संबंध में कोई विश्लेषण नहीं दिया है।
- (झ) याचिकाकर्ताओं ने दावा किया है कि संबद्ध देशों में भारतीय कीमतों से कम कीमतों पर तीसरे देशों को निर्यात किया है। यदि भारत में पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की एनआईपी से अधिक है तो वे उन उच्च आयात कीमतों से आयात मात्रा बढ़ने पर भी शुल्क बंद करने पर क्षति नहीं होगी।
- (ञ) तथाकथित क्षति का दावा यदि कोई है, संबद्ध देशों से आयातों के कारण नहीं होना चाहिए, बल्कि उन अन्य देशों के कारण होना चाहिए जिन पर पाटनरोधी शुल्क नहीं लग रहा है।
- (ट) यद्यपि, कुछ उत्पादकों ने उत्पादन बंद कर दिया है, तथापि, अन्य के पास पर्याप्त क्षमता है जिससे मांग-आपूर्ति अंतराल बन रहा है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने अपना जोर निर्यात तथा कैप्टिव बिक्री पर लगा दिया है। आयात अपरिहार्य हैं और पाटनरोधी शुल्क जारी रखने से प्रयोक्ता उद्योग की वृद्धि प्रभावित होगी।
- (ठ) घरेलू उद्योग का यह दावा कि उन्हें भारी मात्रा में निर्यात करने के लिए मजबूर किया जा रहा है, आधारहीन है।
- (ड) कीमत कटौती का निर्धारण अलग-अलग लेन-देनों, जिनमें निर्यात कीमत सामान्य मूल्य से कम थी, के बजाए प्रश्रुत संबद्ध सामानों के सभी आयातों पर आधारित होनी चाहिए। यूरोपीय आयोग में डब्ल्यूटीओ पैनल की रिपोर्ट-ट्यूब और पाइप फिटिंग्स का संदर्भ दिया गया है।
- (ढ) घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि मूल जांच में कारणात्मक संपर्क पहले ही सिद्ध कर दिया गया है, मूल जांच में निर्धारित कारणात्मक संपर्क और वर्तमान जांच में निर्धारित किए जाने वाले कारणात्मक संपर्क के बीच कोई संबंध मौजूद नहीं है, क्योंकि वर्तमान समीक्षा मामले में कोई क्षति नहीं है और मूल मामले में क्षति की अवधि और जांच की अवधि वर्तमान मामले से भिन्न है।
- (ण) ऑर्थोक्सिलीन के आयात पर मूल सीमा शुल्क 2018 में शून्य हो गया है और इसके आयात पर लगाए गए अन्य सभी कर क्रेडिट किए जाने योग्य हैं। संबद्ध सामानों के निर्यात के लिए घरेलू उद्योग को कर परिप्रेक्ष्य से कोई लाभ नहीं है, फिर भी वह भारत में कमी बनाने के लिए घरेलू बिक्री कीमत से कम कीमत पर संबद्ध सामानों का निर्यात कर रहा है और घरेलू बाजार में अधिक कीमत लगा रहा है।
- (त) उत्पादकों की संख्या आरंभिक शुल्क लगाए जाने के समय 5 से कम होकर अब 2 रह गई है जिससे दो याचिकाकर्ताओं की एकाधिकारिक स्थिति बन गई है। घरेलू उद्योग ने बहुत अधिक कीमतें वसूल की हैं और विचाराधीन उत्पाद की पहुँच कीमतों से अप्रभावित रहा है। पाटनरोधी शुल्क जारी रखने से घरेलू उद्योग द्वारा पाटनरोधी शुल्कों का दुरुपयोग कर व्यावसायी समूहन की परिपाटियाँ और अत्यधिक लाभ लेने की स्थिति ही प्रोत्साहित होगी।
- (थ) कच्ची सामग्री ओएक्स की कीमतें अक्तूबर, 2013 की तुलना में सितंबर, 2017 में अंतर्राष्ट्रीय रूप से 50 प्रतिशत तक कम हुई हैं जबकि फिथेलिक एनहाइड्राइड की कीमतें 25 प्रतिशत तक ही कम हुई हैं। फिथेलिक एनहाइड्राइड का डेल्टा ऊपर गया है और इस प्रकार इस उद्योग को पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की आवश्यकता नहीं है।
- (द) याचिकाकर्ताओं ने संबद्ध उत्पाद का बढ़ा हुआ आयात अत्यधिक बताया है और जानबूझकर घरेलू उद्योग को क्षति बनाई है।
- (ध) प्राधिकारी ने विभिन्न मामलों में वहाँ पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश नहीं की है जहाँ घरेलू उद्योग भारी लाभ अर्जित कर रहा है अथवा क्षति रहित कीमत से अधिक कीमत पर अपने उत्पाद बेच रहा है। यही बात वर्तमान जांच पर भी लागू है।
- (न) पाटनरोधी उपाय लगाया जाना जारी रखने से दीर्घावधि में भारतीय घरेलू उद्योग और उसके निचले उद्योगों के समग्र हित प्रतिकूल रूप से प्रभावित होंगे।

**च.3 प्राधिकारी द्वारा जांच**

54. प्राधिकारी घरेलू उद्योग और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों और उनमें उठाए गए मुद्दों को नोट करते हैं तथा निम्नलिखित संगत पैराग्राफों में उनका समाधान किया गया है।
55. हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना जारी रखना निचले उद्योगों के हित के विरुद्ध है, यह प्राधिकारी की सतत स्थिति है कि पाटनरोधी शुल्क का प्रयोजन पाटन की अनुचित परिपाटी को हल करना ही है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है अथवा क्षति होने की संभावना है। उचित कीमतों पर संबद्ध सामानों का आयात पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से प्रतिबंधित नहीं होता। पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन पाटन की अनुचित व्यापारिक परिपाटियों से घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित की जा सके जो कि देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से किसी भी तरह संबद्ध देशों से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसीलिए उपभोक्ताओं को संबद्ध सामानों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।
56. हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि शुल्क जारी रखने से याचिकाकर्ताओं की एकाधिकारिक स्थिति बनेगी, यह नोट किया जाता है कि अपाटित कीमतों पर विचाराधीन उत्पाद के आयातों के संबंध में कोई प्रतिबंध नहीं है। इसके अतिरिक्त, एकाधिकार अथवा व्यावसायी समूहन से संबंधित चिंताएं, यदि कोई हैं, इन मामलों के लिए उपयुक्त प्राधिकारी के समक्ष लाई जानी चाहिए।
57. कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग ने अपना ध्यान निर्यातों और कैप्टिव बिक्रियों में लगा दिया है। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ताओं द्वारा लगभग 80 प्रतिशत बिक्रियां घरेलू बाजार के लिए थीं। इसके अतिरिक्त, निर्यात बाजार में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता घरेलू बाजार में लाभप्रदता की तुलना में काफी प्रतिकूल है। यह दर्शाने के लिए रिकार्ड में कुछ भी नहीं है कि घरेलू उद्योग एक विकल्प के मामले के रूप में अथवा अधिमानता के रूप में निर्यात कर रहा था। निर्यातोन्मुखता में काफी कम लाभ की स्थिति में घरेलू उद्योग का एक स्वभाविक विकल्प घरेलू बाजार में बिक्री करना होना चाहिए।
58. इस तर्क के संबंध में कि याचिकाकर्ताओं में क्षमता के विस्तार के लिए किए गए निवेशों हेतु संरक्षण का दावा किया है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्णायक समीक्षा में प्राधिकारी पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को सतत पाटन और क्षति होने की संभावना की जांच करते हैं। निर्धारित मानदंडों के आधार पर घरेलू उद्योग को पाटन और क्षति की संभावना की जांच पर परवर्ती पैराओं में चर्चा की गई है। पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग के नए निवेशों की लाभप्रदता का संरक्षण करने के लिए तर्क के संबंध में प्राधिकारी सहमत हैं कि यह विचाराधीन मुद्दा नहीं है, परिणामस्वरूप, उनका विश्लेषण केवल जांच की अवधि के लिए उपलब्ध आंकड़ों और सूचना पर आधारित है।
59. हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि एशियन पेंट्स ने फिथेलिक एनहाइड्राइड का उत्पादन बंद कर दिया है क्योंकि संयंत्र का प्रयोग अन्य उत्पादों की विनिर्माण क्षमता बढ़ाने में किया जाएगा जो कि एशियन पेंट्स के व्यापार के लिए महत्वपूर्ण है, रिकार्ड में उपलब्ध सूचना से यह देखा जाता है कि यह एशियन पेंट्स का अन्य उत्पादों का विनिर्माण करने के लिए फिथेलिक एनहाइड्राइड के संयंत्र का प्रयोग करने का व्यापारिक निर्णय था। एशियन पेंट्स के आयातक प्रश्नावली के उत्तर से यह नोट किया जाता है कि कंपनी ने फिथेलिक एनहाइड्राइड का आयात करना आरंभ कर दिया है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि एशियन पेंट का फिथेलिक एनहाइड्राइड का उत्पादन बंद करने का कारण और अधिक लाभदायक प्रचालनों के लिए सुविधाओं का प्रयोग करना था जो किसी तरह से दर्शाता है कि कंपनी ने अन्य प्रचालनों की अपेक्षा पीएएन का उत्पादन कम लाभप्रद पाया।
60. उन्होंने यह तर्क दिया है कि एकयुंग से आयात मात्रा पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 तथा भारतीय पाटनरोधी नियमावली के पैरा 5(v) अनुबंध-II समग्र आयात विश्लेषण से अलग किया जाना चाहिए और मैक्सिको में अपील निकाय रिपोर्ट – बीफ एवं राइस के संबंध में निश्चयात्मक पाटनरोधी उपाय देखे जाने चाहिए। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि अपाटित आयातों को केवल तभी अलग किया जाना अपेक्षित है जब प्राधिकारी वास्तविक क्षति की जांच कर रहे हों। वर्तमान मामले में याचिकाकर्ताओं ने भी सतत क्षति का दावा नहीं किया है।
61. इस तर्क के संबंध में कि अग्रिम लाइसेंस के तहत किए गए आयात घरेलू उत्पाद से प्रतिस्पर्धा नहीं करते और इसीलिए उन्हें क्षति के विश्लेषण के क्षेत्र से अलग किया जाना चाहिए; प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति विश्लेषण के लिए सभी आयातों (शुल्कमुक्त अथवा शुल्कयुक्त) पर विचार करना प्राधिकारी की सतत परिपाटी रही है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग को उपर्युक्त लाइसेंस के विरुद्ध एफटीपी के प्रावधानों के अनुसार उसके अवैध होने के बाद भी आपूर्ति करने का

अवसर है और इसलिए अग्रिम लाइसेंस के तहत आयात घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री को प्रभावित करते हैं। अतः क्षति विश्लेषण के लिए शुल्कमुक्त आयातों को शामिल करना इस मामले में उपयुक्त है।

62. विरोधी हितबद्ध पक्षकारों के इस दावे के संबंध में कि ऑर्थोक्सिलीन के आयात पर मूल सीमा शुल्क 2018 में शून्य हो गया है और उसके आयातों पर लगाए गए सभी अन्य कर क्रेडिट योग्य हैं; यह नोट किया जाता है कि यह दावा इस जांच के लिए निर्धारित क्षति की अवधि और जांच की अवधि से बाहर की अवधि के लिए है और इसीलिए संगत नहीं है।
63. विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए इस अनुरोध के संबंध में कि जांच रद्द की जानी चाहिए जब निवल बिक्री वसूली क्षति रहित कीमत से अधिक हो, प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति रहित कीमत परिकलित करने का प्रयोजन प्राथमिक रूप से क्षति मार्जिन का परिकलन करना है ताकि लगाए जाने वाले शुल्क की मात्रा निर्धारित की जा सके, न कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति अथवा क्षति के बार-बार होने की संभावना का निर्धारण करने के लिए प्रमुख मानदंड के रूप में है। वर्तमान मामले में याचिकाकर्ताओं ने स्वयं क्षति का दावा नहीं किया है और इसीलिए एनएसआर के साथ एनआईपी की तुलना संगत नहीं है। तुलना उस स्थिति में संगत हो सकती है जब प्राधिकारी घरेलू उद्योग को सतत क्षति निर्धारित कर रहे हों।
64. क्षति के अभाव संबंधी अनुरोधों के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं ने स्वयं ही वर्तमान मामले में सतत क्षति का दावा नहीं किया है। इसके अतिरिक्त, नीचे किया गया क्षति विश्लेषण यह दर्शाएगा कि घरेलू उद्योग को लागू पाटनरोधी शुल्क के कारण सतत पाटन की वजह से सतत क्षति नहीं हुई है।
65. यथा तथ्यतः निम्नलिखित विश्लेषण हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए अन्य विभिन्न मुद्दों का समाधान करता है।

#### **च.4 क्षति की जांच और कारणात्मक संपर्क**

66. अनुबंध-11 के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम-11 में यह उपबंध है कि किसी क्षति जांच में "... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए ... "ऐसे कारकों की जांच शामिल होगी जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चल सकता हो। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।"
67. डब्ल्यू टी ओ करार के अनुच्छेद 3.1 और नियमावली के अनुबंध-11 में इन दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच की व्यवस्था है, (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव। पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पादों की कीमतों की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना है या ऐसा कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी मात्रा में बढ़ गई होती।
68. सीमा प्रशुल्क अधिनियम की धारा 9क(5) के अनुसार, पाटनरोधी शुल्क, जब तक उसे पूर्व में समाप्त न किया गया हो, इस प्रकार से लगाए जाने की तारीख से 5 वर्ष की समाप्ति पर निष्प्रभावी हो जाएगा। बशर्ते यदि किसी समीक्षा में केन्द्र सरकार का यह मत हो कि ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन तथा क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है तो वह समय-समय पर इस प्रकार से लगाए गए शुल्क की अवधि को आगे और 5 वर्ष के लिए बढ़ा सकती है और आगे की ऐसी अवधि इस प्रकार के समय विस्तार के आदेश की तारीख से शुरू होगी।
69. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच के लिए प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-11(iv) के अनुसार, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन की मात्रा तथा पाटन मार्जिन आदि जैसे घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले ऐसे तथ्यों पर विचार किया है।

70. इस संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए विभिन्न अनुरोधों पर विचार करने पर, प्राधिकारी संबद्ध देश से आयातों के कारण पाटन एवं क्षति के संभावित पहलुओं की जांच करने के लिए कार्यवाही करने से पूर्व घरेलू उद्योग को वर्तमान क्षति, यदि कोई है, की जांच करने की कार्यवाही करते हैं।

#### च.4.1 मांग का मूल्यांकन/स्पष्ट खपत

71. प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के लिए सभी स्रोतों से भारतीय उत्पादों एवं आयातों की घरेलू बिक्री की मात्रा के रूप में भारत में उत्पाद की मांग मांग अथवा स्पष्ट खपत को परिभाषित किया है। इस प्रकार निर्धारित की गई मांग नीचे तालिका में दी गई है:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि - क
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी. टन	192,261	222,206	218,824	215,847
सूचीबद्ध		100	116	114	112
समर्थक कंपनी सहित अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	मी. टन	33,687	34,864	34,470	33,479
सूचीबद्ध		100	103	102	99
संबद्ध देशों का आयात	मी. टन	30,917	26,886	36,009	57,450
सूचीबद्ध		100	87	116	186
उन अन्य देशों से आयात, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है,	मी. टन	21,822	20,437	17,891	8,550
सूचीबद्ध		100	94	82	39
अन्य देशों से आयात	मी. टन	2,056	4,763	25,219	39,056
सूचीबद्ध		100	232	1227	1900
<b>कुल मांग</b>	<b>मी. टन</b>	<b>280,744</b>	<b>309,157</b>	<b>332,412</b>	<b>354,382</b>
सूचीबद्ध		100	110	118	126

जांच की अवधि: अप्रैल, 2016 – सितंबर, 2017 (जांच की अवधि - क=वार्षिकीकृत)

72. यह देखा जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के लिए मांग क्षति की अवधि में बढ़ी है।
73. जहां तक हितबद्ध पक्षकारों के स्तर का संबंध है, याचिकाकर्ता भारत में मांग को पूरा करने में असमर्थ हैं तथा मांग और आपूर्ति का भारी अंतराल और इसलिए आयात आवश्यक हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि 354,382 मी. टन की वर्तमान मांग के विरुद्ध इस समय भारत में क्षमताएं 316,110 मी. टन (एसआई ग्रुप सहित) हैं और घरेलू उद्योग द्वारा किए जा रहे विस्तार के बाद वह 433,110 मी. टन हो जाएगी। इसके अतिरिक्त, याचिकाकर्ताओं ने यह तर्क दिया है कि कुछ आयात अग्रिम लाइसेंस के तहत दिए जा रहे हैं और वे पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी जारी रहेंगे। घरेलू उद्योग ने यह भी तर्क दिया है कि वह अपने उत्पाद की बिक्री करने में असमर्थ होने के मद्देनजर उत्पाद का निर्यात करने के लिए मजबूर रहा है और इन निर्यातों के बावजूद उसकी मालसूची काफी अधिक है। पाटनरोधी शुल्क का प्रयोजन सामान्य रूप में पाटन की अनुचित परिपाटियों द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित की जा सके जो कि देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से किसी भी तरह संबद्ध देशों से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसीलिए उपभोक्ताओं को संबद्ध सामानों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। प्राधिकारी इस संबंध में अपनी विगत स्थिति का संदर्भ देते हैं और डीएसएम इडेमिट्सु लिमिटेड बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में सेसटेट के निर्णय पर भी विश्वास करते हैं। यदि निर्यातक भारतीय बाजार में आवश्यकता को पूरा करने के लिए सामानों की आपूर्ति करना चाहते हैं जो कि सामान्य मूल्य के बराबर कीमत पर न कि पाटित कीमतों पर आवश्यकता का निर्यात करके किया जा सकता है।

#### च.4.2 पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव आयात मात्रा तथा बाजार हिस्सा

74. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित है कि क्या भारत में उत्पादन एवं खपत के संबंध में अथवा पूर्ण दृष्टि से पाटित आयातों में काफी वृद्धि हुई है।
75. आयात मात्रा और बाजार हिस्से के संबंध में, वास्तविक स्थिति निम्नलिखित तालिका में संक्षेप में दी गई है:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि - क
संबद्ध देश	मी. टन	30,917	26,886	36,009	57,450
कोरिया	मी. टन	18,599	15,124	25,252	34,725
इजराइल	मी. टन	6,958	6,878	7,048	4,521
ताइवान	मी. टन	5,361	4,883	3,708	18,204
वे अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है	मी. टन	21,822	20,437	17,891	8,550
अन्य देश	मी. टन	2,056	4,763	25,219	39,056
कुल आयात	मी. टन	54,796	52,086	79,118	105,056
<b>के संबंध में संबद्ध आयात</b>					
कुल आयात	%	56.42%	51.62%	45.51%	54.68%
भारतीय उत्पादन	%	12.10%	9.14%	11.73%	19.14%
मांग	%	11.01%	8.70%	10.83%	16.21%

76. यह देखा जाता है कि:

- संबद्ध देशों से आयात आधार वर्ष से बढ़े हैं।
- संबद्ध आयात भी देश में उत्पादन और खपत की तुलना में बढ़े हैं।
- तथापि, जांच की अवधि के दौरान किसी पाटनरोधी शुल्क के अध्यधीन न होने वाले देशों से आयातों में लगभग 2,000 प्रतिशत की मुख्य वृद्धि हुई है।
- कोरिया गणराज्य (संबद्ध देश) से लगभग 85 प्रतिशत आयात और भारत के कुल आयात का लगभग 65 प्रतिशत जांच की अवधि के दौरान किसी पाटनरोधी शुल्क के बिना रहा। यह इस बात पर विचार करते हैं कि एकयुंग कोरिया से आयातों पर कोई पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया गया है।

#### च.4.3 पाटित आयातों का कीमत प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

##### (क) कीमत कटौती

77. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत के साथ तुलना करने पर पाटित आयातों से काफी कीमत कटौती हुई है अथवा क्या इन आयातों का प्रभाव काफी मात्रा तक कीमतों का न्यूनीकरण करने अथवा कीमत वृद्धि रोकने के लिए अन्यथा है, जो अन्यथा काफी मात्रा तक हुई होती।
78. इस संबंध में, उत्पाद के पहुँच मूल्य तथा व्यापार के उसी स्तर पर सभी छूटों तथा करों के निवल घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत के बीच तुलना की गई है। घरेलू उद्योग की कीमत कारखानागत स्तर पर निर्धारित की गई थी। प्राधिकारी ने संबद्ध सामानों के लिए घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत के साथ आयातों की पहुँच कीमत की तुलना की है।

विवरण	यूनिट	जांच की अवधि - क
निवल बिक्री वसूली	रु./मी. टन	***
<b>कोरिया</b>		
पहुँच कीमत	रु./मी. टन	***
कीमत कटौती	रु./मी. टन	***
कीमत कटौती%	%	***
रेंज		0-5%
<b>इजराइल</b>		

विवरण	यूनिट	जांच की अवधि - क
पहुँच कीमत	रु./मी. टन	***
कीमत कटौती	रु./मी. टन	***
कीमत कटौती%	%	***
रेंज		0-5%
<b>ताइवान</b>		
पहुँच कीमत	रु./मी. टन	***
कीमत कटौती	रु./मी. टन	***
कीमत कटौती%	%	***
रेंज		0-5%

79. यह देखा जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की निवल बिक्री से कम है। संबद्ध देशों से आयात जांच की अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत की कटौती कर रहे हैं। कीमत कटौती सकारात्मक है।

**(ख) पाटित आयातों का कीमत न्यूनीकरण/ह्रासमान प्रभाव**

80. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटित आयात घरेलू कीमतों का न्यूनीकरण अथवा ह्रास कर रहे हैं और क्या ऐसे आयातों का प्रभाव काफी मात्रा तक कीमतों का न्यूनीकरण करने अथवा कीमत वृद्धि रोकने के लिए है, जो अन्यथा काफी मात्रा तक हुई होती, प्राधिकारी ने क्षति की अवधि में लागतों और कीमतों में परिवर्तनों पर विचार किया। यह स्थिति निम्नलिखित तालिका में दर्शाई गई है:

विवरण	यूनिट	2014-15	2015-16	2016-17	जांच की अवधि - क
बिक्रियों की लागत	रु./किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	75	56	58
बिक्री कीमत	रु./किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	76	60	69
आयातों की पहुँच कीमत	रु./किग्रा	96,007	81,193	58,333	63,529
प्रवृत्ति		100	85	61	66
<b>पिछले वर्ष में बदलें</b>					
बिक्रियों की लागत	रु./किग्रा		(***)	(***)	***
बिक्री कीमत	रु./किग्रा		(***)	(***)	***
आयातों की पहुँच कीमत	रु./किग्रा		-14,814	-22,860	5,196

81. यह देखा जाता है कि जब उत्पादन लागत \*\*\* रुपए तक कम हुई तो विदेशी उत्पादकों ने 14,814 रुपए तक ही अपनी कीमतें कम कीं और इस प्रकार यह दर्शाता है कि निर्यातकों ने लागतों में गिरावट का लाभ लिया। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने लगभग लागत में कमी की मात्रा तक अपनी कीमतें कम कीं। उसके बाद, विदेशी उत्पादकों ने उत्पादन लागत में गिरावट से कहीं अधिक तक अपनी कीमतें कम कीं। जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग और निर्यातकों, दोनों ने अपनी कीमतें उत्पादन लागत में वृद्धि से कहीं अधिक बढ़ाई। यह भी देखा जाता है कि जब कि उत्पादन लागत और बिक्री कीमत दोनों में गिरावट आई, उत्पादन लागत में गिरावट बिक्री कीमतों में गिरावट से अधिक थी। आयातों से घरेलू बाजार में कीमतों पर कीमत न्यूनीकरण अथवा ह्रासमान प्रभाव नहीं पड़ा। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान आयात कीमत घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से अधिक थी। इस प्रकार, घरेलू उद्योग को जांच की अवधि में लाभ कमाने की स्थिति बन गई, अन्यथा यद्यपि पाटनरोधी शुल्क 24 दिसंबर,

2012 से लगाया गया था, तथापि, घरेलू उद्योग को 2014-15 तक हानियां हो रही थीं और उसने 2015-16 से ही लाभ कमाना शुरू किया।

**(ग) पाटित आयातों का कम कीमत पर बिक्री प्रभाव**

82. पाटित आयातों के कम कीमत पर बिक्री प्रभाव की जांच करने के लिए आयातों के पहुँच मूल्य की तुलना निर्धारित क्षति रहित कीमत से की गई है। विश्लेषण यह दर्शाता है कि जांच की अवधि के दौरान संबद्ध आयातों का पहुँच मूल्य क्षति रहित कीमत से अधिक था और इससे कम कीमत पर कोई बिक्री नहीं हुई।

विवरण	यूओएम	कोरिया	इजराइल	ताइवान
क्षति रहित कीमत	रु./मी. टन	***	***	***
पहुँच कीमत	रु./मी. टन	***	***	***
क्षति मार्जिन	रु./मी. टन	(***)	(***)	(***)
क्षति मार्जिन	%	(***)	(***)	(***)
क्षति मार्जिन	(रैंज)	-(10-0)	-(10-0)	-(10-0)

**च.4.4 घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक मानदंडों की जांच**

83. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में उन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। इन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में नियमावली में यह भी उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक कारकों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा।
84. तदनुसार, घरेलू उद्योग के विभिन्न आर्थिक मानदंडों पर निम्नलिखित रूप में विश्लेषण किया जाता है:

**(क) क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री**

85. घरेलू उद्योग का उत्पादन, बिक्री, क्षमता और क्षमता उपयोग निम्नलिखित रूप में रहा:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि - क
क्षमता	मी. टन	281,110	306,110	306,110	306,110
प्रवृत्ति		100	109	109	109
उत्पादन	मी. टन	221,819	259,281	272,614	266,626
प्रवृत्ति		100	117	123	120
क्षमता उपयोग	मी. टन	78.91%	84.70%	89.06%	87.10%
प्रवृत्ति		100	107	113	110
घरेलू बिक्री (कैप्टिव को छोड़कर)	मी. टन	192,261	222,206	218,824	215,847
प्रवृत्ति		100	116	114	112
मांग (कैप्टिव को छोड़कर)	मी. टन	280,744	309,157	332,412	354,382
प्रवृत्ति		100	110	118	126



86. यह देखा जाता है कि:

(क) घरेलू उद्योग ने लगभग 9 प्रतिशत तक क्षमता बढ़ाई है।

(ख) घरेलू उद्योग का उत्पादन क्षमता उपयोग और बिक्री 2015-16 तक सुधरा है और जांच की अवधि में इसमें आंशिक गिरावट आई है।

(ग) समग्र आधार पर जबकि उत्पादन 20 प्रतिशत तक बढ़ा, घरेलू बिक्री 12 प्रतिशत तक बढ़ी और क्षमता उपयोग 10 प्रतिशत तक बढ़ा।

**(ख) मांग में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा**

87. घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा निम्नलिखित रहा:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि - क
घरेलू उद्योग	%	68.48%	71.88%	65.83%	60.91%
समर्थक कंपनी सहित अन्य कंपनियां	%	12.00%	11.28%	10.37%	9.45%
संबद्ध देश	%	11.01%	8.70%	10.83%	16.21%
वे देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है	%	7.77%	6.61%	5.38%	2.41%
अन्य देश	%	0.73%	1.54%	7.59%	11.02%
कुल	%	100.00%	100.00%	100.00%	100.00%

88. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में क्षति की अवधि में गिरावट आई है, जबकि संबद्ध आयातों का बाजार हिस्सा मुख्य रूप से कोई पाटनरोधी शुल्क न लगने वाले अन्य देशों से आयातों में काफी वृद्धि के कारण बढ़ा है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निर्यात काफी अधिक हैं। इस प्रकार, यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग ने बाजार में संबद्ध और गैर-संबद्ध देशों से सतत आयातों के मद्देनजर बाजार हिस्सा खोया है।

**(ग) लाभ/हानि, नकद प्रवाह, नियोजित पूंजी पर आय**

89. लाभ, निवेश पर आय और नकद लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन निम्नलिखित है:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि - क
बिक्री की लागत	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	75	56	58
बिक्री कीमत	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	76	60	69
लाभ/हानि	रु./मी. टन	(***)	(***)	***	***
प्रवृत्ति		(100)	(48)	62	299
नकद लाभ	रु./मी. टन	(***)	(***)	***	***
प्रवृत्ति		(100)	(36)	155	578
व्याज पूर्व लाभ	रु./मी. टन	(***)	***	***	***
प्रवृत्ति		(100)	883	3,067	9,211
नियोजित पूंजी पर आय	%	(***)	***	***	***
नियोजित पूंजी पर आय	%	(0-5)%	0-10%	15-25%	35-45%
प्रवृत्ति		(100)	1,242	3,928	8,011

90. यह देखा जाता है कि:

(क) घरेलू उद्योग को पहले वित्तीय हानियां हो रही थीं। घरेलू उद्योग ने 2015-16 से लाभ कमाना शुरू किया।

(ख) घरेलू उद्योग की लाभप्रदता क्षति की अवधि में काफी सुधरी। घरेलू उद्योग जांच की अवधि में अच्छा लाभ कमा रहा था।

(ग) नकद लाभ और निवेश पर आय में भी सुधार हुआ है। घरेलू उद्योग ने जांच की अवधि में उचित/पर्याप्त लाभ कमाना शुरू किया है।

(घ) घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया कि यदि उसका पिछले एक दशक में इतिहास देखा जाए तो घरेलू उद्योग ने निवेश पर उपयुक्त आय अर्जित नहीं की है, जैसा कि पिछले एक दशक में निवेश पर भारित औसत आय से सिद्ध है। घरेलू उद्योग ने यह भी अनुरोध किया है कि अच्छे लाभ की वर्तमान स्थिति एक अस्थायी व्यापारिक स्थिति है (पैट्रोलियम आधारित कच्ची सामग्री ओएक्स की कीमतों में गिरावट के कारण जो विचाराधीन उत्पाद की कुल लागत का 83 प्रतिशत है, एक अस्थायी कमी है)।

91. प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को वर्तमान जांच की अवधि में कोई कीमत संबंधी क्षति नहीं हुई है।

(घ) रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता

92. रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता के संबंध में वास्तविक स्थिति निम्नलिखित है:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि - क
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	89	89	98
मजदूरी	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	119	154
प्रति दिन उत्पादकता	मी. टन/दिन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	117	123	120
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी. टन/सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	131	138	123

93. यह देखा जाता है कि रोजगार स्तर में 2014-15 में गिरावट आई और उसके बाद वृद्धि हुई। तथापि, समग्र आधार पर घरेलू उद्योग में रोजगार में थोड़ी-सी गिरावट आई। मजदूरी और उत्पादकता क्षति की अवधि में सुधार दर्शाते हैं।

(ङ) मालसूची

94. मालसूची के संबंध में निष्पादन निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि - क
औसत मालसूची	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	71	50	56

95. घरेलू उद्योग की औसत मालसूची में 2015-16 तक गिरावट आई और फिर जांच की अवधि में वृद्धि हुई।

(च) नए निवेश जुटाने की क्षमता

96. घरेलू उद्योग ने अपनी योजनागत क्षमता वृद्धि के संबंध में सूचित किया है जिसमें प्रतिवर्द्ध नए निवेश शामिल हैं। उन्होंने यह तर्क दिया है कि पाटनरोधी शुल्क बंद करने से घरेलू उद्योग द्वारा किया जा रहा विस्तार प्रभावित होने की संभावना है।

97. इस संबंध में प्राधिकारी घरेलू उद्योग के तर्कों को नोट करते हैं।

**(छ) वृद्धि**

98. घरेलू उद्योग के निष्पादन का समग्र विश्लेषण मात्रा के संदर्भ में तथा बिक्री, उत्पादन क्षमता उपयोग, लाभ और निवेश पर आय जैसे कीमतों मानदंडों के संदर्भ में जांच की अवधि में सकारात्मक वृद्धि दर्शाता है। घरेलू उद्योग की बाजार हिस्से में वृद्धि नकारात्मक है।

विवरण	यूएम	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि - क
उत्पादन	%	-	16.89	5.14	1.07
घरेलू बिक्री मात्रा	%	-	15.58	(1.52)	0.57
प्रति यूनिट लाभ/हानि	%	-	(51.94)	229.29	37.51
निवेश पर आय	%	-	6.88	13.78	20.95
बाजार हिस्सा	%	-	3.39	(6.05)	(4.92)

**(ज) पाटन की मात्रा और पाटन मार्जिन**

99. संबद्ध आयातों के संबंध में निर्धारित पाटन मार्जिन मैसर्स एकयुंग कोरिया के मामले को छोड़कर न्यूनतम स्तर से अधिक है।

**(i) कीमत प्रभावित करने वाले कारक**

100. संबद्ध देशों और अन्य देशों से पाटित आयातों की मात्रा और कीमतों में प्रवृत्तियों की जांच तथा घरेलू उद्योग की कीमतें यह दर्शाती हैं कि संबद्ध देशों और अन्य देशों से पाटित आयातों की काफी मात्रा की मौजूदगी है और घरेलू उद्योग की कीमतें आयात कीमतों से प्रभावित हैं। घरेलू उद्योग ने इष्टतम से कम कीमतें लगाई क्योंकि निर्यातकों ने असामान्य रूप से कम कीमतें और विलोमतः लगाई।

**(झ) क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन**

101. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III के अनुसार, प्राधिकारी द्वारा निर्धारित किए गए अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध सामानों की क्षति रहित कीमत की तुलना जांच की अवधि के दौरान क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए संबद्ध देश से निर्यातों के पहुँच मूल्य से की गई है और इस प्रकार निकाला गया क्षति मार्जिन निम्नलिखित है:

**क्षति मार्जिन**

देश	उत्पादक	निर्यातक	एनआई पी अमेरिकी डॉलर/मी. टन	पहुँच कीमत अमेरिकी डॉलर/मी. टन	क्षति मार्जिन अमेरिकी डॉलर/मी. टन	क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन रेंज%
कोरिया	एकयुंग पेट्रोकेमिकल कं. लि.	<ul style="list-style-type: none"> <li>वूरी पीएंड सी कारपोरेशन,</li> <li>हुंडई कारपोरेशन,</li> <li>हुमाडे कारपोरेशन,</li> <li>कंको मार्केटिंग इंक.,</li> <li>उबसको कारपोरेशन</li> </ul>	***	***	(***)	(***)	-(0-10)
कोरिया	एल. जी. केम लि.	एल. जी. केम लि.	***	***	(***)	(***)	-(10-0)
कोरिया	अन्य सभी	अन्य सभी	***	***	(***)	(***)	-(10-0)

देश	उत्पादक	निर्यातक	एनआई पी अमेरिकी डॉलर/मी. टन	पहुँच कीमत अमेरिकी डॉलर/मी. टन	क्षति मार्जिन अमेरिकी डॉलर/मी. टन	क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन रेंज%
इजराइल	गदिव पैट्रोकेमिकल्स इंडस्ट्रीज लि.	गदिव पैट्रोकेमिकल्स इंडस्ट्रीज लि.	***	***	(***)	(***)	-(10-0)
इजराइल	अन्य सभी	अन्य सभी	***	***	(***)	(***)	-(10-0)
ताइवान	सभी उत्पादक	सभी उत्पादक	***	***	(***)	(***)	-(10-0)

#### ज. पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा बार-बार होने की संभावना

102. यह एक निर्णायक समीक्षा जांच है और इस जांच का जोर वर्तमान में क्षति न होने के बावजूद यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की अनुमति दी जाती है तो सतत पाटन और परिणामस्वरूप क्षति के संभावित परिदृश्य की जांच करने पर है।

#### ज.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

103. पाटन के जारी रहने की संभावना और परिणामस्वरूप क्षति बार-बार होने के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- (क) उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग, लाभ, नकद लाभ और निवेश पर आय जैसे विभिन्न आर्थिक मानदंडों के संदर्भ में घरेलू उद्योग के निष्पादन ने पाटनरोधी शुल्क के संरक्षण में सुधार दर्शाया है।
- (ख) तथापि, पाटन के बार-बार होने और परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति होने की स्पष्ट संभावना है, जैसा कि अधिशेष क्षमताओं की मौजूदगी और संबद्ध देशों में उत्पादकों की निर्यातोन्मुखता से सिद्ध है।
- (ग) पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद पाटित कीमतों पर संबद्ध देशों से भारत में पाटित आयातों की काफी मात्रा की मौजूदगी खुद ही सतत एवं गहन पाटन तथा परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति की संभावना का संकेत है।
- (घ) क्षति न होने की स्थिति यह निष्कर्ष निकालने के लिए पूर्णतः अपर्याप्त है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की आवश्यकता नहीं है।
- (ङ) प्राधिकारी को ऐसे मानदंडों की जांच करने की आवश्यकता है, जैसे कि क्या कोई अतिरिक्त निर्यात लेने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजारों में पर्याप्त रूप से बढ़े हुए पाटित निर्यातों की संभावना दर्शाते हुए निर्यातक की क्षमता में पर्याप्त काफी वृद्धि, मुक्त रूप से निपटान योग्य, अथवा आसन्न वृद्धि है।
- (च) वर्तमान पाटन न होने की स्थिति का अर्थ यह नहीं है कि पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में पाटन की संभावना नहीं है। क्षति न होना यह निष्कर्ष निकालने के लिए पूर्णतः अपर्याप्त है कि पाटनरोधी शुल्क बढ़ाए जाने की आवश्यकता नहीं है।
- (छ) पूरी क्षति की अवधि में संबद्ध देशों से आयातों के लेन-देन आधार पर विश्लेषण द्वारा लेन-देन संबंधी सकारात्मक पाटन मार्जिन है।
- (ज) संबद्ध देशों में उत्पादकों एवं निर्यातकों का उद्देश्य व्यापक रूप से निर्यात के लिए संबद्ध उत्पाद का उत्पादन करना है, जैसा कि संबद्ध देशों में उत्पादकों के पास घरेलू मांग से कहीं अधिक मुक्त रूप से निपटान योग्य काफी क्षमताओं की मौजूदगी से सिद्ध है। पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में भारत को निर्यात गहन होंगे।

- (झ) भारत संबद्ध देशों में निर्यातकों के लिए आकर्षक बाजार है। यह इस तथ्य से सिद्ध है कि जब पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था तो पाटन जारी रहा है।
- (ञ) अन्य विभिन्न देशों में कोरिया और ताइवान पर पाटनरोधी उपाय लगाए हैं, जो यह सिद्ध करता है कि निर्यातक केवल निर्यातोन्मुख नहीं हैं, इसकी बजाए वे पाटन-उन्मुख हैं, जैसा कि विगत में पाकिस्तान, चीन और तुर्की द्वारा लगाए गए पाटनरोधी शुल्कों से सिद्ध है।
- (ट) कोरिया/ताइवान से फिथेलिक एनहाइड्राइड के आयातों पर चीन, तुर्की और पाकिस्तान द्वारा पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने तथा इस प्रकार से शुल्कों के लगाए जाने से प्रभावित बदलती हुई मात्राएं स्पष्ट रूप से वर्तमान पाटनरोधी शुल्कों को हटाए जाने की स्थिति में पाटन और क्षति की संभावना को दर्शाते हैं।
- (ठ) पाकिस्तान ने पूर्व में कोरिया और ताइवान से आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाया था। कोरिया से पाकिस्तान और चीन तथा ताइवान से पाकिस्तान को निर्यात पाटनरोधी शुल्क हटाए जाते ही बढ़े।
- (ड) तुर्की ने हाल ही में कोरिया से संबद्ध सामानों के आयातों पर अप्रैल, 2016 में सीआईएफ के 8.44 प्रतिशत की दर से पाटनरोधी शुल्क लगाया है। कोरिया से तुर्की को निर्यात मात्रा तुर्की द्वारा पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद कम हुई है।
- (ढ) इसके अतिरिक्त, अर्जेंटीना ने कोरिया से संबद्ध आयातों के विरुद्ध अप्रैल, 2017 में जांचें शुरू की हैं। कोरिया से अर्जेंटीना को निर्यातों में यह जांच शुरू करने के परिणामस्वरूप गिरावट आई है।
- (ण) संबद्ध देशों को पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के परिणामस्वरूप विभिन्न देशों में उत्पाद के लिए बाजार की हानि हो रही है। यह कोरिया/ताइवान से पाटनरोधी शुल्क लगाने वाले देशों को निर्यातों में गिरावट की प्रवृत्ति से सिद्ध हो जाता है।
- (त) याचिकाकर्ताओं ने जांच की अवधि में घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त क्षमता उपयोग की दर पर विचार करते हुए कोरिया और ताइवान से निर्यातकों की संभावित वृद्धि के परिकलन किए हैं जो यह दर्शाते हैं कि कोरिया और ताइवान से मात्रा में संभावित प्रतिशत वृद्धि 10 प्रतिशत और 4 प्रतिशत मौजूदा बाजार हिस्से के विरुद्ध क्रमशः 22 प्रतिशत और 9 प्रतिशत है।
- (थ) कोरिया/ताइवान से तीसरे देशों को निर्यातों की काफी मात्रा भारतीय कीमतों से कम कीमतों पर है। यह निर्यात भारत को आ जाएंगे और मौजूदा पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में पाटन के और अधिक गहन होने की संभावना है और जिससे घरेलू उद्योग को क्षति होगी।
- (द) वर्तमान क्षति की अवधि में लेन-देन वार आधार पर कीमत कटौती सकारात्मक है। कीमत कटौती का निर्धारण केवल उन आयात लेन-देनों पर विचार करके किया जाना चाहिए जिनकी आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम हो।
- (ध) घरेलू उद्योग की कीमतों से कम कीमत पर किए गए आयातों पर विचार करते हुए यह सिद्ध है कि घरेलू उद्योग उस स्तर तक कीमतें कम करने के लिए मजबूर हो जाएगा जहां घरेलू उद्योग को एक बार फिर लाभ में काफी गिरावट होनी शुरू हो जाएगी। पाटनरोधी शुल्क बंद करने से बाजार में उत्पाद की घरेलू उद्योग की कीमतों पर काफी हासमान प्रभाव पड़ेगा।
- (न) पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में पाटन गहन होगा जिससे घरेलू उद्योग पाटित आयातों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने के लिए अपनी बिक्री कीमत कम करने के लिए मजबूर हो जाएगा, बिक्री लागत से भी कम पर वे कीमतें चली जाएंगी; जिससे कीमत संबंधी भारी क्षति होगी।
- (प) क्षति की अवधि में काफी पाटित एवं क्षतिकारक मात्रा यह दर्शाती है कि सामान्य मूल्य से नीचे कम कीमत वाले आयात और क्षति रहित कीमत मौजूदा पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में होने की संभावना है।
- (फ) इस उत्पाद का रक्षोपाय शुल्क और पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने का पिछला इतिहास है। जैसे ही शुल्क हटाए गए हैं, संबद्ध देशों से आयात बढ़े हैं।

- (ब) प्राधिकारी के लिए पाटन और क्षति के बीच कारणात्मक संपर्क की जांच करने अथवा स्थापित करने की आवश्यकता नहीं है। जिस कारक पर विचार किया जाना है वह पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में क्षति का बार-बार होना है।
- (भ) निर्यातकों को उनकी सूचना के आधार पर यह सिद्ध करना चाहिए कि पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में पाटन जारी रहने, गहन होने अथवा बार-बार होने की संभावना नहीं है। यह सूचना निर्धारित प्रपत्र का ही भाग नहीं है (निर्यातक प्रश्नावली भाग-2) बल्कि वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में अत्यधिक व्यावहारिक भी है।

## ज.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

104. जांच की अवधि के दौरान पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा बार-बार होने की संभावना के संबंध में विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा संगत माने गए अनुरोध निम्नलिखित हैं:

- (क) मूल जांच में निर्धारित पाटन मार्जिन के आधार पर वास्तविक क्षति बार-बार होना सिद्ध नहीं किया जा सकता है। घरेलू उद्योग को यह हल करने की अपेक्षा है कि क्या मौजूदा पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने से घरेलू उद्योग को बार-बार क्षति होगी।
- (ख) कोरिया और ताइवान ने अधिशेष क्षमता और उत्पादन से संबंधित आंकड़े यह नहीं सुझाते कि ये अधिशेष क्षमताएं भारत की ओर भेजी जाएंगी अथवा घरेलू उद्योग को इनसे क्षति होने की संभावना है।
- (ग) दूसरे देशों में की जा रही जांचों के कारण पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी इस तथ्य से किसी भी तरह से संबंधित नहीं है कि अन्य देशों को निर्यात भारत की ओर भेजे जाएंगे क्योंकि ये शुल्क कुछ ही समय से लागू हैं और संबद्ध देशों से भारत को आयात उस कीमत पर थे जो घरेलू उद्योग को क्षति रहित थी।

## ज.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

105. प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-II(vii) के अनुसार, वास्तविक क्षति के खतरे से संबंधित मानदंडों पर विचार करते हुए क्षति के जारी रहने अथवा बार-बार होने की संभावना की जांच की है। नियमावली के अनुबंध-II के खंड (vii) में निम्नलिखित प्रावधान है।

**(क) पर्याप्त रूप से बढ़े आयात की संभावना दर्शाते हुए भारत में पाटित आयातों की वृद्धि की पर्याप्त दर**

106. वर्तमान क्षति की अवधि में आयातों की मात्रा निम्नलिखित थी:

	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि - क
कोरिया गणराज्य	मी. टन	18,599	15,124	25,252	34,725
ताइवान	मी. टन	5,361	4,883	3,708	18,204
इजराइल	मी. टन	6,958	6,878	7,048	4,521
संबद्ध देश	मी. टन	30,917	26,886	36,009	57,450
सूचीबद्ध		100	87	116	186

\*जांच की अवधि: अप्रैल, 2016 to सितंबर, 2017

107. यह देखा जाता है कि संबद्ध देशों से आयातों में पाटनरोधी शुल्क जारी रहने की स्थिति में भी आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में काफी वृद्धि हुई है। तथापि, यह भी नोट किया जाता है कि एकयुंग कोरिया द्वारा निर्यातित, संबद्ध देशों से इस आयात का काफी अनुपात पाटनरोधी शुल्क से मुक्त होकर आ रहा है।

**(ख) कोई अतिरिक्त निर्यात लेने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए, भारतीय बाजारों में बढ़े हुए पर्याप्त पाटित निर्यातों की संभावना दर्शाते हुए निर्यातक की क्षमता में पर्याप्त स्वतंत्र रूप से निपटाने योग्य अथवा आसन्न, पर्याप्त वृद्धि।**

108. प्राधिकारी ने विदेशी उत्पादकों के पास क्षमताओं के स्तर, वर्तमान में उसके उपयोग और क्षमताओं में संभावित वृद्धि की जांच निर्यातकों के पास वर्तमान और संभावित रूप से मुक्त रूप से निपटान योग्य उत्पादन क्षमताएं सुनिश्चित करने के लिए की हैं।
109. प्राधिकारी ने भारतीय बाजार में निपटान योग्य क्षमताओं को ले जाने की संभावना निर्धारित करने के लिए निर्यातकों के पास मौजूदा अधिशेष क्षमताओं और क्षमता अभिवृद्धि, यदि कोई है, का मूल्यांकन किया। घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि संबद्ध देशों में उत्पादकों के पास घरेलू मांग से कहीं अधिक भारी क्षमताएं हैं। घरेलू उद्योग ने संबद्ध देशों में निर्यातकों के पास उपलब्ध क्षमताएं दर्शाते हुए और घरेलू मांग को पूरा करने के लिए मुक्त रूप से निपटान योग्य क्षमताओं की मौजूदगी का साक्ष्य दिया है जो घरेलू उद्योग द्वारा दी गई सूचना निम्नलिखित है:

क्रम सं.	विवरण	यूओएम	दक्षिण कोरिया	ताइवान	इजराइल	संबद्ध देश
1	क्षमता	मी. टन	4,20,000	2,80,000	33,000	7,33,000
2	उत्पादन	मी. टन	3,22,300	2,26,250	30,300	5,78,850
3	क्षमता उपयोग	%	76.74%	80.80%	91.82%	78.97%
4	अधिशेष क्षमता	मी. टन	97,700	53,750	2,700	1,54,150
5	खपत	मी. टन	1,80,650	1,21,300	2,450	3,04,400
6	अधिशेष उत्पादन	मी. टन	1,41,650	1,04,950	27,850	2,74,450
7	निर्यात के लिए उपलब्धता	मी. टन	2,39,350	1,58,700	30,550	4,28,600

110. रिकार्ड में उपलब्ध सूचना से यह नोट किया जाता है कि कोरिया और ताइवान में उत्पादकों के पास उनके गृह बाजार और वर्तमान निर्यातों में खपत से कहीं अधिक अधिशेष क्षमता है।
111. उत्तरदाता निर्यातकों से मांगी गई सूचना यह दर्शाती है कि इन उत्पादकों के पास काफी उत्पादन क्षमताएं हैं। वे कई अन्य देशों को फिथेलिक एनहाइड्राइड का निर्यात भी कर रहे हैं।

**(ग) क्या आयात उन कीमतों पर आ रहे हैं जिनका घरेलू कीमतों पर काफी न्यूनीकरण अथवा ह्रासमान प्रभाव पड़ेगा और जिनसे अधिक आयातों के लिए मांग में वृद्धि की संभावना होगी।**

112. रिकार्ड में उपलब्ध सूचना घरेलू उद्योग की आयात कीमत, बिक्री कीमत और उत्पादन लागत के संबंध में निम्नलिखित दर्शाती है:

देश	यूनिट	कोरिया	ताइवान	इजराइल
निवल बिक्री वसूली	रु./मी. टन	***	***	***
पहुँच कीमत				
भारत को	रु./मी. टन	***	***	***
संबद्ध देशों को				
• उच्च कीमत	रु./मी. टन	***	***	उपलब्ध नहीं
• निम्न कीमत	रु./मी. टन	***	***	उपलब्ध नहीं
उत्पादन की लागत	रु./मी. टन	***	***	***
एनआईपी	रु./मी. टन	***	***	***
निर्यातों की मात्रा				
भारत को	मी. टन	***	***	***
संबद्ध देशों को				
• उच्च कीमत	मी. टन	***	***	***

देश	यूनिट	कोरिया	ताइवान	इजराइल
• निम्न कीमत	मी. टन	***	***	***

113. भारत में वर्तमान पहुँच मूल्य पर जांच की अवधि के दौरान सकारात्मक कीमत कटौती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोरिया/ताइवान से तीसरे देशों को कुछ निर्यात भारतीय कीमतों से कम कीमतों पर हैं।

**(क) जांच की जा रही वस्तु की मालसूची**

114. उत्तरदाता निर्यातकों की मालसूची कम है। प्रस्तुत निर्यातक प्रश्नावली में दिए गए व्यौरों के अनुसार मालसूची में आधार वर्ष तथा पूर्व वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में गिरावट आई है, यह नोट किया जाता है कि यह उत्पाद मांग संचालित है। अतः कम मालसूची आवश्यक रूप से कम निर्यात योग्यता से सह-संबद्ध नहीं होगी।

**अन्य विभिन्न क्षेत्राधिकारियों द्वारा लगाए गए पाटनरोधी उपायों का प्रभाव**

115. घरेलू उद्योग द्वारा रिकार्ड में लाई गई सूचना और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा खंड की गई सूचना यह दर्शाती है कि अन्य देशों द्वारा कोरिया/ताइवान से संबद्ध सामानों के आयातों पर विगत में पाटनरोधी शुल्क लगाए गए हैं। निम्नलिखित तालिका कोरिया और ताइवान से संबद्ध सामानों के आयातों के विरुद्ध अन्य देशों द्वारा लगाए गए पाटनरोधी शुल्कों की स्थिति दर्शाती है:

क्रम सं.	वे देश पर जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है	शुल्क लगाने वाले देश	से प्रभावी	तक प्रभावी	दर (एडीवी/डीएम)	स्थिति
1	कोरिया	पाकिस्तान	30.09.2010	28.03.2017	7.36%	हटाया गया
2	ताइवान	पाकिस्तान	30.09.2010	28.03.2017	27.38%	हटाया गया
3	कोरिया	चीन	07.01.2003	31.08.2014	1.4-13%	हटाया गया
4	कोरिया	तुर्की	31.03.2017		8.44%	लागू
5	कोरिया	अर्जेंटीना	मार्च, 2017 में शुरू		28.57%	अभी तक शुल्क नहीं लगाया गया

116. विचाराधीन उत्पाद के आयातों पर अनेक उपायों के मद्देनजर प्राधिकारी ने निर्यातक देशों के व्यापार पैटर्न की उस समय जांच की जब व्यापार रक्षोपाय आयातक देशों द्वारा लगाए गए थे। प्राधिकारी के रिकार्ड में रखी गई सूचना यह दर्शाती है कि इन देशों को कोरिया और ताइवान से निर्यातों में उन देशों में पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद गिरावट आई है और उन देशों में पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने के बाद वृद्धि हुई है। यही प्रवृत्ति भारत के मामले में भी देखी जा सकती है जहां व्यापार सुधारात्मक उपाय 2008-09 से विचाराधीन उत्पाद के आयातों पर लगाए गए हैं। यह क्रमशः नीचे वर्णित है:

(क) 2008-09 में संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा 22,722 मी. टन थी।

(ख) रक्षोपाय शुल्क 29 फरवरी, 2009 से लगाए गए थे और आयात 2009-10 में 18,986 मी. टन तक कम हुए।

(ग) रक्षोपाय शुल्क 28 जनवरी, 2010 को समाप्त हो गया। आयात एक बार फिर बढ़ गए।

(घ) जनवरी-दिसंबर, 2010 में (संबद्ध देशों से आयातों के संबंध में मूल जांच की जांचावधि)। आयात 40,912 मी. टन तक बढ़ गए।

(ङ) संबद्ध देशों से आयात 2010-11 में फिर बढ़कर 43,014 मी. टन हो गए जबकि मूल जांच चल रही थी।

(च) 2011-12 में आयात घटकर 31,167 मी. टन हो गए। रक्षोपाय शुल्क एक बार फिर 17 जनवरी, 2012 को लगाए गए थे।

(छ) 2012-13 में आयात 32,994 मी. टन के थे। इस अवधि में संबद्ध देशों पर पाटनरोधी शुल्क 24 दिसंबर, 2012 को लगाए गए थे; तथापि, रक्षोपाय शुल्क 16 जनवरी, 2013 को समाप्त हो गए।



(ज) जनवरी-दिसंबर, 2013 में (दूसरे संबद्ध देशों – जापान और रूस के विरुद्ध पाटनरोधी जांचों की जांचावधि) संबद्ध देशों से आयात 34,241 मी. टन थे।

(झ) संबद्ध देशों से आयात 2013-14 में घटकर 30,917 मी. टन हो गए और फिर घटकर 2014-15 में 26,886 मी. टन हो गए।

(ञ) संबद्ध देशों से आयात एक बार फिर बढ़कर 2015-16 में 36,009 मी. टन हो गए और वार्षिक आधार पर इस निर्णायक समीक्षा जांच की जांचावधि में 57,450 मी. टन तक हो गए।

#### (ड) भारतीय बाजार में कीमत आकर्षकता

117. निम्नलिखित तालिका से यह नोट किया जाता है कि कोरिया/ताइवान से तीसरे देशों को निर्यातों की काफी मात्रा भारतीय कीमतों से कम कीमतों पर है।

देश	तीसरे देशों को निर्यातों की मात्रा	कीमत आकर्षक मात्रा	भारतीय कीमतों के साथ कीमत अंतर	कीमत आकर्षक मात्राओं का हिस्सा
यूओएम	मी. टन	मी. टन	अमेरिकी डॉलर/मी. टन	%
कोरिया गणराज्य	210,096	105,094	32.46	50.02%
ताइवान	112,277	32,333	31.53	28.80%

\*कोरिया और ताइवान से विश्व को निर्यात (भारत को छोड़कर)

#### झ. कारणात्मक संपर्क और अन्य कारक

118. धारा 9क(5) के तहत, प्राधिकारी को पाटन तथा क्षति की संभावना और इस बात पर ध्यान न रखते हुए शुल्क जारी रखने की आवश्यकता की जांच करना अपेक्षित है कि क्या समीक्षा जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के कोई आयात हुए हैं अथवा नहीं। यह जांच की गई कि क्या पाटनरोधी नियमावली के तहत सूचीबद्ध अन्य मानदंडों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है। यह निम्नलिखित रूप में नोट किया जाता है:

##### (i) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा और कीमत

119. विभिन्न देशों से आयात आंकड़ों की जांच यह दर्शाती है कि अन्य देशों से भी विचाराधीन उत्पाद आयात हैं। तथापि, संबद्ध देशों तथा अन्य स्रोतों से आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।

##### (ii) मांग में संकुचन तथा/अथवा खपत के पैटर्न में परिवर्तन

120. घरेलू बाजार में उत्पाद की मांग क्षति की अवधि में वृद्धि दर्शाती है। अतः संबद्ध सामानों के लिए मांग से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।

##### (iii) व्यापार प्रतिबंधात्मक परिपाटियां और विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

121. जांच से यह बात सामने आई है कि प्रतिस्पर्धा की स्थितियों अथवा व्यापार प्रतिबंधात्मक परिपाटियों से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।

##### (iv) प्रौद्योगिकी में विकास

122. की गई जांच प्रौद्योगिकी में कोई ऐसा महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं दर्शाती कि जिससे घरेलू उद्योग का निष्पादन प्रभावित हो सके।

##### (v) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन

123. याचिकाकर्ताओं ने क्षति की अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद का निर्यात किया है।

##### (vi) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

124. घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार आया है।

**ब. प्रकटन पश्चात टिप्पणियां**

125. प्राधिकारी द्वारा जारी प्रकटन विवरण पर विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों से टिप्पणियां प्राप्त हो रही हैं। यह अनुरोध अधिकतर जांच की अवधि के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा पूर्व में किए गए अनुरोधों की पुनरावृत्ति है और इसीलिए इन्हें यहां दोहराया नहीं गया है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए नए अनुरोधों की निम्नलिखित रूप में जांच की गई है:

**ब.2 घरेलू उद्योग द्वारा अनुरोध**

126. घरेलू उद्योग द्वारा प्रकटन पश्चात किए गए अनुरोध निम्नलिखित हैं:

- (क) याचिकाकर्ताओं ने गदिव पैट्रोकेमिकल्स इंडस्ट्रीज लि., इजराइल सहित ताइवान और इजराइल से उत्पादकों/निर्यातकों के सामान्य मूल्य के परिकलन और क्षति रहित कीमत परिकलनों के ब्यौरे प्रकट नहीं किए हैं।
- (ख) अत्यधिक दक्ष घरेलू उद्योग को भी सामान्य मूल्य के निर्माण के लिए अपनाया जाए तो वह उन सर्वाधिक दक्ष घरेलू उद्योग की वास्तविक लागतों पर होना चाहिए न कि उन सर्वाधिक दक्ष घरेलू उद्योग की मानक लागतों (क्षति रहित लागत) पर।
- (ग) एकयुंग पैट्रोकेमिकल लि., कोरिया के संबंध में पाटन मार्जिन नकारात्मक है। प्राधिकारी कृपया परिकलनों को दोबारा देखें क्योंकि कोरिया से भारी आयात एकयुंग से है और याचिकाकर्ताओं को पूरा विश्वास है कि निर्यातक संबद्ध सामानों का पाटन कर रहा है।
- (घ) ऐसी स्थिति में जहां निर्दिष्ट प्राधिकारी वर्तमान में क्षति की मौजूदगी नहीं पाते, निर्दिष्ट प्राधिकारी क्षति मार्जिन निर्धारित नहीं करेंगे और उसके बजाए क्षति की संभावना पर आधारित पाटनरोधी शुल्क की उसी मात्रा की सिफारिश ही करेंगे।
- (ङ) केवल सकारात्मक कीमत कटौती और सकारात्मक पाटन मार्जिन वाले आयात लेन-देनों पर ही विचार किया जाना चाहिए। याचिकाकर्ताओं द्वारा अपनाए गए सिद्धांत तथा विश्लेषण को लागू न करने के लिए प्रकटन विवरण में कोई औचित्य नहीं है।
- (च) यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य हैं कि प्राधिकारी द्वारा की गई जांच के अनुसार पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में पाटन एवं क्षति के जारी रहने की संभावना है।
- (छ) घरेलू उद्योग द्वारा पूर्व में किए गए कुछ अनुरोधों पर प्रकटन विवरण में प्राधिकारी द्वारा विचार नहीं किया गया है और न ही प्रकटन विवरण में ऐसा कुछ है कि ये अनुरोध विचार करने योग्य नहीं थे।
- (ज) कोरिया और ताइवान से दूसरे देशों, जहां उपाय लागू हैं, को आयातों के संबंध में पूर्व में प्रस्तुत सूचना यह दर्शाती है कि कोरिया और ताइवान से अन्य उन देशों को निर्यात जहां उपाय लागू हैं, कम हुए हैं। तथापि, भारत के संबंध में उनमें वृद्धि हुई है।
- (झ) इस उत्पाद का रक्षोपाय शुल्क और पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने का पिछला इतिहास है। पूर्व में प्रस्तुत सूचना यह दर्शाती है कि जैसे ही शुल्क हटाए गए हैं, संबद्ध देशों से आयात बढ़े हैं।
- (ञ) निर्यात बाजारों को ध्यान में रखते हुए विदेशी उत्पादकों ने भारी क्षमताएं सृजित की हैं। इसे सिद्ध करने के लिए साक्ष्य प्राधिकारी के रिकार्ड में है। इन देशों से तीसरे देशों को निर्यातों की काफी मात्रा भारतीय कीमतों से कम कीमत पर है। ये निर्यात भारत में आ जाएंगे और मौजूदा पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में और गहन होने की संभावना है तथा घरेलू उद्योग को क्षति होगी।

**ब.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध**

127. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रकटन पश्चात अनुरोध निम्नलिखित हैं:

- (क) आईजीपीएल द्वारा किए गए आयात याचिका/जांच की शुरुआत के समय प्राधिकारी को प्रकट नहीं किए गए थे। अतः घरेलू उद्योग साफ तौर पर निर्दिष्ट प्राधिकारी के पास नहीं आए।

- (ख) आईजीपीएल सामग्री का आयात करने से अन्य प्रयोक्ताओं को प्रतिबंधित करना चाहता है और खुद अपने ग्राहकों की सेवा के लिए अप्रत्यक्ष स्रोतों के माध्यम से सामग्री के आयात में लगे हुए हैं।
- (ग) भारत में भारी मांग-आपूर्ति का अंतराल है जिससे प्रयोक्ता आयातों का सहारा लेने के लिए मजबूर है। प्राधिकारी ने नोट किया है कि घरेलू उद्योग क्षमता विस्तार के बाद मांग को पूरा करने में सक्षम होगा, परंतु इसे हल करने में विफल रहा कि घरेलू उद्योग जांच की अवधि में मांग-आपूर्ति के अंतराल को पूरा नहीं कर पाया और इसीलिए प्राधिकारी को वर्तमान तथ्यों के आधार पर अपने जांच परिणाम का आधार बनाना चाहिए न कि भावी दृष्टिकोण के आधार पर।
- (घ) प्रकटन विवरण में क्षमता विस्तार के संबंध में कोई साक्ष्य उल्लिखित नहीं किया गया है जिस पर विश्वास किया जाए।
- (ङ) उत्पादन और मांग की तुलना में भारत में आयातों में वृद्धि को मांग-आपूर्ति अंतराल की स्थिति के आलोक में देखा जाना चाहिए जो यह दर्शाएगी कि आयातों में कोई वृद्धि देश में आवश्यकता का परिणाम थी जिसे घरेलू उद्योग को और अधिक अनुचित संरक्षण प्रदान करने के लिए आधार के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए।
- (च) निर्णायक समीक्षा के समय क्षमता विस्तार का दावा करना केवल शुल्कों को जारी रखवाने की नीति है जिस पर प्राधिकारी को ध्यान नहीं देना चाहिए।
- (छ) वर्तमान मामले में सकारात्मक कीमत कटौती अवस्थित है और वह घरेलू उद्योग द्वारा वसूल की गई अत्यधिक बिक्री कीमत का ही परिणाम है।
- (ज) कम कीमत पर बिक्री का काफी नकारात्मक स्तर यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग शुल्कों की समाप्ति होने पर भी अपनी एनआईसी से अधिक कीमत प्राप्त करता रहेगा।
- (झ) पैरा 100 में प्राधिकारी द्वारा दिया गया विचार प्रकटन विवरण में वास्तविक चर्चाओं से मेल नहीं खाता। प्राधिकारी को मुख्य रूप से इस पर विचार करना है कि "घरेलू उद्योग ने इष्टतम से कम कीमतें लगाने" क्योंकि निर्यातकों ने असामान्य रूप से कम कीमतें और विलोमतः लगाईं।
- (ञ) कीमत न्यूनीकरण और कम कीमत पर बिक्री न होने का अर्थ है घरेलू उद्योग अपनी पसंद की कीमत प्राप्त कर रहा था।
- (ट) नकारात्मक क्षति मार्जिन का वर्तमान स्तर क्षति की संभावना का अभाव दर्शाता है। डीजीटीआर की परिपाटी कि क्षति मार्जिन नकारात्मक होने की स्थिति में शुल्क जारी नहीं रखा गया है, इस मामले में अपनाई जानी चाहिए।
- (ठ) आयातों में वृद्धि इस संभावना को सिद्ध नहीं करती क्योंकि वह मांग-आपूर्ति अंतराल से संचालित थी जिसमें अपाटित आयात शामिल थे।
- (ड) क्षमता विस्तार के संबंध में आंकड़े मंडित संख्या नहीं है और बहुत ही अधूरे हैं।
- (ढ) यह तालिका निर्यातक के लिए उपलब्ध क्षमता दर्शाती है जिसका अर्थ है कि निर्यात बाजार कई देशों को शामिल करेगा और रिकार्ड में ऐसा कोई कुछ नहीं है जो यह दर्शाए कि शुल्क समाप्त करने के लिए भारत के लिए इंतजार कर रहे पीएएन से संबंधित बेकार क्षमता है।
- (ण) यह उल्लेख करना संगत है कि यह उत्पाद मांग संचालित है जिसका प्राधिकारी ने पैरा 114 में भी उल्लेख किया है।
- (त) कीमतों का वर्तमान स्तर वर्तमान शुल्कों की समाप्ति की स्थिति में पाटन एवं क्षति की कोई संभावना नहीं दर्शाता।
- (थ) चीन जन. गण. और पाकिस्तान द्वारा शुल्क की समाप्ति यह दर्शाती है कि संभावना के दावे आधारहीन हैं।
- (द) निर्यातों के लिए अन्यत्र लाभदायक बाजार है।

- (ध) घरेलू उद्योग की दक्षता आयातों से प्रतिस्पर्द्धा का सामना करने के लिए संस्थापित है और इसीलिए शुल्क की आवश्यकता नहीं है।
- (न) निर्यातक अनुचित व्यापारिक परिपाटी में शामिल नहीं रहे और इसीलिए मूल जांच में नकारात्मक पाटन/क्षति मार्जिन प्रदान किया गया था।
- (प) संभावित रूप से पाटन करने का कोई इरादा नहीं है और इसीलिए अन्य उत्पादकों/ निर्यातकों की अनुचित व्यापारिक परिपाटियों के लिए दंड दिया जाना चाहिए।
- (फ) एकयुग को अंतिम जांच परिणाम में शून्य पाटन मार्जिन/क्षति मार्जिन प्रदान करते हुए गैर प्रतिभागी/सहयोगी निर्यातक/उत्पादक से भिन्न माना जाना चाहिए।
- (ब) निर्दिष्ट प्राधिकारी को वर्तमान जांच के क्षेत्र से मैसर्स एकयुग पेट्रोकेमिकल कं. लि. द्वारा विचाराधीन उत्पाद के आयातों को अलग करना चाहिए क्योंकि वे मूल जांच में पाटन करते हुए नहीं पाए गए हैं।
- (भ) एएएस के तहत किए गए आयात क्षति विश्लेषण के क्षेत्र से अलग किए जाने चाहिए क्योंकि वे घरेलू उत्पादों के साथ प्रतिस्पर्द्धा नहीं करते और इसीलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा उठाया गया कदम गलत है।
- (म) तथापि, जांच की अवधि में 87 प्रतिशत क्षमता उपयोग होने पर भी घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा कुल मांग की तुलना में 61 प्रतिशत है (अर्थात् 2,16,173 मी. टन) जो कि विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन करने की उसकी क्षमता की तुलना में विचाराधीन उत्पाद के बाजार हिस्से का 71 प्रतिशत है। अतः घरेलू उद्योग की जांच की अवधि में घरेलू बाजार में प्रभावी स्थिति है।
- (य) गैर-संबद्ध देशों से आयातों का हिस्सा 190 गुना तक बढ़ा।
- (कक) उत्तरदाता अनुरोध करते हैं कि संबद्ध देशों के लिए कीमत कटौती दर कम है और इसीलिए पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की आवश्यकता नहीं है।
- (खख) सामान्य मूल्य और पाटन का निर्धारण मूल जांच में मासिक आधार पर किया गया है। प्राधिकारी को यहां भी कोई कार्य करना चाहिए।
- (गग) घरेलू उद्योग द्वारा जांच की अवधि के बाद की अवधि के कोई आंकड़े नहीं दिए गए हैं। सार्वजनिक पटल पर उपलब्ध कंपनियों की वार्षिक रिपोर्टें दर्शाती हैं कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में और सुधार हुआ है और मौजूदा शुल्कों को बंद किए जाने पर घरेलू उद्योग को बार-बार क्षति होने की संभावना नहीं है।
- (घघ) सभी आर्थिक मानदंड बाजार हिस्से, जो कि कम हुआ है, के सिवाय सुधार दर्शाते हैं।
- (ङङ) डीजीटीआर सीई, जो 1987 में बनाया गया था, पर 22 प्रतिशत आय लगाकर घरेलू उद्योग को अनुचित संरक्षण दे रहे हैं।

### ब.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

128. प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण के उत्तर में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच की। यद्यपि, कई मुद्दों को पहले ही ऊपर ले लिया गया है, तथापि, शेष पर टिप्पणियां निम्नलिखित हैं:
- (क) जहां तक आईपीजीएल द्वारा आयातों का संबंध है, जांच में यह बात सामने आई है कि आईपीजीएल ने अपने एक ग्राहक के लिए उत्पाद के 378 मी. टन के आयात की व्यवस्था की है (केवल एक लेन-देन है)। 378 मी. टन के आयातों की मात्रा इतनी अधिक नहीं थी कि यह निष्कर्ष निकाला जाए कि आईपीजीएल का इरादा सामग्री का आयात करने से अन्य प्रयोक्ताओं को प्रतिबंधित करने और खुद सामग्री का आयात करने का था।
  - (ख) मांग-आपूर्ति अंतराल के संबंध में जांच में यह बात सामने आई है कि भारत में विचाराधीन उत्पाद के लिए क्षमताएं शुल्कमुक्त स्कीमों के तहत आयातों सहित 3,54,382 मी. टन की स्थापित मांग के विरुद्ध जांच की अवधि में 3,16,110 मी. टन थीं। तथापि, यह नोट किया जाता है कि वर्तमान जांच का प्रयोजन उत्पाद के संभावित पाटन के मुद्दे की जांच करना और उसे हल करना है। देश में मांग और आपूर्ति का अंतराल उत्पाद के पाटन का औचित्य नहीं मिला सकता।

- (ग) इंडियन पेंट एसोसिएशन, इंडियन पेंट एंड कोटिंग एसोसिएशन और इंडियन स्माल स्केल पेंट एसोसिएशन जो कि एक इंडस्ट्री एसोसिएशन है, ने यह तर्क दिया कि शुल्कमुक्त स्कीमों के तहत काफी आयात हैं जिनका आयात लगाए जा रहे पाटनरोधी शुल्क के जारी रहने पर भी जारी रहेगा। प्राधिकारी सहमत हैं।
- (घ) जहां तक इस तर्क का संबंध है कि आयातों में वृद्धि को मांग-आपूर्ति अंतराल के आलोक में देखा जाना चाहिए, यद्यपि प्राधिकारी सहमत हैं कि घरेलू मांग-आपूर्ति अंतराल से आयात होंगे, तथापि, वे यह भी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को बिक्री उत्पादन स्तरों से कम थी और उत्पादन मौजूदा संस्थापित क्षमताओं से कम था।
- (ङ) जहां तक घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी निर्यातक अथवा उपभोक्ता ने यह नहीं दर्शाया है कि घरेलू उद्योग द्वारा लगाई गई कीमतें अंतर्राष्ट्रीय बाजार में विद्यमान कीमतों से अधिक हैं। न ही यह दर्शाने का कोई साक्ष्य है कि घरेलू उद्योग अंतर्राष्ट्रीय बाजार की तुलना में असामान्य रूप से अधिक कीमतें लगा रहा था।
- (च) क्षति मार्जिन की मौजूदगी अथवा अन्यथा है, परंतु मौजूदा पाटनरोधी शुल्क जारी रहने अथवा अन्यथा के संबंध में अपने निष्कर्षों पर पहुँचने में प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया एक कारक है। क्षति मार्जिन के अभाव में रद्द करने के निष्कर्ष पर पहुँचने में स्वचालीनयता नहीं है।
- (छ) प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के आंकड़े दर्शाते हैं कि जांच की अवधि में 26 प्रतिशत आयात और क्षति की अवधि के दौरान 33 प्रतिशत आयात मात्रा उन कीमतों से कम कीमतों पर थी जो घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत होने के लिए निर्धारित की गई है।
- (ज) जांच ने संबद्ध निर्यातकों के पास अनुपयुक्त क्षमताएं दर्शाई हैं। इसके अतिरिक्त, यह देखा जाता है कि तीसरे देशों को कुछ निर्यात भारत को निर्यात से कम कीमत पर हैं। यह निर्यातकों में विचाराधीन उत्पाद की कम मालसूची को मिलाकर एक प्रभाव में वैश्विक व्यापारिक परिवेश दर्शाता है।
- (झ) जहां तक चीन और पाकिस्तान द्वारा शुल्क लगाए जाने का संबंध है, प्राधिकारी घरेलू उद्योग के तर्क को नोट करते हैं कि पाकिस्तान को निर्यात पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने के बाद एक बार फिर बढ़ने शुरू हो गए हैं।
- (ञ) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन क्षमता के विस्तार के संबंध में टिप्पणियों और प्रति-टिप्पणियों के संबंध में प्राधिकारी मानते हैं कि निर्णायक समीक्षा जांच के दौरान यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है क्योंकि यदि मौजूदा पाटनरोधी शुल्क बढ़ाया जाता है तो इससे विदेशी मूल्यांककों के लिए व्यापार की शर्तों और घरेलू बाजार की शर्तों, दोनों पर प्रभाव पड़ने की संभावना है। तथापि, यह भी सच है कि विस्तार होने तक यह वास्तव में लागू कर दिया गया है, इसके प्रभाव का परिकलन करने के लिए ध्यान में रखने हेतु वास्तविक सूचना कम ही है। इस प्रकार, इस दावे को नोट करने के अलावा प्राधिकारी उपलब्ध तथ्यों पर प्रभाव मूल्यांकन को सीमित कर रहे हैं।
- (ट) एनआईपी के परिकलन के लिए अनुमत 22 प्रतिशत आरओसीई के संबंध में यह स्पष्ट किया जाता है कि प्राधिकारी की यह सतत परिपाटी है कि वे नियोजित पूंजी पर 22 प्रतिशत आय पर विचार करें।

## ट. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

129. प्रयोक्ता उद्योग पर अतिरिक्त लागत लगाने वाले पाटनरोधी शुल्क के दावों के संबंध में, प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से भारत में उत्पाद का कीमत स्तर प्रभावित हो सकता है। तथापि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्द्धा पाटनरोधी उपायों से कम नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों को लगाने से पाटन प्रथाओं द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त हो जाएगा, घरेलू उद्योग की गिरावट को रोका जाएगा और उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तुओं के अपेक्षाकृत अधिक विकल्प उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का प्रयोजन सामान्य रूप में पाटन की अनुचित व्यापारिक परिपाटियों से घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्द्धा की स्थिति स्थापित की जा सके जो कि देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लगाना किसी भी तरह संबद्ध देश से आयात को प्रतिबंधित करना और उपभोक्ताओं को उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित करना नहीं होगा।
130. तथापि, प्राधिकारी के ध्यान में यह तथ्य रहता है कि विचाराधीन उत्पाद एक व्यापक औद्योगिक प्रयोक्ता आधार वाला मध्यवर्ती उत्पाद है। भारतीय प्रयोक्ता उद्योग ने इस जांच में सक्रिय रूप से भाग लिया जिसमें उसने

सूचना/आंकड़े दोनों प्रस्तुत किए और अपने विचार व्यक्त किए। उपर्युक्त जांच में उनके अनुरोध समचित रूप से शामिल हैं और प्राधिकारी ने नीचे व्यक्त निष्कर्षों पर पहुँचने में आवश्यक सीमा तक उनको ध्यान में रखा है।

#### ठ. निष्कर्ष

131. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए तर्कों, दी गई सूचना और किए गए अनुरोधों को ध्यान में रखते हुए और प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों, जो कि इस अंतिम जांच परिणाम में रिकार्ड किए गए हैं, को ध्यान में रखते हुए तथा पाटन और परिणामस्वरूप क्षति के बार-बार होने की संभावना का यहां किए गए निष्कर्षों के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को सतत रूप से क्षति नहीं हो रही है, वास्तव में घरेलू उद्योग ने ऐसा करने का दावा भी नहीं किया है। मुद्दा विचाराधीन उत्पाद के पाटन की संभावना और परिणामस्वरूप पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में क्षति होने का है। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत में विचाराधीन उत्पाद का एक सबसे बड़ा निर्यातक, जिसने इस जांच में भाग लिया है, बिना पाटनरोधी शुल्क का सामना किए निर्यात कर रहा है और घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचाता हुआ भी नहीं देखा जाता है। अन्य निर्यातकों के पास भी पर्याप्त निर्यात अवसर हैं और निर्यात कीमतें भारत में प्राप्त कीमतों के समान कीमत वसूली से अन्यत्र प्रभावी बाजार दर्शाती हैं। अन्यत्र कोई महत्वपूर्ण क्षमता वृद्धि का कोई साक्ष्य नहीं है जो भारत में आयातों के प्रवेश में बाधाक होने वाला साक्ष्य हो।

#### ड. सिफारिश

132. सभी संबंधित तथ्यों और प्रस्तुत मुद्दों की जांच करने पर प्राधिकारी का यह मत है कि यदि इस जांच में संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पादों के आयातों के संबंध में मौजूदा पाटनरोधी शुल्क को बंद किए जाने की अनुमति दी जाती है तो पाटन के जारी रहने तथा क्षति के बार-बार होने की संभावना नहीं है। अतः प्राधिकारी भारत के राजपत्र, असाधारण, भाग-I, खंड-I में प्रकाशित 28 सितंबर, 2012 की अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना संख्या 14/1/2011-डीजीएडी द्वारा प्राधिकारी द्वारा सिफारिश किए गए अनुसार और केंद्र सरकार द्वारा 24 दिसंबर, 2012 की अधिसूचना संख्या 58/2012-सीमा शुल्क (एडीडी) द्वारा अधिसूचित पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना जारी रखने की सिफारिश नहीं करते।
133. इस सिफारिश के कारण केंद्र सरकार के आदेशों के विरुद्ध कोई अपील अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपील अधिकरण के समक्ष की जाएगी।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

### MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF TRADE REMEDIES)

#### FINAL FINDING

New Delhi, the 13<sup>th</sup> September, 2018

Case No. SSR18/2017

**Subject: Anti-Dumping Sunset review investigation concerning imports of 'Phthalic Anhydride' originating in or exported from Korea RP, Taiwan and Israel**

1. **F. No. 7/19/2017-DGAD:** Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, the Designated Authority (herein after referred to as Authority) recommended vide its Final Findings Notification No. 14/1/2011-DGAD dated 28th September 2012 recommended imposition of Anti-dumping duties against dumped imports of Phthalic Anhydride (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from Korea RP, Taiwan and Israel (hereinafter referred to as subject Countries).
2. Consequently, Anti-dumping duties were imposed by the Central Government vide Customs Notification No. 58/2012-Customs dated 24th December 2012.
3. WHEREAS in terms of Section 9 A (5) the Customs Tariff Act, 1995, read with Rule 23 of the Rules, the antidumping duty imposed under the said Act shall, unless revoked earlier, cease to have effect on the expiry of five years from the date of such imposition, unless in a review, initiated before the expiry of the duty, the Designated Authority concludes that the cessation of the duties is likely to lead to continuation or recurrence of

dumping and injury. In accordance with the above, the Authority is required to review, on the basis of a duly substantiated request made by or on behalf of the DI within a reasonable period of time prior to the date of the expiry of the measure, as to whether the expiry of duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

4. AND WHEREAS a petition has been filed by the domestic producers of Phthalic Anhydride i.e., M/s IG Petrochemicals Ltd. and M/s Thirumalai Chemicals Ltd., in accordance with the Act, and the Rules, alleging likelihood of continuation or recurrence of dumping of the subject goods, originating in or exported from the subject countries and consequent injury to the DI and requesting for initiation of sunset review investigation for continuation of anti-dumping duties in force on the imports of Phthalic Anhydride, originating in or exported from Korea RP, Taiwan and Israel.
5. In view of the duly substantiated application with *prima facie* evidence of likelihood of dumping and injury filed on behalf of the DI and in accordance with Section 9A(5) of the Act, read with Rule 23 of the Anti-dumping Rules, the Authority issued a Notification No. 7/19/2017-DGAD dated 11<sup>th</sup> December 2017 published in the Gazette of India, initiating a Sunset Review investigation to review the need for continued imposition of the duties in respect of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, and to examine whether the expiry of such duties is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the DI. The validity of the anti-dumping duty on the imports of the subject goods from the subject countries was extended by the Central Government up to 23<sup>rd</sup> December 2018 vide Notification No. 56/2017-Customs (ADD) dated 21<sup>st</sup> December, 2017.
6. The scope of the present review covers all aspects of the original investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from Korea RP, Taiwan and Israel.

#### A. GENERAL PROCEDURE

7. Procedure described below has been followed with regard to this investigation, after issuance of the public notice notifying the initiation of the above investigation by the Authority:
  - i. The Authority sent a copy of the initiation notification to the Embassies of the subject countries in India, known producers/ exporters in the subject countries, known importers/users in India, and the DI as per the addresses made available by the applicants and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
  - ii. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known producers/exporters and to the Embassies of the subject countries in India in accordance with Rule 6(3) of the AD Rules supra.
  - iii. The Embassies of the subject countries in India were also requested to advise the exporters/producers from Korea RP, Taiwan and Israel to respond to the questionnaire within the prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the producers/exporters was also sent to them along with the names and addresses of the known producers/exporters from Korea RP, Taiwan and Israel.
  - iv. The Authority sent Exporter's Questionnaire to elicit relevant information to the following known producers/exporters in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
    - a. Aekyung Petrochemical Co. Ltd, Korea
    - b. L.G. Petrochemical, Korea
    - c. Humade Corporation, Korea
    - d. Hanwha Chemical Corporation, Korea
    - e. Hyundai Corporation, Korea
    - f. Raystar Corporation, Korea
    - g. Everlite Korea Co. Ltd., Korea
    - h. Daewoo International Corporation, Korea
    - i. Canko Marketing Inc., Korea
    - j. Polmac Co. Ltd., Korea
    - k. Nan Ya Plastics Corporation, Taiwan
    - l. UPC Technology Corporation, Taiwan
    - m. Methyl Co. Ltd., Taiwan
    - n. Gadiv Petrochemicals Industries Ltd., Israel

- v. The following producers/exporters, exporting the subject goods originating in or exported from the subject countries, have filed exporter's questionnaire response:
- a. L.G. Petrochemical, Korea
  - b. Aekyung Petrochemical Co. Ltd, Korea
  - c. Humade Corporation, Korea
  - d. Hyundai Corporation, Korea
  - e. Woori P&C Corporation
  - f. Canko Marketing Inc., Korea
  - g. Ubesco Corporation (UBESCO), Korea
  - h. Gadiv Petrochemicals Industries Ltd., Israel
- vi. The Authority sent Importer's Questionnaire to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
- a. Cray Valley Resins India Ltd.
  - b. Goodlass Nerolac Paints Ltd.
  - c. Gargi Industries
  - d. Hindustan Insecticides Limited
  - e. Kemrock Industries & Exports Ltd.
  - f. Shalimar Paints Limited
  - g. U.K. Paints India Pvt. Ltd.
  - h. KLJ Plasticizers Ltd.
  - i. Mazda Colours Limited
  - j. PCL Oil & Solvents Ltd.
  - k. Lona Industries Limited
  - l. Silvassa Plast
  - m. Aarti Industries Limited
  - n. Mechemco Industries
  - o. Rachna Plasticizers
  - p. Micro Inks Ltd.
  - q. Phthalo Colours & Chemicals (I) Ltd.
  - r. Heubach Colour Pvt. Ltd.
  - s. Ramniklal S. Gosala & Co.
  - t. Sanman Trade Impex Pvt. Ltd.
  - u. Pertochem Middle East (India) Pvt.
  - v. A-One Chem Trade Pvt. Ltd.
  - w. Amjey Chemicals
  - x. Sanjay Chemicals (India) Pvt. Ltd.
  - y. Hazel Mercantile Limited
  - z. Indian Plasticizers Manufacturers Association
  - aa. Indian Plastics Federation
  - bb. Indian Paint Association
  - cc. Chemical Industries Association
  - dd. Indian Chemical Council
  - ee. Alchemie Laboratories
  - ff. Arkema Chemicals India Pvt. Ltd.
  - gg. Asahi Songwon Colors Limited
  - hh. B.M. Jain & Sons Pvt. Ltd.
  - ii. Bhabani Pigments Pvt. Ltd.



- jj. Chemical Corp. Pvt. Ltd.
  - kk. Ishan Dyes & Chemicals Limited
  - ll. Liberty Chemtrade Private Limited
  - mm. Macro Polymers Pvt. Ltd.
  - nn. Maharashtra Aldehydes & Chemicals Ltd.
  - oo. Meghmani Organics Ltd.
  - pp. Narayan Organics Pvt. Ltd.
  - qq. Nishant Organics Pvt. Ltd.
  - rr. Shrey Overseas
  - ss. Payal Petrochem Pvt Ltd / Payal Polyplast Pvt. Ltd.
  - tt. Ritzy Chemicals Pvt. Ltd.
  - uu. Shakti Chemicals
  - vv. Paarichem Resources LLP
  - ww. Vikas Organics Pvt. Ltd.
  - xx. C J Shah & Co
- vii. In response to the questionnaire issued by the Authority, following importers/ users of the subject goods have filed the importer's questionnaire responses:
- a. Berger Paints
  - b. Asian Paints
  - c. Kansai Nerolac Paints
  - d. Shalimar Paints
- viii. Further, the following interested parties have also filed response to the initiation of the investigation:
- a. Indian Paint Association
  - b. Indian Paint & Coating Association
  - c. Indian Small-Scale Paint Association
  - d. Indian Plasticizers Manufacturers Association (IPMA)
  - e. KLJ Plasticizers Ltd
  - f. Payal Polyplast Pvt Ltd
  - g. PCL Oil & Solvents P Ltd
- ix. The Authority made available non-confidential version of the evidences presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- x. Transaction-wise data was called from the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S). The Authority has, relied upon the DGCI&S data and the data of co-operative exporters for calculating the volume and value of imports of the subject goods in India.
- xi. The Authority held an oral hearing on 17<sup>th</sup> May, 2018 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance to Rule 6(6), which was attended by the representatives of DI, the responding exporter, importers and importers' association. The representatives who presented their views orally at the time of oral hearing were advised to file in writing the views expressed orally. The interested parties were provided opportunity to offer rejoinder submissions to the views expressed by opposing interested parties.
- xii. Verification of the data of the DI and exporter questionnaire response was carried out to the extent considered necessary. Only such verified information with necessary rectification, wherever applicable, has been relied upon for the purpose of this investigation.
- xiii. The Period of Investigation (POI) for the purpose of the present review is April 2016 – September 2017 (18 Months). The injury investigation period has been considered as the period April 2013 - March 2014, April 2014 - March 2015, April 2015 - March 2016 and the POI. Further, since the investigation period is a period of 18 months, all figures/data for the POI has been considered on annualized basis in order to be comparable with those of previous years.

- xiv. The submissions made by the interested parties during the course of this investigation, wherever found relevant, have been addressed by the Authority, in this document.
- xv. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xvi. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has considered such parties as non-cooperative and recorded the findings on the basis of the facts available.
- xvii. In accordance with Rule 16 of the Rules Supra, the Authority disclosed the essential facts vide its Disclosure Statement on 24th August 2018 to the concerned interested parties. Comments were requested by 4th September 2018. Comments received on the Disclosure Statement to the extent considered relevant by the Authority have been considered in this final finding.
- xviii. \*\*\* in this Final Finding represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- xix. The exchange rate for the POI has been taken by the Authority as ₹ 67.06 = 1US\$.

## **B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE**

8. The product under consideration for the purpose of present investigation is “Phthalic Anhydride”.

### **B.1 Submissions made by the Domestic industry**

9. The DI has made following submissions with regard to the product under consideration and like article:
- i. The product under consideration in the present investigation is ‘Phthalic Anhydride’ as determined by the Authority in the original investigation. Phthalic Anhydride is an organic chemical classified under Chapter 29 subheading 29173500 of the Custom Tariff Act, 1975.
  - ii. Phthalic Anhydride is used to produce Phthalate esters, which function as plasticizers. It is an important chemical intermediate in plastic industry.
  - iii. Present investigation is a review investigation. The Designated Authority has examined the issue of product under consideration and like article in the original investigation, which is relied upon.

### **B.2 Submissions by other Interested Parties**

10. None of the producers/exporters/importers/other interested parties have raised any issues with regard to the product under consideration.

### **B.3 Examination by the Authority**

11. The product under consideration for the purpose of present investigation is “Phthalic Anhydride”. The present investigation being a sunset review investigation, the scope of the product under consideration in the present review investigation remains the same as that in the original investigations. The product under consideration defined in the previous investigations is as follows:

*“The product under consideration in the present investigation is “Phthalic Anhydride”, having molecular formula ‘C<sub>8</sub>H<sub>4</sub>O<sub>3</sub>’. Phthalic Anhydride, also referred as PAN or PA, is an anhydride of Phthalic Acid, and is commercially produced by catalytic oxidation of Ortho-xylene or Naphthalene. It is a colourless solid, variously referred as Phthalic Anhydride flakes, Phthalic Anhydride (98% min.), Phthalic Acid Anhydrous, Phthalic Anhydride (99.8% min), etc. The product is produced only in one grade. As regards different applications, it does not have distinguishable different types of forms. It is mainly used in the production of phthalate esters, which functions as plasticizers. It is an important chemical intermediate in plastic industry. It is also used in making of the products like Polyester Resins, Alkyd Resins used in paints and lacquers, Unsaturated Polyester Resins, Polyester Polyols, Dyes and Pigments, Halogenated Anhydrides, Polyetherimide Resins, Isatonic Anhydride, Insect Repellents, etc.*

*Phthalic Anhydride is an organic chemical classified under Customs Sub-Heading No. 29173500 under the Custom Tariff Act, 1975. The classification is, however, indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.”*

12. In the original investigations, the Authority has held that the product under consideration as 'Phthalic Anhydride in all its forms'. None of the interested parties have raised any concerns with regard to product under consideration and like article.
13. After considering the information on record, the Authority holds that there is no known difference in the product under consideration exported from the subject countries and the product produced and sold by the Indian industry. The subject product produced by the DI is comparable to the Product under consideration in terms of features such as physical & chemical characteristics, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.
14. The Authority holds that the subject product produced by the applicant DI is like article to the product under consideration as mentioned in the paragraphs above, in accordance with the Anti-Dumping Rules.

### **C. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING**

15. The petition for review of anti-dumping duty in force on imports of the subject goods was filed by M/s IG Petrochemicals Ltd. and M/s Thirumalai Chemicals Ltd. as domestic producers of the product under consideration in India.

#### **C.1 Submissions made by the Domestic Industry**

16. The DI has made the following submissions with regard to scope and standing of the DI:
  - (a) The petition has been filed by M/s. IG Petrochemicals Ltd. and M/s Thirumalai Chemicals Ltd., for review and continuation of anti-dumping duty in force on imports of Phthalic Anhydride from Korea RP, Taiwan and Israel.
  - (b) One of the petitioners, M/s IG Petrochemicals Ltd, has facilitated import of small quantity of the product from Taiwan in the POI for one of its customers. The bill of entry for home consumption has been filed by the customer. Therefore, the petitioner company should not be considered in strict sense as importer of the product under consideration in India within the meaning of the Rules.
  - (c) There are two more producers of the subject goods in India, SI Group India Ltd. and Asian Paints India Limited. SI Group has supported the petition and the other producer, Asian Paints, have shut down their plant in the month of July 2017.
  - (d) The petitioners along with the supporter satisfy the standing requirements and constitute DI within the meaning of the Anti-Dumping Rules.

#### **C.2 Submissions by Other Interested Parties**

17. The opposing interested parties have made the following submissions with regard to scope of DI and standing:
  - (a) The DI has knowingly withheld the information regarding its imports at the time of initiation of the investigation.
  - (b) The definition of the DI excludes those producers of the product under consideration who are importers of the product under consideration as confirmed by the ruling of the Hon'ble High Court of Andhra Pradesh. Reference given to the final findings in the matters concerning imports of 'Saturated Fatty Alcohols' from Indonesia, Malaysia, Thailand and Saudi Arabia and 'Purified Terephthalic Acid' (PTA) from China PR, Iran, Indonesia, Malaysia & Taiwan.
  - (c) Disclosure of volume of imports of product under consideration made by the applicants in the present investigation is required to determine the eligibility of the applicants to constitute the DI. Disclosure of data on volume of imports does not warrant confidential treatment. Reference has been made to final findings in the matter concerning Plain Medium Density Fibre Board and Nylon Filament Yarn cases.

#### **C.3 Examination by the Authority**

18. The present application was filed by M/s. IG Petrochemicals Ltd. and M/s Thirumalai Chemicals Ltd. as domestic producers of the product under consideration in India, seeking review and continuation of anti-dumping duties in force on imports of Phthalic Anhydride from the subject countries.
19. As per the information on record and investigation conducted, besides the petitioners, the following are the other

known producers of the product under consideration:

- (a) SI Group India Limited
- (b) Asian Paints Limited

20. SI Group India Limited extended its support to the request for extension of ADD during the course of investigation. Further, Asian Paints Limited has submitted Importer Questionnaire response as an importer of the product under consideration.
21. The opposing interested parties have contended that IGPL has imported the subject goods and therefore is not eligible to be considered as DI. They have relied upon the final findings of Saturated Fatty Alcohols and Purified Terephthalic Acid. In the case of Saturated Fatty Alcohols, the Authority had noted that M/s VVF (India) Limited was the petitioner and M/s Godrej Industries Ltd. was one of the producers of the subject goods and also a regular importer of the product, wherein M/s Godrej Industries Limited themselves had admitted that they were regular importer of the product and while the petitioner, M/s VVF (India) Limited, accounted for majority of the total Indian production, M/s Godrej Industries had been excluded from the purview of DI in terms of Rule 2(b) of the Antidumping rules. The interested parties have further contended that in case of Purified Terephthalic Acid (PTA), the Authority did not consider it appropriate to accept Reliance Industries Ltd. as an eligible DI as its subsidiary company in Malaysia (one of the subject countries) had exported significant volumes to India.
22. Imports made by IGPL were examined in detail. Details of imports made by IGPL are given in the table below:

S.N.	Parameter	POI
1	Volume of Imports - MT	378
2	Imports in relation to	
A	Total imports in India	0.24%
B	Consumption in India	0.07%
C	Production in India	0.08%
D	Production of the Company	0.17%

23. IGPL contended that it is not the importer of these goods, as the company has not filed bill of entry for home consumption, an essential requirement for being an importer of the PUC. Further, IGPL has submitted that the company has merely arranged these imports.
24. As regards reference to the past determinations, the Authority notes that the facts of stated investigations are quite different from the present investigation. In case of PTA, Reliance Industries Ltd. was related to the sole exporter of the PUC, whose exports were beyond *de-minimus* limits under the rules and at dumped prices, and thus significant. In case of Saturated Fatty Alcohols, M/s Godrej Industries Limited was a regular importer of the PUC. In the instant case, the imports arranged by IGPL were insignificant in volume, quite sporadic in nature and the bill of entry for home consumption was not filed by IGPL. The claim of the opposing parties with regard to exclusion of IGPL in the facts of the present investigation is not justified. Incidentally, it is also noted that exclusion of IGPL works to the advantage (and not disadvantage) of IGPL. It is also noted that M/s IG Petrochemicals Ltd. is neither a regular importer of the subject goods nor has any affiliated company in the subject countries which are exporting significant volumes to India. IG Petrochemicals Ltd. has facilitated one-time import in the POI for one of its customers. IGPL is primarily a producer of the subject goods and continues to focus on domestic production and sales. The import facilitated by IGPL is not a normal business practice of the Company. IGPL is primarily a producer of Phthalic Anhydride, and not an importer of the product under consideration. Having regard to the facts of this case and the past practices followed in similarly placed cases, the Authority considers that IGPL constitutes eligible DI within the meaning of Rule 2 (b) of the Anti-Dumping Rules and the petitioners together satisfy the standing criteria in terms of Rule 5 (3).

#### **D. CONFIDENTIALITY**

##### **D.1. Submissions by Domestic Industry**

25. Submissions made by the DI in this regard are as follows:
  - (a) The respondents have claimed excessive confidentiality by not providing information in the public version of their questionnaire responses.
  - (b) Vital information with regard to even sales distribution channel has been claimed confidential.

- (c) There cannot be any confidentiality in describing the manufacturing process, which is well known globally.
- (d) There is no logic in claiming names of shareholders as confidential when such information is readily available on websites.
- (e) The exporters have suppressed vital information such as sources of procurement of raw material and utilities, use of captive inputs and affiliation.

## **D.2. Submissions by Other Interested Parties**

26. Submissions made by the other interested parties in this regard are as follows:

- (a) The petitioners have claimed excessive confidentiality on information relating to capacity, profit/loss, cash profits, PBIT, demand, etc. and the costing information provided in the petition.
- (b) Data provided in the petition is not properly indexed in the non-confidential version.
- (c) The petitioners are listed companies and their core business is production and sale of subject goods. Since a lot of information is available in the public domain, adoption of excessive confidentiality approach by the petitioners is not correct.
- (d) There is difference in approach towards confidentiality adopted by the DI in various investigations.
- (e) The DI has filed a report document, justifying likelihood of dumping and injury on a confidential basis. The reasoning provided by the DI for claiming confidentiality stands vitiated on account of the provision in the Trade Notice No. 01/2013 wherein it has been explicitly stated that a request of claim of confidentiality to information which can be accessed by payment of fee will not be granted by the Authority.
- (f) The DI has provided the report to the Authority, though the terms and conditions of the report as made available by the DI does not provide for any such exception. If the Authority can have access to this document, there does not appear any reason to exclude the other interested parties from having access to the same, especially, when the respondents are ready to provide an undertaking that the report will not be made public.
- (g) Non-disclosure of a report to the other interested parties which has been relied upon by the Hon'ble DA and taken on record in the present investigation constitutes violation of Rule 6(7) of the Indian AD Rules.

## **D.3. Examination by the Authority**

27. With regard to confidentiality of information, Rule 7 of Anti-dumping Rules provides as follows:

*"7. Confidential information:*

*(1) Notwithstanding anything contained in sub rules (2), (3) and (7) of rule 6, sub-rule (2) of rule 12, sub-rule (4) of rule 15 and sub-rule (4) of rule 17, the copies of applications received under sub-rule (1) of rule 5, or any other information provided to the designated authority on a confidential basis by any party in the course of investigation, shall, upon the designated authority being satisfied as to its confidentiality, be treated as such by it and no such information shall be disclosed to any other party without specific authorization of the party providing such information.*

*(2) The designated authority may require the parties providing information on confidential basis to furnish non-confidential summary thereof and if, in the opinion of a party providing such information, such information is not susceptible of summary, such party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarization is not possible.*

*(3) Notwithstanding anything contained in sub-rule (2), if the designated authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorise its disclosure in a generalized or summary form, it may disregard such information."*

28. Submissions made by the interested parties with regard to confidentiality and considered relevant by the Authority were examined and addressed accordingly. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to the need for treating them as confidential. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims of all the parties and accordingly not disclosed such information to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide non confidential summary of the information filed on confidential basis. The Authority made available the non-confidential version of the evidences submitted by various interested parties in the form of public file.

**E. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DETERMINATION OF DUMPING MARGIN**

29. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) *the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
- (ii) *when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-*
  - (a) *comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
  - (b) *the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):*

*Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely trans shipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.*

**E.1 Submissions by the Domestic industry**

30. The DI, *inter alia*, submitted as follows:

- (a) The petitioners have claimed normal values in the subject countries based on constructed cost method. Normal values have been claimed on month-wise basis as the prices of Phthalic Anhydride and the major input i.e. Orthoxylene (OX) are highly volatile. OX prices have been claimed based on average import price of OX into Korea as per Korean Customs for Korea, average import price of OX into Taiwan as per Taiwan Customs for Taiwan and average import price of OX to the petitioner for Israel. Considering that as high as 80-85% cost is on account of OX, even a difference of US\$ 50 per MT is quite significant in the price of the present product.
- (b) The petitioners have claimed net export price by adjusting CIF export prices on the basis of DGCI&S transaction-wise import data for the expenses on account of ocean freight, marine insurance, port expenses, handling charges, bank charges and commission and the same are on record of the Authority.
- (c) The calculations of normal value and export price shows that the dumping margins are positive and significant.
- (d) The foreign producers are either captively producing the major input, Orthoxylene (OX), or procuring the same from affiliated companies. The valuation of captive input is a critical factor in determining normal value in this case as the raw material forms nearly 80-85% of the total cost of production.
- (e) The questionnaire responses are deficient and evasive with regard to the information relating to captive inputs and its pricing and also about purchase of inputs from related parties. The questionnaire response filed by the exporters failed to disclose whether the related party purchases were reflective and representative of a fair market price.
- (f) The adjustment claimed by these exporters in the name of “duty drawback” does not justify its acceptance unless the same is established with verifiable evidence that the drawback received by the company is in respect of the input that was consumed in the production of exported product.
- (g) A large number of products are produced by the exporters in the same plant, where the product under consideration is produced. The issue of allocation of cost on account of common utilities and raw materials to the cost of production of various products including subject goods on a reasonable basis is critical.
- (h) There is no clarity regarding the treatment of expenses such as trader’s commission and SGA expenses for arriving at the net export price of Aekyung.
- (i) Phthalic Anhydride is captively consumed as raw material for production of DOP. In the Exporter Response of DOP filed by Aekyung, the exporter has intentionally evaded reply to the question seeking information on the basis of pricing of captively consumed raw material.
- (j) Phthalic anhydride is also used to produce alkyd resins by related company of Aekyung, Aekyung

Chemical Co. Ltd. Similarly, Phthalic Anhydride is being captively used by LG Chem for production of plasticizers. If captive sales are included in sales claimed to be domestic sales, such captive sales should be ignored for the purpose of determining normal value based on domestic selling price.

- (k) Aekyung has claimed to have made export sales through five exporters only. In case there are more exporters, failure to respond by even one exporter should entail rejection of response filed by Aekyung.
- (l) The claim of Aekyung that they were awarded NIL duty in the original investigations and the present investigations against them should be terminated, is not correct. NIL duty does not prohibit the Authority from conducting sunset review on such exporters. Indian Authority, by practice, conducts full midterm and full sunset reviews which focus on existence, degree and effect of dumping. The Authority determines the existence of dumping margin in respect of actual exports in the review period.
- (m) LG Chem has exported very low volume of subject goods to India. In spite of the few transactions, these transactions should be considered for determination of dumping margin.
- (n) LG has claimed that they produce Phthalic Anhydride for captive consumption for production of DOP and not for regular external sales. In that case, their claim for consideration of price of domestic sales as normal value is inappropriate. Even if domestic sales price is considered as normal value, it is requested that value of captive sales should be excluded from it for the purpose of determining normal value.
- (o) LG Chem exports to India directly and also through trading agents. Net export price of LG Chem should be calculated after deducting commission paid to traders.
- (p) Gadiv Petrochemical has been a non-cooperating exporter, as the company has failed to file response to Exporter Questionnaire Part II.
- (q) The claim of Gadiv for consideration of sales to Italy as normal value on the basis of “appropriate third country” lacks any justifiable reason.
- (r) In the original investigations, Gadiv had claimed normal value on the basis of export sales to Portugal. The Authority did not accept their claim as Gadiv had not provided any justifications why Portugal alone should be considered as appropriate third country when the company had exported to other third countries as well. The Authority also did not accept the cost of production of Gadiv as it allocated the total cost of production of the company to Phthalic Anhydride on production basis. The Authority had constructed the normal value for Gadiv on the basis of international price of Orthoxylene in the original investigation.

## **E.2 Submissions by Exporters, Importers and Other Interested Parties**

31. The other interested parties submitted as follows:

- a) The petitioners have claimed excessive level of dumping margin. Data provided by cooperating exporters should be used for determination of dumping margin.
- b) The present investigation against Aekyung and its exporters should be terminated, as the Authority recommended NIL duty in the original investigations on the imports of the product from Aekyung Petrochemical Co. Ltd. and its trader Humade Corporation in accordance with Rule 14(c) and Article 5.8 of Article VI of GATT. Reference has been made to Paragraph 219 of Appellate Body Report in Mexico - Definitive Anti-dumping Measures on Beef and Rice WT/DS295/AB/R dated 29 November 2005.
- c) Aekyung has claimed that where there is no anti-dumping duty in force, the question of review for cessation or withdrawal of duty does not arise.
- d) LG Chem has claimed normal value based on sales in home market.
- e) Gadiv has claimed export sales price to Italy to be considered as normal value on the basis of “appropriate third country”.
- f) The interested parties have contended that if the DI is in the process of upgrading to the latest technology; this implies that the DI cannot claim to be the most efficient producer and their cost cannot be taken into consideration for computation of constructed normal value for non-cooperating exporters.
- g) The DI cannot provide the positive and negative dumping margin calculations on transaction wise basis without fulfilling the mandatory requirements of Article 2.4.2 and paragraph 6(iv) of Annexure I of the Indian AD Rules.

## **E.3 Examination by the Authority**

32. The following producers/exporters have filed exporter questionnaire response (both, Part-I and Part-II): -

- a) Aekyung Petrochemical Co. Ltd. (Producer) – Korea
  - b) Woori P&C Corporation (Exporter) – Korea
  - c) Hyundai Corporation (Exporter) – Korea
  - d) Humade Corporation (Exporter) – Korea
  - e) Canko Marketing, INC. (Exporter) – Korea
  - f) Ubesco Corporation (Exporter) – Korea
  - g) LG Chem Ltd. (Producer & Exporter) – Korea
  - h) Gadiv Petrochemicals Industries Ltd. (Producer & Exporter) – Israel
33. The Authority has determined individual dumping margin for each known producer who has cooperated with the Authority. In those cases, where the producer has exported the PUC through one or more related/unrelated traders, it was examined whether such traders have filed questionnaire response. In those cases where exporters have not filed questionnaire response, it was ascertained whether the volume of exports made by non-cooperative exporters was significant. Wherever such volume was found insignificant, the questionnaire response of the producer has been accepted for determination of individual dumping margin.
  34. The general methodology adopted by the Authority for determination of normal value for these producers is to first examine whether the domestic sales of the subject goods by the responding exporters in their home markets were representative and viable for permitting determination of normal value on the basis of domestic selling prices and whether the ordinary course of trade test was satisfied as per the data provided by the respondents. In such cases, the normal value has been determined based on domestic selling prices. In other cases, the costs of production including selling, general and administrative expenses claimed by the respective exporters is accepted after due verification and after adding 5% towards profit to arrive at the normal value.
  35. Orthoxylene (OX) is a basic raw material used in the production of product under consideration, costs on account of which constitutes 75-85% of the cost of production of the product under consideration. In view of significant variation in OX prices in a short period, the cost of production and consequently normal value has been determined on monthly basis, by adjusting POI cost of production for the changes in OX prices.
  36. General methodology adopted for determination of cost of production – the Authority prescribed detailed requirements for information relevant to determination of cost of production in order to apply ordinary course of trade test. Spot verifications was not conducted by the Authority, which instead carried out a table study into the cost of production information provided by the responding exporters. The producers were also directed to provide cost of production statement duly certified by a practicing accountant in their country.
  37. As regards claim of the DI that the purchase price of Orthoxylene is not at arm's length, the Authority considers that the information provided by the company being on the basis of records maintained by the company, the Authority is required to adopt the same. The consumption price reported by Gadiv Petrochemicals Industries Ltd. (Gadiv) was however correlated with the consumption price reported by Gadiv and prevailing prices of OX reported by petitioners. No material difference was found by the Authority in the consumption price reported by Gadiv.
  38. As regards claim of the DI regarding evidence of adjustment claimed by the exporters for duty drawback, the Authority has verified that the duty drawback received by the exporters is in respect of input consumed for exports.

### **E.3.1 Determination of Normal Value and Export Price for Producers and Exporters in Korea RP**

#### **I. Aekyung Petrochemical Co. Ltd. (Aekyung) and its Exporters**

39. Aekyung Petrochemical Co. Ltd., along with its five exporters who have exported the product under consideration to India, has filed exporter questionnaire response. Exports made by the exporters reported by Aekyung Petrochemical constituted 51% of total exports to India.
40. With regard to the claim of Aekyung that the Authority recommended NIL duty in the original investigations on the imports of the product from Aekyung Petrochemical Co. Ltd. and the present sunset review investigation against them should be terminated, it is noted that NIL duty awarded to an exporter at the time of original investigations was based on facts relevant at that time. While conducting the present sunset review, the Authority will base its determination on examination of the facts in the present review period of investigation. The



determinations made in the sunset review investigation are based on the actual dumping margin and actual material injury established in the review period. The Authority has undertaken full investigation in respect of the all aspects of dumping and injury consistent with requirements of Article 2 & 3 of the Agreement. Thus, the present sunset review includes complete *de novo* determination of the dumping margin and injury margin.

**a) Normal Value**

41. The Authority notes that Aekyung Petrochemical Co. Ltd. Korea RP (Aekyung) is a producer of Phthalic Anhydride from Korea RP and has exported the subject goods to India through traders during the period of investigation. In addition, Aekyung sells the subject goods in the domestic market and also exports to a number of other countries. In Appendix-1, the company has reported 1937 domestic sale transactions during the period of investigation. About 71% in volume terms of these sales were to unrelated parties. The company has sold \*\*\*MT of the subject goods in the domestic market. As per Appendix-1, the company has claimed adjustments on account of Inland Freight, Credit Expense, bank charge and Packing Expense. The information provided on domestic sales in the home market by Aekyung was verified by the Authority. Various adjustments claimed were also verified and found to be in order. For determination of the ordinary course of trade test, the costs of production of the product concerned have been accepted. Further, all domestic sales transactions were examined with reference to the costs of production of the subject goods to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade. The Authority notes that the domestic sales of subject goods by Aekyung in the home market were representative for permitting determination of normal value on the basis of domestic selling prices, and the ordinary course of trade test was satisfied as per the data provided by Aekyung. Further, the Authority had adjusted the normal value for inland freight, packing charges, bank charges, etc. as claimed by the producer/exporters after due verification. The normal value so determined is mentioned in the Dumping Margin table.

**b) Export Price**

42. The Authority notes that in Appendix-2, M/s Aekyung Petrochemical Co. Ltd. reported 213 transactions showing \*\*\*MT exports of subject goods to India during the period of investigation through five exporters - Woori P&C Corporation, Hyundai Corporation, Humade Corporation, Canko Marketing, INC. and Ubesco Corporation. It is noted that all the above exporters have filed questionnaire response. The Authority has examined the export prices in respect of responding exporters on the basis of questionnaire responses filed by them. The export prices and the adjustments thereof have been allowed after examination. Export Price at the ex-factory level has been calculated by deducting all post factory expenses i.e. ocean freight, marine insurance, inland freight, commission, port handling charges, bank charges, duty drawback, etc., incurred by the producer. The net export price so arrived at has been used for determining dumping margin.

**II. LG Chem Ltd. (LG)**

**a) Normal Value**

43. LG Chem has claimed their sales in home market to be considered as normal value. From the response filed by LG Chem, the Authority notes that LG Chem has reported 285 domestic sales transactions during the period of investigation. All these sales were to unrelated parties. The company has sold \*\*\*MT of the subject goods in the domestic market. As per Appendix-1, the company has claimed adjustments on account of Inland Freight, Credit Expense and Packing Expense. The information provided on domestic sales in the home market by LG Chem was verified by the Authority. Various adjustments claimed were also verified and found to be in order. For determination of the ordinary course of trade test, the costs of production of the product concerned as claimed by the exporter have been accepted after due scrutiny. Further, all domestic sales transactions were examined with reference to the costs of production of the subject goods to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade. The Authority notes that the domestic sales of subject goods by LG Chem in the home market were representative for permitting determination of normal value on the basis of domestic selling prices, and the ordinary course of trade test was satisfied as per the data provided by LG Chem. The normal value determined on this basis is mentioned in the Dumping Margin table.

**b) Export Price**

44. The Authority notes that in Appendix-2, M/s LG Chem Ltd. reported 17 transactions showing \*\*\* MT exports of subject goods to India during the period of investigation. The export prices and the adjustments thereof have been

allowed after examination. Export Price at the ex-factory level has been calculated by deducting all post manufacturing expenses i.e. ocean freight, marine insurance, inland freight, commission, port handling charges, bank charges, duty drawback, etc., incurred by the producer. The net export price so arrived at has been used for determining dumping margin.

**III. Determination of Normal Value and Export Price for All Non-Cooperating Producers and Exporters in Korea**

45. For all the other producers/exporters of Korea, normal value and export price have been considered based on the facts available in terms of Rule 6(8) of the AD Rules. The Authority has considered highest normal value for each month determined for the cooperating exporters and adopted the same for the non-cooperating exporters. The data has been collated as per the information available on record. Based on this, the dumping margin is indicated in the relevant table.

**E.3.2 Determination of Normal Value and Export Price for Producers and Exporters in Israel**

**I. Gadiv Petrochemicals Industries Ltd. (Gadiv)**

46. Gadiv has claimed that since their sales in home market are low due to insufficient market demand, sales to Italy should be considered as normal value on the basis of “appropriate third country”. The company has however not given any reason why sales to Italy constitute an “appropriate third country”.

**a) Normal Value**

47. The company has exported product under consideration to India directly. The company has no domestic sales. For the desk-top examination, the company was asked to furnish transaction-wise sales made to all third countries. The company, however, did not furnish complete information requested for. The company submitted that Italy may be treated as comparable third country for which information of exports has been furnished to determine its normal value and if the Authority does not consider Italy as comparable third country, then the Authority may determine the normal value for them based on their actual production costs of PAN. The Authority examined this request but did not accept Italy as a comparable third country as the company did not provide any justifications why Italy alone should be considered as appropriate third country when the company has exported to other third countries as well. The Authority also did not accept the cost of production of Gadiv as they have allocated the total cost of production of the company to PAN based on the quantity of PAN produced and the total quantity of production of all production including PAN. In view of the above, the Authority has constructed the normal value for Gadiv based on facts available. The international price of Orthoxylene, the consumption norm of the main input, i.e., utilities and credit for by-product steam to the extent verified has been considered. Conversion cost and SGA expenses of the most efficient DI and reasonable profit margin of 5% of cost of sales (excluding interest) have also been considered. The Normal value so determined is mentioned in the Dumping Margin Table.

**b) Export Price**

48. The Authority notes that in Appendix-2, M/s Gadiv Petrochemicals Industry Ltd. has reported 23 export transactions showing \*\*\* MT exports of subject goods to India during the period of 12 months from 01-Oct-2016 to 30-Sep-2017 while the POI is of 18 months from 01-Apr-2016 to 30-Sep-2017. Therefore, export price for M/s Gadiv has been constructed based on the facts available in terms of Rule 6(8) of the AD Rules. The net export price so arrived at has been used for determining dumping margin.

**II. Determination of Normal Value and Export Price for all non-cooperating producers and exporters in Israel**

49. For all the other producers/exporters of Israel, normal value and export price have been considered based on the facts available in terms of Rule 6(8) of the AD Rules. The data has been collated as per the information available on record. Based on this, the dumping margin is indicated in the relevant table.

**E.3.3 Determination of Normal Value and Export Price for Producers and Exporters in Taiwan**

50. As none of the other producers/exporters from Taiwan have responded, normal value and export price have been

considered based on the facts available in terms of Rule 6(8) of the AD Rules. Normal value in respect of Taiwan producers has therefore been determined on the basis of best estimates of cost of production and prices of raw materials. Based on this, the dumping margin is indicated in the relevant table.

#### E.3.4 Calculation of Dumping Margin

51. Comparing the normal values and export prices as determined above, the dumping margin proposed to be determined for the responding and non-responding producers and exporters in the subject countries during POI are as follows:

##### Dumping Margin

Sl. No.	Producer	Exporter	Normal Value US\$ / MT	Net Export Price US\$ / MT	Dumping Margin US\$ / MT	Dumping Margin %	Dumping Margin Range %
<b>Korea</b>							
1	Aekyung Petrochemical Co. Ltd.	<ul style="list-style-type: none"> <li>• Woori P&amp;C Corporation,</li> <li>• Hyundai Corporation,</li> <li>• Humade Corporation,</li> <li>• Canko Marketing, INC.,</li> <li>• Ubesco Corporation</li> </ul>	***	***	(***)	(***)	-(10-0)
2	LG Chem Ltd.	LG Chem Ltd.	***	***	***	***	0-10
3	All Others	All Others	***	***	***	***	0-10
<b>Israel</b>							
4	Gadiv Petrochemicals Industries Ltd.	Gadiv Petrochemicals Industries Ltd.	***	***	***	***	10-20
5	All Others	All Others	***	***	***	***	10-20
<b>Taiwan</b>							
6	All Producers	All Exporters	***	***	***	***	0-10

#### F. DETERMINATION OF INJURY AND CAUSAL LINK

##### F.1 Submissions made by the domestic industry

52. The DI, in its submissions, has *inter alia* argued as under:
- Present investigation is a sunset review investigation.
  - The demand for the product under consideration has increased by 32% between the POI of original investigations and the present POI.
  - While sales of the DI increased by only 8% and sales of Indian producers as a whole increased by 12% between the POI of original investigations and the present POI; the imports from the subject countries increased by 41% in the same period.
  - As a result of this, the DI was unable to sell its entire production in the domestic market, and was forced to export significant volumes of the product under consideration.
  - Further, though there is an increase in the domestic sales volume over the present injury period, the rate of increase is only 12% between the base year and the POI as compared to increase in demand by 26%; whereas, the subject imports increased by 86% between the base year and the POI.
  - Capacity of the DI increased in 2014-15 and remained stagnant over the injury period. The DI is now expanding its capacities further.
  - Volume parameters such as production, sales and capacity utilization of the DI increased up to 2015-16 and then declined in the POI.
  - Average inventory levels of the DI have declined up to 2015-16 and then increased in the POI.
  - Profitability, return on investment and cash profits have shown improvement as the DI has come out from the situation of financial losses and has started earning profits.
  - Market share of the DI has increased in 2014-15 and then declined over the injury period.

- k) Employment, Wages and Productivity - The level of employment has declined, whereas wages have increased over the injury period. Productivity per employee has increased up to 2015-16 and then declined in the POI.
- l) Growth - Growth of the DI in terms of volume parameters, such as, sales volume, production and capacity utilization show improvement up to 2015-16 on year to year basis and then a decline in the POI. Growth in terms of price parameters, such as, profits, return on investment and cash profits was positive due to imposition of anti-dumping duties on subject imports and imports from other dumped sources.
- m) Ability to raise capital investments - The petitioners have planned to enhance capacity. Investments have already been committed for this purpose. Cessation of anti-dumping duty on imports from the subject countries at this stage would jeopardize the investments.
- n) The causal link has already been established in the original investigation. Petitioners have not claimed that the dumped imports are causing continued injury as the antidumping duty in force counter acts the injury that could have been caused by dumped imports. Therefore, causal link may be examined in the present case considering likely importation of dumped product and consequent injury in the event of cessation of antidumping duty.
- o) Imports made into the domestic market were at dumped prices despite imposition of anti-dumping duty. There is huge probability of intensified dumping of the subject goods in the event of cessation of anti-dumping duty.
- p) Price undercutting should be determined only by considering those import transactions whose landed price of imports is below the selling price of the DI.
- q) The exports of the exporters to other destinations fetching lower prices would be diverted to India in case of cessation of anti-dumping duty as such exports would still be able to fetch better prices in India than in third countries. Further, the potential demand in India is significant to attract higher volume of dumped imports to the detriment of DI's performance.

## **F.2 Submissions by the Producers/ Exporters/ Other Interested Parties**

53. The exporters, importers and other interested parties to this investigation have made the following submissions regarding the injury and causal link:
- a) The decision to discontinue production of the product under consideration by Asian Paints Limited was a strategic business decision and not that the Company was forced to shut down as they were running in losses on account of dumping as claimed by the applicants. There is misrepresentation of facts by the DI. Asian Paints had planned to phase out the production of Phthalic Anhydride and its allied products in order to expand the existing paint manufacturing capacity and to augment the manufacturing capacity of synthetic resins and emulsions at this facility.
  - b) If other units producing the product under consideration in India have been closed due to dumping as claimed by the petitioners, the same factors should have also impacted the performance of the DI. However, as admitted by the DI itself, it has not suffered injury on account of imports of the product under consideration into India.
  - c) The multiple duty protection against the imports of product under consideration for 10 years has provided fair level playing field to the DI. The DI's performance has also improved significantly during the injury period, period of investigation ('POI') and the Post-POI as established by the Annual Reports and Quarterly Statements of TCL and IGPL.
  - d) The protection for future production plan which is still to come up cannot be addressed in the ongoing sunset review investigation. The imposition of anti-dumping duties is to remedy injury caused by dumping, and in a sunset review investigation, it is to ensure that there is no likelihood of recurrence of injury.
  - e) Import volumes from Aekyung should be excluded from the overall import analysis in accordance with Article 3.5 of the ADA and paragraph (v), Annex II of the Indian AD rules. Such imports are presumed to be non-dumped imports.
  - f) Imports made under advance license do not compete with the domestic product and should be excluded from the scope of injury analysis.
  - g) The DI itself has admitted that there is no continued injury being suffered in terms of price suppression/depression, price underselling, profitability and sales, etc.
  - h) The DI has not provided any analysis with respect to post-POI performance.

- i) The petitioners have claimed that subject countries have exported to third countries at prices lower than the Indian prices. If the landed price in India is higher than the NIP of the DI, then such high import prices will not cause injury on cessation of duty even if import volumes increase.
- j) The alleged claim of injury, if any, should not be attributed to the imports from the subject countries, but to other countries not attracting anti-dumping duty.
- k) While some producers have closed production, others have inadequate capacity leading to demand supply gap. Further, the DI has shifted focus to exports and captive sales. Imports are unavoidable and continuation of anti-dumping duty will hamper the growth of user industry.
- l) The DI's claim that they are being forced to export significant volumes is baseless.
- m) Determination of price undercutting must be based on all imports of the subject goods in question, rather than the individual transactions in which the export price was below normal value. Reference has been made to WTO Panel Report in EC – Tube or Pipe Fittings.
- n) The DI has claimed that the causal link has already been established in the original investigation. There exists no nexus between the causal link determined in the original investigation and the causal link to be determined in the present investigation as there is no injury in the present review case and the injury period and the POI in the original case is different from the present case.
- o) The basic custom duty on import of Orthoxylene has become ZERO in 2018 and all other taxes levied on its import are creditable. There is no advantage from tax perspective to the DI for exporting the subject goods, yet it is exporting the subject goods at a price lower than domestic selling price to create shortage in India and charge high price in domestic market.
- p) The number of producers has come down from 5 at the time of initial imposition of duties to effectively 2 now, leading to monopolistic position of the two petitioners. The DI realized very high prices and has been unaffected by the landed prices of the product under consideration. Continuation of anti-dumping duty will only encourage the cartelization practices and excessive profiteering by further misuse of AD duties by the DI.
- q) The prices of raw material, OX, have decreased internationally by 50% in September 2017 as compared to October 2013; whereas Phthalic Anhydride prices, has decreased only by 25%. The delta for Phthalic Anhydride has gone up and thus, this industry does not require continuance of anti-dumping duty.
- r) The petitioners have exaggerated the increased import of the subject product, and deliberately invented injury to the DI.
- s) The Authority has not recommended imposition of anti-dumping duty in various cases wherein the DI is earning huge profits or selling its products at price above non-injurious price. The same is applicable to the present investigation as well.
- t) Continued imposition of anti-dumping measures will adversely affect the long-term and overall interests of the Indian DI and its downstream industries.

### **F.3 Examination by the Authority**

- 54. The Authority notes the arguments of the DI and other interested parties and the issues raised therein, and, has addressed them in the relevant paragraphs hereunder.
- 55. With regard to the contention of the interested parties that continued imposition of anti-dumping duty is against the interest of the downstream industry, it is consistent position of the Authority that the purpose of ADD is only to address the unfair practice of dumping which is causing or likely to cause injury to the DI. Imports of subject goods at fair prices are not restricted by the imposition of anti-dumping duty. The purpose of anti-dumping duties is to eliminate injury caused to the DI by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the subject goods to the consumers.
- 56. With regard to the contention of interested parties that continuation of duties would lead to monopolistic position of the petitioners, it is noted that there is no restriction on imports of the product under consideration at undumped prices. Further, concerns relating to monopoly or cartelization, if any, should be taken up before appropriate authority for such matters.
- 57. Some interested parties have contended that the DI has shifted focus to exports and captive sales. It is noted in this regard that about 80 % of sales by the petitioners were meant for domestic market. Further, the profitability of

the DI in the export market is much adverse as compared to profitability in the domestic market. There is nothing on record to show that the DI was exporting as a matter of choice or preference. Given significantly lower profits in the export orientation, a natural choice of DI should be to sell in the domestic market.

58. With regard to the contention that the petitioners have claimed protection for investments made for expansion of capacity, the Authority notes that in a sunset review, the Authority examines the likelihood of continued dumping and injury therefrom to the DI in the event of the cessation of the anti-dumping duties. The examination of likelihood of dumping and injury to the DI based on the prescribed parameters is discussed in the subsequent paragraphs. Regarding the DI's contention for protecting profitability of the fresh investments, in case the ADD is withdrawn, the Authority agrees that this is not an issue under consideration, consequently its analysis is based on data and information available for the POI only.
59. With regard to the contention of the interested parties that Asian Paints has discontinued production of Phthalic Anhydride as the plant will be used in expanding the manufacturing capacity of other products which are important to Asian Paints business, it is seen from the information on record that it was business decision of Asian Paints to use the Phthalic Anhydride plant to manufacture other products. It is noted from the importer questionnaire response of Asian Paints that the company has started importing Phthalic Anhydride. The Authority also notes that the DI has claimed that the reason for Asian Paints to discontinue production of phthalic anhydride was to use the facilities for more profitable operations which in a way show that the company found production of PAN less profitable than other operations.
60. It has been contended that import volumes from Aekyung should be excluded from the overall import analysis in accordance with Article 3.5 of the ADA and paragraph (v), Annex II of the Indian AD rules and referred the Appellate Body Report in Mexico - Definitive Anti-dumping Measures on Beef and Rice. The Authority however notes that un-dumped imports are required to be excluded only if the Authority is examining material injury. In the instant case, however, even the petitioners have not claimed continued injury.
61. With regard to the contention that imports made under advance license do not compete with the domestic product and therefore should be excluded from the scope of injury analysis; the Authority notes that it has been the consistent practice of the Authority to consider all imports (whether duty free or duty paid) for injury analysis. Further the DI has opportunity to supply even against an advance license after invalidation of the same as per the provisions of the FTP and therefore imports under advance license affect the domestic sales of the DI. Therefore, inclusion of duty free imports for analysis of injury is appropriate in this case.
62. With regard to the claim of the opposing interested parties that the basic customs duty on import of Orthoxylene has become zero in 2018 and all other taxes levied on its import are creditable; it is noted that the claim is for a period beyond the injury period and POI determined for this investigation and therefore not relevant.
63. As regards the submission by opposing interested parties that the investigation should be terminated when net sales realization exceeds non-injurious price, the Authority notes that the purpose of calculating non-injurious price is primarily to compute injury margin so as to determine the amount of duty to be imposed and not to use it as a major parameter for determination of material injury or likely recurrence of injury to the DI. In the present case, the petitioners themselves have not claimed continued injury and therefore comparison of NIP with NSR is not relevant. The comparison could have been relevant in a situation where the Authority is determining continued injury to the DI.
64. As regards the submissions of absence of injury, the Authority notes the petitioners themselves have not claimed continued injury in the present case. Further, injury analysis carried out hereunder would show that the domestic injury has not suffered continued injury due to continued dumping because of the antidumping duty in force.
65. The analysis herein after *ipso facto* addresses various other issues raised by the interested parties.

#### **F.4 Examination of Injury and Causal Link**

66. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure-II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the DI, "... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles..." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is

otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

67. Article 3.1 of the WTO Agreement and Annexure-II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.
68. According to Section 9(A)(5) of the Customs Tariff Act, anti-dumping duty imposed shall, unless revoked earlier, cease to have effect on the expiry of five years from the date of such imposition, provided that if the Central Government, in a review, is of the opinion that the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury, it may, from time to time, extend the period of such imposition for a further period of five years and such further period shall commence from the date of order of such extension.
69. For the examination of the impact of dumped imports on the DI in India, the Authority has considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the Rules supra.
70. In consideration of the various submissions made by the interested parties in this regard, the Authority proceeds to examine the current injury, if any, to the DI before proceeding to examine the likelihood aspects of dumping and injury on account of imports from the subject countries.

#### **F.4.1 Assessment of Demand/ Apparent Consumption**

71. The Authority has defined, for the purpose of the present investigation, demand or apparent consumption of the product in India as the sum of domestic sales of the Indian Producers and imports from all sources. The demand so assessed is given in the table below:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI-A
Sales of DI	MT	192,261	222,206	218,824	215,847
<i>Indexed</i>		<i>100</i>	<i>116</i>	<i>114</i>	<i>112</i>
Sales Of Other Indian Producers Including Supporter Company	MT	33,687	34,864	34,470	33,479
<i>Indexed</i>		<i>100</i>	<i>103</i>	<i>102</i>	<i>99</i>
Imports of Subject Countries	MT	30,917	26,886	36,009	57,450
<i>Indexed</i>		<i>100</i>	<i>87</i>	<i>116</i>	<i>186</i>
Imports from Other Countries Attracting Anti-Dumping Duty	MT	21,822	20,437	17,891	8,550
<i>Indexed</i>		<i>100</i>	<i>94</i>	<i>82</i>	<i>39</i>
Import from Other Countries	MT	2,056	4,763	25,219	39,056
<i>Indexed</i>		<i>100</i>	<i>232</i>	<i>1227</i>	<i>1900</i>
<b>Total Demand</b>	<b>MT</b>	<b>280,744</b>	<b>309,157</b>	<b>332,412</b>	<b>354,382</b>
<i>Indexed</i>		<i>100</i>	<i>110</i>	<i>118</i>	<i>126</i>

POI: April 2016 – September 2017 (POI-A=Annualized)

72. It is seen that the demand for the product under consideration has increased over the injury period.
73. As regards the argument of the interested parties that the petitioners are unable to meet the demand in India and there is wide demand supply gap and therefore the imports are necessary, the Authority notes that as against present demand of 354,382 MT, the capacities in India at present are 316,110 MT (including SI Group) (and the same shall be 433,110 MT after expansions being undertaken by the DI). Further, the petitioners contended that some of the imports are being made under advance license and shall therefore continue to be made post imposition of ADD. The DI also contended that it has been forced to export the product in view of its inability to

sell the product and despite these exports, its inventories are significant. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the DI by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers. The Authority refers to its past consistent position in this regard and also relies upon the decision of the CESTAT in the matter of DSM Idemitsu Limited vs. Designated Authority. If the exporters want to supply the goods to meet the requirement in Indian market that could be done by exporting the requirement at a price equivalent to normal value but not at dumped prices.

#### **F.4.2 Volume Effects of Dumped Imports and Impact on the Domestic industry**

##### **Import volume and market share:**

74. With regard to volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India.
75. The table below summarizes the import volumes and market share:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI-A
Subject countries	MT	30,917	26,886	36,009	57,450
Korea	MT	18,599	15,124	25,252	34,725
Israel	MT	6,958	6,878	7,048	4,521
Taiwan	MT	5,361	4,883	3,708	18,204
Other Countries Attracting ADD	MT	21,822	20,437	17,891	8,550
Other Countries	MT	2,056	4,763	25,219	39,056
Total Imports	MT	54,796	52,086	79,118	105,056
<b>Subject Imports in relation to</b>					
Total Imports	%	56.42%	51.62%	45.51%	54.68%
Indian Production	%	12.10%	9.14%	11.73%	19.14%
Demand	%	11.01%	8.70%	10.83%	16.21%

76. It is seen that:
- The imports from the subject countries have increased since the base year.
  - The subject imports have also increased in relation to production and consumption in the country.
  - However, the main increase, by almost 2000%, has taken place in imports from countries not subject to any anti-dumping duty during the POI.
  - About 85% of the imports from Korea RP (a subject country) and about 65% of India's total imports took place without any anti-dumping duty during the POI. This is by taking into consideration that there is no anti-dumping duty imposed on imports from Aekyung, Korea.

#### **F.4.3 Price Effect of the Dumped imports and Impact on the Domestic Industry**

##### **(a) Price undercutting**

77. With regard to the effect of dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports when compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred, to a significant degree.
78. In this regard, a comparison has been made between the landed value of the product and the selling price of the domestic industry net of all rebates and taxes, at the same level of trade. The price of the domestic industry was determined at the ex-factory level. The Authority has compared landed price of imports with the selling price of the domestic industry for the subject goods.

Particulars	Unit	POI - A
Net Sales Realization	Rs/MT	***
Korea		



Particulars	Unit	POI - A
Landed Price	Rs/MT	***
Price undercutting	Rs/MT	***
Price undercutting %	%	***
Range		0-5%
<b>Israel</b>		
Landed Price	Rs/MT	***
Price undercutting	Rs/MT	***
Price undercutting %	%	***
Range		0-5%
<b>Taiwan</b>		
Landed Price	Rs/MT	***
Price undercutting	Rs/MT	***
Price undercutting %	%	***
Range		0-5%

79. It is seen that the landed price of imports of subject goods from the subject countries is below the net selling price of the domestic industry. The imports from subject countries are undercutting the selling price of domestic industry in the POI. The price undercutting is positive.

**(b) Price Suppression/ Depression effects of dumped imports**

80. In order to determine whether the dumped imports are suppressing or depressing the domestic prices and whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority considered the changes in the costs and prices over the injury period. The position is shown as per the table below:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI - A
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	75	56	58
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	76	60	69
Landed Price	Rs./MT	96,007	81,193	58,333	63,529
<i>Trend</i>		100	85	61	66
<b>Change Over Previous Year</b>					
Cost of sales	Rs./MT		(***)	(***)	***
Selling price	Rs./MT		(***)	(***)	***
Landed price of imports	Rs./MT		-14,814	-22,860	5,196

81. It is seen that even when the cost of production declined by Rs. \*\*\*, the foreign producers reduced their prices only by Rs. 14,814, thus showing that the exporters took advantage of the fall in costs. Further, the domestic industry reduced its prices almost to the extent of cost reductions. Thereafter, the foreign producers reduced their prices far more than the decline in the cost of production. During the POI, both the domestic industry and exporters increased their prices more than the increase in cost of production. It is also seen that whereas both the cost of production and selling price declined, the decline in cost of production was more than the decline in selling prices. The imports have not caused price depression or suppression on the prices in the domestic market. The Authority notes that the import price during POI was higher than cost of production of the domestic industry, thus permitting the domestic industry to earn profits in the POI. Otherwise, even though the antidumping duty was imposed from 24<sup>th</sup> December 2012, the domestic industry was incurring losses till 2014-15 and it started earning profits only since 2015-16.

**(c) Price Underselling Effect of the Dumped Imports**

82. For examining the price underselling effects of the dumped imports, the landed value of imports has been compared with the non-injurious price determined. The analysis shows that during the POI, the landed values of subject imports were above the non-injurious price and have not caused any price underselling.

Particulars	UOM	Korea	Israel	Taiwan
Non -Injurious price	Rs./MT	***	***	***
Landed Value	Rs./MT	***	***	***
Injury Margin	Rs./MT	(***)	(***)	(***)
Injury Margin	%	(***)	(***)	(***)
Injury Margin	(Range)	-(10-0)	-(10-0)	-(10-0)

#### **Examination of Economic Parameters Relating to the Domestic Industry**

83. Annexure II to the Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the AD Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth and ability to raise capital investments.

84. Accordingly, various economic parameters of the domestic industry are analyzed herein below:

#### **(a) Capacity, Production, Capacity Utilization and Sales**

85. Production, sales, capacity & capacity utilization of the domestic industry moved as shown below:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI - A
Capacity	MT	281,110	306,110	306,110	306,110
<i>Trend</i>		100	109	109	109
Production	MT	221,819	259,281	272,614	266,626
<i>Trend</i>		100	117	123	120
Capacity Utilization	MT	78.91%	84.70%	89.06%	87.10%
<i>Trend</i>		100	107	113	110
Domestic Sales (excluding captive)	MT	192,261	222,206	218,824	215,847
<i>Trend</i>		100	116	114	112
Demand (excluding captive)	MT	280,744	309,157	332,412	354,382
<i>Trend</i>		100	110	118	126

86. It is seen that

- The domestic industry has enhanced capacity by about 9%.
- Production, capacity utilization and sales of the domestic industry improved till 2015-16 and declined marginally in POI.
- On overall basis, whereas production increased by 20%, domestic sales increased by 12% and capacity utilization increased by 10%.

#### **(b) Market Share of Domestic industry in Demand**

87. The market shares of the domestic industry moved as shown below:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI - A
Domestic Industry	%	68.48%	71.88%	65.83%	60.91%
Other companies including supporter company	%	12.00%	11.28%	10.37%	9.45%
Subject Countries	%	11.01%	8.70%	10.83%	16.21%
Countries attracting ADD	%	7.77%	6.61%	5.38%	2.41%
Other Countries	%	0.73%	1.54%	7.59%	11.02%
Total	%	100.00%	100.00%	100.00%	100.00%

88. It is seen that the market shares of the domestic industry declined over the injury period; whereas market share of the subject imports increased mainly due to the phenomenal increase in imports from other countries, not attracting any ADD. Further, exports made by the domestic industry are quite significant. It is thus seen that the domestic industry has lost market share in view of continued imports from subject and non-subject countries in the market.

(c) **Profit/Loss, Cash Flow, Return on Capital Employed**

89. Performance of the domestic industry with respect to the profits, return on investment and cash profits is as follows:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI - A
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	75	56	58
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	76	60	69
Profit / Loss	Rs./MT	(***)	(***)	***	***
<i>Trend</i>		(100)	(48)	62	299
Cash Profit	Rs./MT	(***)	(***)	***	***
<i>Trend</i>		(100)	(36)	155	578
Profit before Interest	Rs./MT	(***)	***	***	***
<i>Trend</i>		(100)	883	3,067	9,211
Return on Capital Employed	%	(***)	***	***	***
Return on Capital Employed	%	(0-5)%	0-10%	15-25%	35-45%
<i>Trend</i>		(100)	1,242	3,928	8,011

90. It is seen that :

- The domestic industry was earlier suffering financial losses. The domestic industry started earning profits w.e.f. 2015-16.
- Profitability of the domestic industry improved significantly over the injury period. The domestic industry was making good profits in the POI.
- Cash profits and return on investments have also shown improvement. The domestic industry has started earning fair/ reasonable profits in the POI.
- The domestic industry contended that if its history is seen over last one decade, the domestic industry has not earned reasonable return on investment, as evidenced by weighted average ROI over last one decade. The domestic industry also submitted that the present situation of good profits is a temporary business situation (due to reduction in prices of petroleum-based raw material OX which constitute 83% of total cost of PUC, is a temporary reduction).

91. The Authority concludes that the domestic industry has not suffered any price injury in the current POI.

(d) **Employment, Wages and Productivity**

92. Factual position with regard to employment, wages and productivity are as follows:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI - A
No of Employees	Nos	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	89	89	98
Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	100	119	154
Productivity per day	MT/Day	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	117	123	120
Productivity per Employee	MT/Nos	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	131	138	123

93. It is seen that employment levels showed decline in 2014-15 and increase thereafter. However, on overall basis, employment with the domestic industry showed minor decline. Wages and productivity have shown improvement over the injury period.

(e) **Inventories**

94. Performance regarding inventory can be seen from the table below:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI-A
Average Inventory	MT	***	***	***	***
Trend		100	71	50	56

95. The average inventory with the domestic industry declined upto 2015-16 and then increased in the POI.

(f) **Ability to Raise Fresh Investment**

96. The DI has informed of its planned capacity enhance, which includes committed fresh investments. They have contended that cessation of anti-dumping duties is likely to affect the expansion being undertaken by the domestic industry.
97. The Authority notes the DI's contentions in this regard.

(g) **Growth**

98. The overall analysis of the performance of the domestic industry shows positive growth in the POI in terms of volume as well as price parameters, such as, sales, production, capacity utilization, profits and return on investment. The growth in market share of the domestic industry is however negative.

Particulars	UOM	2013-14	2014-15	2015-16	POI -A
Production	%	-	16.89	5.14	1.07
Domestic Sales Volume	%	-	15.58	(1.52)	0.57
Profit/ Loss per unit	%	-	(51.94)	229.29	37.51
Return on investment	%	-	6.88	13.78	20.95
Market Share	%	-	3.39	(6.05)	(4.92)

(h) **Magnitude of Dumping and Dumping Margin**

99. The dumping margin determined in respect of the subject imports is above *de minimis* level except in case of M/s Aekung, Korea.

(i) **Factors Affecting Prices**

100. Examination of trends in the volume and prices of the dumped imports from the subject countries and other countries, and the domestic prices indicate that there is presence of significant volume of dumped imports from the subject countries and other countries, and the domestic industry prices are impacted by the import prices.

**G. MAGNITUDE OF INJURY AND INJURY MARGIN**

101. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry as determined by the Authority in terms of Annexure III to the AD Rules has been compared with the landed value of the exports from the subject countries for determination of injury margin during the POI and the injury margin so worked out is as under.

**Injury Margin**

Country	Producer	Exporter	NIP US\$/ MT	Landed Price US\$/ MT	Injury Margin US\$/ MT	Injury Margin %	Injury Margin Range%
Korea	Aekyung Petrochemical Co. Ltd.	<ul style="list-style-type: none"> <li>Woori P&amp;C Corporation,</li> <li>Hyundai Corporation,</li> <li>Humade</li> </ul>	***	***	(***)	(***)	- (0-10)

Country	Producer	Exporter	NIP US\$/ MT	Landed Price US\$ / MT	Injury Margin US\$ / MT	Injury Margin %	Injury Margin Range%
		Corporation, • Canko Marketing, INC., • Ubesco Corporation					
Korea	LG Chem Ltd.	LG Chem Ltd.	***	***	(***)	(***)	- (10-0)
Korea	All Others	All Others	***	***	(***)	(***)	- (10-0)
Israel	Gadiv Petrochemicals Industries Ltd.	Gadiv Petrochemicals Industries Ltd.	***	***	(***)	(***)	- (10-0)
Israel	All Others	All Others	***	***	(***)	(***)	- (10-0)
Taiwan	All Producers	All Exporters	***	***	(***)	(***)	- (10-0)

#### **H. LIKELIHOOD OF CONTINUATION OR RECURRENCE OF DUMPING AND INJURY**

102. This present investigation is a sunset review investigation and the focus of this investigation is to examine the likely scenario of continuation or recurrence of dumping and consequent injury if the anti-dumping duties were to be allowed to expire even if there is no current injury.

##### **H.1 Submissions made by the Domestic industry**

103. Following are the submissions made by the domestic industry with regard to likelihood of continuation of dumping and consequent recurrence of injury:

- (a) The performance of the domestic industry in terms of various economic parameters such as production, sales, capacity utilization, profits, cash profits and return on investments have shown improvement under the protective umbrella of antidumping duty.
- (b) However, there is a clear likelihood of recurring of dumping and consequent injury to the domestic industry as is evident from the existence of surplus capacities and export orientation of the producers in the subject countries.
- (c) Presence of significant volume of dumped imports in India from the subject countries at dumped prices, in spite of anti-dumping duty being in force, itself is indicative of likelihood of continued and intensified dumping and consequent injury to the domestic industry.
- (d) Absence of injury is entirely insufficient to conclude that the anti-dumping duties need not be extended.
- (e) The Authority need to examine, parameters such as whether there are sufficient freely disposable, or an imminent, substantial increase in, capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian markets, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports
- (f) Absence of current dumping does not mean that, there is no likelihood of dumping in the event of cessation of anti-dumping duty. The absence of injury is entirely insufficient to conclude that the ADD need not be extended.
- (g) There is positive dumping margin on transaction by transaction basis analysis of the imports from the subject countries over the entire injury period.
- (h) The objective of the producers and exporters in the subject countries is largely to produce the subject product for export as established by the presence of significant freely disposable capacities, far in excess of the domestic demand, with the producers in the subject countries. In the event of cessation of anti-dumping duties, exports to India will intensify.
- (i) India is a lucrative market for the exporters in the subject countries. This is established by the fact that dumping has continued even when anti-dumping duties have been imposed.
- (j) Various other countries have imposed AD measures on Korea and Taiwan, which proves that the exporters are not only export-oriented, they are rather dumping-oriented as is evidenced by the anti-dumping duties imposed in the past by Pakistan, China and Turkey.
- (k) Imposition of anti-dumping duty by China, Turkey, and Pakistan on Phthalic Anhydride imports from Korea/Taiwan and changing volumes impacted by such imposition of duties clearly shows a likelihood of dumping and injury in case the present anti-dumping duties are withdrawn.
- (l) Pakistan had earlier imposed anti-dumping duty on imports from Korea and Taiwan. Exports from Korea

- to Pakistan and China and from Taiwan to Pakistan increased as soon as these anti-dumping duties were withdrawn.
- (m) Turkey has recently imposed anti-dumping duty on imports of the subject goods from Korea in April, 2016 @ 8.44% of CIF. Export volume from Korea to Turkey has declined after imposition of anti-dumping duty by Turkey.
  - (n) Further, Argentina has initiated investigations against imports of the subject goods from Korea in April, 2017. Exports from Korea to Argentina declined as a result of this initiation of investigations.
  - (o) The subject countries are faced with loss of market for the product in various countries as a result of imposition of anti-dumping duties. This gets established by the declining trend in exports from Korea/Taiwan to the countries imposing anti-dumping duty.
  - (p) The petitioners have done the calculations of potential increase of exports from Korea and Taiwan considering the rate of capacity utilization achieved by domestic industry in the POI which shows that the potential % increase in volume from Korea and Taiwan is 22% and 9% respectively as against existing market share of 10% and 4%.
  - (q) Significant volumes of exports from Korea/ Taiwan to third countries are at prices below the Indian prices. These exports would shift to India and dumping is likely to intensify in case the existing anti-dumping duties cease, and cause injury to the domestic industry.
  - (r) Price undercutting on transaction-wise basis in the present injury period is positive. Price undercutting should be determined only by considering those import transactions whose landed price of imports is below selling price of the domestic industry.
  - (s) Considering the imports that have been made at a price below domestic industry prices, it is evident that the domestic industry would be forced to reduce the prices to a level where the domestic industry would start suffering significant decline in profits once again. Cessation of ADD would therefore lead to significant depressing effect on the domestic industry prices of the product in the market.
  - (t) In case of cessation of anti-dumping duty, dumping would intensify forcing the domestic industry to reduce their selling price to compete with dumped imports, driving it even below the cost of sales; leading to severe price injury.
  - (u) Significant dumped and injurious volumes over the injury period clearly show that low priced imports below normal value and the non-injurious price are likely in the event of cessation of existing anti-dumping duties.
  - (v) The product has a past history of imposition of safeguard duty and anti-dumping duties. As and when the duty has been revoked, imports from the subject countries have increased.
  - (w) There is no requirement for the Authority to examine or establish a causal link between dumping and injury. The only factor to be considered is the recurrence of the injury in case of cessation of anti-dumping duty.
  - (x) The exporters should establish on the basis of their information that dumping is unlikely to continue, intensify or recur in the event of cessation of anti-dumping duties. This information not only forms part of prescribed proforma (Exporter's Questionnaire Part II), but also is highly pertinent in the facts and circumstances of the present case.

## **H.2 Submissions made by the other Interested Parties**

104. Submissions made by the opposing interested parties with regard to likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury during the course of investigations and considered relevant by the Authority are as follows:
- (a) Recurrence of material injury cannot be established on the basis of the dumping margins determined in the original investigation. The domestic industry is required to address whether revocation of the existing anti-dumping duty would lead to recurrence of injury to the domestic industry.
  - (b) The figures pertaining to surplus capacity and production in Korea and Taiwan do not suggest that these surplus capacities will be directed to India or are likely to cause injury to the domestic industry.
  - (c) Existence of anti-dumping duties on account of investigations being carried out in other countries is not at all related to the fact that exports to other countries will be diverted to India as such duties are in force for quite some time now and the imports to India from subject countries were at a price which was non injurious to the domestic industry.

**H.3 Examination of the Authority**

105. The Authority examined the likelihood of continuation or recurrence of injury considering the parameters relating to the threat of material injury in terms of Annexure II (vii) of the Rules. Clause (vii) of Annexure II to the rules provides for the following:

(a) **A Significant Rate of Increase of Dumped Imports into India Indicating the Likelihood of Substantially Increased Importation**

106. The volume of imports during the present injury period was as follows:

	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI - A
Korea RP	MT	18,599	15,124	25,252	34,725
Taiwan	MT	5,361	4,883	3,708	18,204
Israel	MT	6,958	6,878	7,048	4,521
Subject countries	MT	30,917	26,886	36,009	57,450
<i>Indexed</i>		<i>100</i>	<i>87</i>	<i>116</i>	<i>186</i>

*\*POI: April 2016 to September 2017*

107. It is seen that the imports from the subject countries increased significantly in the POI as compared to the base year, even when anti-dumping duty was in force. However, it is also noted that a significant proportion of this import from the subject countries, exported by Aekyung Korea, is coming in free of any anti-dumping duty.

(b) **Sufficient Freely Disposable, or an Imminent, Substantial Increase in, Capacity of the Exporter Indicating the Likelihood of Substantially Increased Dumped Exports to Indian Markets, taking into Account the Availability of Other Export Markets to Absorb any Additional Exports**

108. The Authority examined the level of capacities with the foreign producers, its utilization at present, and the potential increases in the capacities in order to ascertain the present and potential freely disposable production capacities with the exporters.

109. The Authority undertook evaluation of existing surplus capacities and capacity addition, if any, to explore the possibility of diversion of disposable capacities to Indian market. The domestic industry has claimed that the producers in the subject countries have huge capacities, far in excess of the domestic demand. The domestic industry has furnished evidence showing capacities available with the exporters in the subject countries and presence of freely disposable capacities available for exports after meeting the domestic demand. Information given by the domestic industry showed as under:

S.N.	Description	UOM	S. Korea	Taiwan	Israel	Subject Countries
1	Capacity	MT	4,20,000	2,80,000	33,000	7,33,000
2	Production	MT	3,22,300	2,26,250	30,300	5,78,850
3	Capacity Utilization	%	76.74%	80.80%	91.82%	78.97%
4	Surplus Capacity	MT	97,700	53,750	2,700	1,54,150
5	Consumption	MT	1,80,650	1,21,300	2,450	3,04,400
6	Surplus Production	MT	1,41,650	1,04,950	27,850	2,74,450
7	Available for Exports	MT	2,39,350	1,58,700	30,550	4,28,600

110. It is noted from the information on record that the producers in Korea and Taiwan have surplus capacity in excess of the consumption in their home market and current exports.

111. Information sought from the responding exporters shows that these producers have ample production capacities with them. They are also exporting Phthalic Anhydride to several other countries.

(c) **Whether Imports Are Entering at Prices that Will Have a Significant Depressing or Suppressing Effect on Domestic Prices, and Would Likely Increase Demand for Further Imports**

112. The information on record shows as follows with regard to import price, selling price & cost of production of the domestic industry.

Country	Unit	Korea	Taiwan	Israel
Net Sales Realisation	Rs/MT	***	***	***
<b>Landed Price</b>				
To India	Rs/MT	***	***	***
To Other Countries				
• High priced	Rs/MT	***	***	NA
• Low priced	Rs/MT	***	***	NA
Cost of production	Rs/MT	***	***	***
NIP	Rs/MT	***	***	***
<b>Volume of Exports</b>				
India	MT	***	***	***
To Other Countries				
• High priced	MT	***	***	***
• Low priced	MT	***	***	***

113. At the current landed price in India, there is positive price undercutting during POI. The Authority also notes that some of the exports from Korea/ Taiwan to third countries are at prices below the Indian prices.

**(d) Inventories of the Article Being Investigated**

114. The inventories of the responding exporters are low. As per the details given in the exporter questionnaires submitted, the inventories have declined in the POI as compared to base year as well as the previous year. It is noted that the product is demand driven. Therefore, low inventories will, not necessarily correlate with low exportability.

**(e) Impact of AD Measures Imposed by Various Other Jurisdictions**

115. Information brought on record by the domestic industry and unrefuted by the other interested parties shows that anti-dumping duties have been imposed in the past on imports of subject goods from Korea/ Taiwan by other countries. The table below shows the status of the anti-dumping duties imposed by other countries against the imports of subject goods from Korea and Taiwan: -

S.N.	Country Attracting ADD	Country Imposing	Effective From	Effective Up To	Rate (ADV/ DM)	Status
1	Korea	Pakistan	30.09.2010	28.03.2017	7.36%	Revoked
2	Taiwan	Pakistan	30.09.2010	28.03.2017	27.38%	Revoked
3	Korea	China	07.01.2003	31.08.2014	1.4-13%	Revoked
4	Korea	Turkey	31.03.2017		8.44%	In force
5	Korea	Argentina	Initiated in March 2017		28.57%	Duty not yet imposed

116. In view of a number of measures by other countries on imports of the PUC, the Authority examined the trade pattern of the exporting countries when trade defense measures were invoked by the importing country. Information placed on record of the Authority shows that the exports from Korea and Taiwan to these countries declined after imposition of anti-dumping duties in those countries and increased after revocation of anti-dumping duty in those countries. The same trend can be seen in the case of India, where trade remedial measures have been invoked on imports of the PUC since 2008-09. This is chronologically described below:

- In 2008-09, the volume of imports from the subject countries was 22,722 MT.
- Safeguard duty was imposed on 29<sup>th</sup> Jan., 2009 and imports declined to 18,986 MT in 2009-10.
- Safeguard duty expired on 28<sup>th</sup> Jan., 2010. Imports once again increased.
- In January – December 2010 (POI of original investigations on imports from the subject countries), the imports increased to 40,912 MT.
- Imports from the subject countries further increased to 43,014 MT in 2010-11, while the original investigations were on-going.



- (f) In 2011-12, the imports declined to 31,167 MT. Safeguard duty was once again imposed on 17<sup>th</sup> Jan., 2012.
- (g) In 2012-13, the imports were 32,994 MT. In this period, anti-dumping duties on the subject countries were imposed on 24<sup>th</sup> Dec., 2012; however, the safeguard duty expired on 16<sup>th</sup> Jan., 2013.
- (h) In Jan-Dec. 2013 (POI of anti-dumping investigations against another set of subject countries – Japan and Russia), the imports from the subject countries were 34,241 MT.
- (i) The imports from the subject countries declined to 30,917 MT in 2013-14, and further declined to 26,886 MT in 2014-15.
- (j) The imports from subject countries increased once again to 36,009 MT in 2015-16 and further to 57,450 MT in the POI of the present sunset review investigation on annualized basis.

**(f) Price Attractiveness in India**

117. It is noted from the table below that significant volumes of exports from Korea/ Taiwan to third countries are at prices below the Indian prices.

Country	Volume of Exports to Third Countries	Price Attractive Volumes	Price Difference with Indian Prices	Share of Price Attractive Volumes
UOM	MT	MT	USD/MT	%
Korea RP	210,096	105,094	32.46	50.02%
Taiwan	112,277	32,333	31.53	28.80%

*\*Exports from Korea & Taiwan to World (excluding India)*

**I. CAUSAL LINK AND OTHER FACTORS**

118. Under Section 9A(5), the Authority is required to examine the likelihood of dumping and injury and the need for continuation of anti-dumping duties irrespective of whether there have been any imports of the product under consideration during the review investigation period or not. It was examined whether other parameters listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry. It is noted as follows:

**(i) Volume and Prices of Imports from Other Sources**

119. Examination of import data shows that there are imports of product under consideration from other countries as well. However, the imports from the subject countries as well as other sources have not caused injury to the domestic industry.

**(ii) Contraction in Demand and/ or Change in Pattern of Consumption**

120. Demand for the product in the domestic market has shown increase over the injury period. Therefore, the demand for the subject goods has not caused any injury to the domestic industry.

**(iii) Trade Restrictive Practices of and Competition Between the Foreign and Domestic Producers**

121. The investigation has shown that conditions of competition or trade restrictive practices have not caused injury to the domestic industry.

**(iv) Development in Technology**

122. The investigation carried out does not show any significant change in technology that could have affected the performance of the domestic industry.

**(v) Export Performance of the Domestic Industry**

123. Petitioners have exported the PUC during the injury period.

**(vi) Productivity of the Domestic Industry**

124. The productivity of the domestic industry has improved.

**J. POST-DISCLOSURE COMMENTS**

125. Comments have been received from various interested parties on the disclosure statement issued by the Authority. The submissions are largely repetition of the submissions earlier made by the interested parties during the course of the investigations and therefore have not been repeated herein. New submissions made by the interested parties have been examined below.

**J.2 Submissions by the Domestic Industry**

126. Post-disclosure submissions made by the domestic industry are as follows:

- (a) Petitioners have not been disclosed break-up of non-injurious price calculations and calculation of normal value of producers/ exporters from Taiwan and Israel, including Gadiv Petrochemicals Industries Ltd., Israel.
- (b) Even if the most efficient domestic industry is adopted for construction of normal value, the same must be actual costs of such most efficient domestic industry and not normatted costs (non-injurious price) of such most efficient domestic industry.
- (c) The dumping margin in respect of Aekyung Petrochemicals Ltd., Korea is negative. The Authority may kindly relook at the calculations as bulk of the imports from Korea is from Aekyung and the Petitioners strongly believe that the exporter is dumping the subject goods.
- (d) In a situation where the Designated Authority finds absence of current injury, the Designated Authority shall not determine injury margin and instead merely recommend the same quantum of anti-dumping duty based on likelihood of injury.
- (e) Import transactions with only positive price undercutting and positive dumping margin should be considered. There is no justification in the disclosure statement for not applying the analysis and methodology adopted by the petitioners.
- (f) There is sufficient evidence to establish that likelihood of continuation of dumping and injury in the event of cessation of anti-dumping duties as examined by the Authority.
- (g) Some of the submissions of domestic industry made earlier have not been considered by the Authority in the disclosure statement and nor there is anything in the disclosure statement why these submissions were not worth considering.
- (h) Information on exports from Korea and Taiwan to other countries where measures are in force submitted earlier, shows that while exports from Korea and Taiwan to other countries where measures are in force have declined, the same have increased in respect of India.
- (i) The product has a past history of imposition of safeguard duty and anti-dumping duties. Information submitted earlier shows that as and when the duty has been revoked, imports from the subject countries have increased.
- (j) Huge capacities have been created by the foreign producers, keeping in view export markets. The evidence proving the same is on record of the Authority. Significant volumes of exports from these countries to third countries are at prices below the Indian prices. These exports would shift to India and dumping is likely to intensify in case the existing anti-dumping duties cease, and cause injury to the domestic industry.

**J.2 Submissions by Other Interested Parties**

127. Post-disclosure submissions made by the other interested parties are as follows:

- (a) Imports made by IGPL were not disclosed to the Authority at the time of the petition/initiation. Hence Domestic Industry didn't approach the Designated Authority with clean hands.
- (b) IGPL wants to restrict other users from importing the material and are themselves engaged in import of material through indirect sources to serve their customers.
- (c) Huge demand-supply gap exists in India, compelling the users to resort to imports. The Authority has noted that the Domestic Industry would be able to meet the demand after capacity expansions but failed to address that the Domestic Industry couldn't met the demand supply gap in the POI and therefore the Authority should base its finding on current facts and not based on a futuristic approach.
- (d) Disclosure statement fails to mention any evidence on the capacity expansions so being relied upon.
- (e) The increase in imports to India in relation to production and demand should be seen in the light of demand supply gap situation, which will show that any increase in imports was the result of necessity in the country, which should not be taken as a ground to provide further undue protection to the Domestic Industry.
- (f) Taking claim of capacity expansion at the time of SSR is only a strategy to get the duties continued, which the Authority shouldn't entertain.

- (g) Positive price undercutting in the present case is immaterial and the same is only the result of an extremely high selling price realized by the Domestic Industry.
- (h) Significant level of negative underselling shows that the DI will continue to achieve a price higher than its NIP even in case of expiry of duties.
- (i) View provided by the Authority in para 100 is not in tandem with the factual discussions in the Disclosure statement. Authority to mainly reconsider the view that “*domestic industry charged sub-optimal prices as the exporters charged abnormally low prices and vice-versa.*”
- (j) Absence of price suppression and price underselling means the DI was getting a price of its choice.
- (k) Current level of negative injury margin signifies lack of likelihood of injury. Practice of DGTR that in case of injury margin being negative, duty has not been continued, should be followed in this case.
- (l) Increase in imports doesn’t establish likelihood as the same was driven by the demand-supply gap, which included un-dumped imports.
- (m) Figures in respect of capacity expansions are not corroborated numbers and are very sketchy.
- (n) The table shows available capacity for exports, which means export market, would cover many countries and there is nothing on record which shows there is an idle capacity concerning PAN waiting for India to remove the duties.
- (o) Relevant to highlight that the product is demand driven which the Authority in para 114 also highlights.
- (p) The current level of prices does not show any likelihood of dumping and injury in the event of expiry of present duties.
- (q) Revocation of duties by China PR and Pakistan shows that claims of likelihood are baseless.
- (r) Exports enjoy a fruitful market elsewhere.
- (s) Efficiency of the Domestic Industry is well placed to face the competition from imports and hence no need for duty.
- (t) The exporter didn’t involve in unfair trade practice and was hence granted negative dumping/ injury margin in the original investigation.
- (u) No intention to likely dumps and hence shouldn’t be penalized for unfair trade practices of other producers/ exporters.
- (v) Aekyung should be differentiated from non-participant/ cooperating exporters/ producers granting NIL dumping margin/ injury margin in the final finding.
- (w) The Designated Authority should exclude the imports of Product under consideration by M/s Aekyung Petrochemical Co. Ltd. from the scope of present investigation as the same has been found to not be dumping in original investigation.
- (x) Imports made under AAS should be excluded from the scope of injury analysis as the same didn’t compete with the domestic products and hence the stand taken by Designated Authority is incorrect.
- (y) However, even with 87% capacity utilization during the POI, the DI’s market share vis-à-vis the total demand is 61% (i.e. 2,16,173 MT); which is 71% of the market share of the PUC vis-à-vis its capability to produce the PUC. Therefore, the DI holds a dominant position in the domestic market during the POI.
- (z) Share of imports from non-subject countries increased by 190 times.
- (aa) The respondents submit that the price undercutting range for the subject countries is insignificant and therefore, the does not warrant continued imposition of anti-dumping duties.
- (bb) Normal value and dumping have been determined on monthly basis in the original investigation. The Authority should do the same exercise here as well.
- (cc) No post POI data has been provided by the domestic industry. Annual reports of the companies available in public domain shows the profitability of the DI has further improved and there is no likelihood of recurrence of injury to the domestic industry on cessation of the existing duties.
- (dd) All the economic parameters show improvement except market share, which has declined.
- (ee) DGTR is giving undue protection to the DI by applying 22% return on CE which was designed in 1987.

### J.3 Examination by the Authority

128. The Authority has examined submissions made by various interested parties in response to the Disclosure Statement, while several of the issues have already been dealt with above, comments on the rest are as under:
- (a) As regards imports by IGPL, the investigation has shown that IGPL has merely arranged 378 MT import of the product for one of its customer (there is only one transaction). The volume of imports of 378 MT was

- not so high as to conclude that the intention of IGPL was to restrict other users from importing the material and instead itself import the material.
- (b) Regarding the demand supply gap, the investigation has shown that the capacities for the PUC in India were 3,16,110 MT in POI, as against the established demand of 3,54,382 MT, including imports under duty free schemes. However, it is noted that the purpose of present investigation is to examine and address the issue of possible dumping of the product; the demand supply gap in the country cannot justify dumping of the product.
  - (c) Indian Paint Association, Indian Paint & Coating Association and Indian Small-Scale Paint Association a consumer industry association contended that there are significant imports under duty free schemes, imports of which shall in any way continue even with anti-dumping duty being imposed. The Authority agrees.
  - (d) As regards the argument that increase in imports should be seen in the light of demand supply gap, while the Authority agrees that domestic demand-supply gap will result in imports, it also notes that the sales of domestic industry were below the production levels and the production was below the existing installed capacities.
  - (e) As regards the current selling price of the DI the Authority notes that none of the exporters or consumers have shown that the prices charged by DI are higher than the prevailing prices in the international market. Nor is there evidence to show that DI was charging abnormally high prices as compared to the international market.
  - (f) Existence or otherwise of an injury margin is but one factor taken into consideration by the Authority in reaching its conclusions about continuation or otherwise of an existing anti-dumping duty. There is no automaticity in reaching a conclusion for termination in the absence of an injury margin.
  - (g) The Authority notes that the DI data has shown that 26% of imports in POI and 33% volume of imports during the injury period were at prices below what has been determined to be the non-injurious price for the DI.
  - (h) The investigation shows unutilised capacities with the subject exporters. Further, it is seen that some of the exports to third countries are at a price lower than that to India. This coupled with the low inventories of the PUC with the exporters shows a dynamic global trading environment.
  - (i) As regards revocation of duty by China and Pakistan, the Authority notes the argument of DI that exports to Pakistan have once again started increasing after cessation of ADD.
  - (j) Regarding the comments and counter-comments on expansion of production capacity by the DI, the Authority holds that this is an important issue during a Sunset Review investigation as it is likely to impact both - the terms of trade for foreign exporters and the domestic market conditions, if the existing anti-dumping duty is to be extended. However, it is also true that till the expansion is actually effected, there is little factual information to take into consideration for calculating its impact. Thus, beyond noting this claim the Authority is limiting its impact evaluation to the facts available.
  - (k) As regards 22% ROCE allowed for calculation of NIP, it is clarified that it is the consistent practice of the Authority to consider 22% return on capital employed.

#### **K. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES**

129. Regarding the claims of anti-dumping duty imposing an additional cost on the user industry, the Authority recognizes that imposition of anti-dumping duties might affect the price level of product in India. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures removes the unfair advantage gained by dumping practices, and arrests the decline of the DI and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the DI by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. Imposition of anti-dumping measures does not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, does not affect the availability of the products to the consumers.
130. However, the Authority remains mindful of the fact that the PUC is an intermediate product with a wide industrial user base. The Indian user industry has actively participated in this investigation, submitting both information/ data and expressing their opinion. The examination herein includes their submissions appropriately and the Authority has taken the same into consideration, to the extent necessary in reaching the conclusions below.

**L. CONCLUSIONS**

131. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority as recorded in these Final Findings and on the basis of the analysis herein of the likelihood of recurrence of dumping and consequent injury, the Authority concludes that the DI is not suffering continued injury, indeed DI has not claimed to do so, either. The issue is—likelihood of dumping of the PUC and consequent injury in case the anti-dumping duty expires. In this regard the Authority notes that one of the largest exporters of the PUC to India, which has fully cooperated with this investigation, is exporting without facing any anti-dumping duty and is also not seen to be causing any injury to the DI. This and the other exporters have sufficient export opportunities; the export prices indicate a dynamic market globally; with price realisation not dissimilar to that obtained in India. There is no evidence of any significant capacity enhancement elsewhere which might evidence an impending influx of imports into India.

**M. RECOMMENDATIONS**

132. Having, examined all the relevant facts and issues presented, the Authority is of the opinion that continuation of dumping and recurrence of injury is unlikely, if the existing anti-dumping duties are allowed to cease in respect of imports of the PUC from the subject countries of this investigation. Therefore, the Authority does not recommend continued imposition of Antidumping Duty as recommended by the Authority vide Final Findings Notification No. 14/1/2011-DGAD dated, 28<sup>th</sup> September 2012 published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-I, Section-I and notified by the Central Government vide Notification No. 58/2012-Customs (ADD) dated the 24<sup>th</sup> December 2012.
133. An appeal against the order of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

SUNIL KUMAR, Add. Secy. & Designated Authority